Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

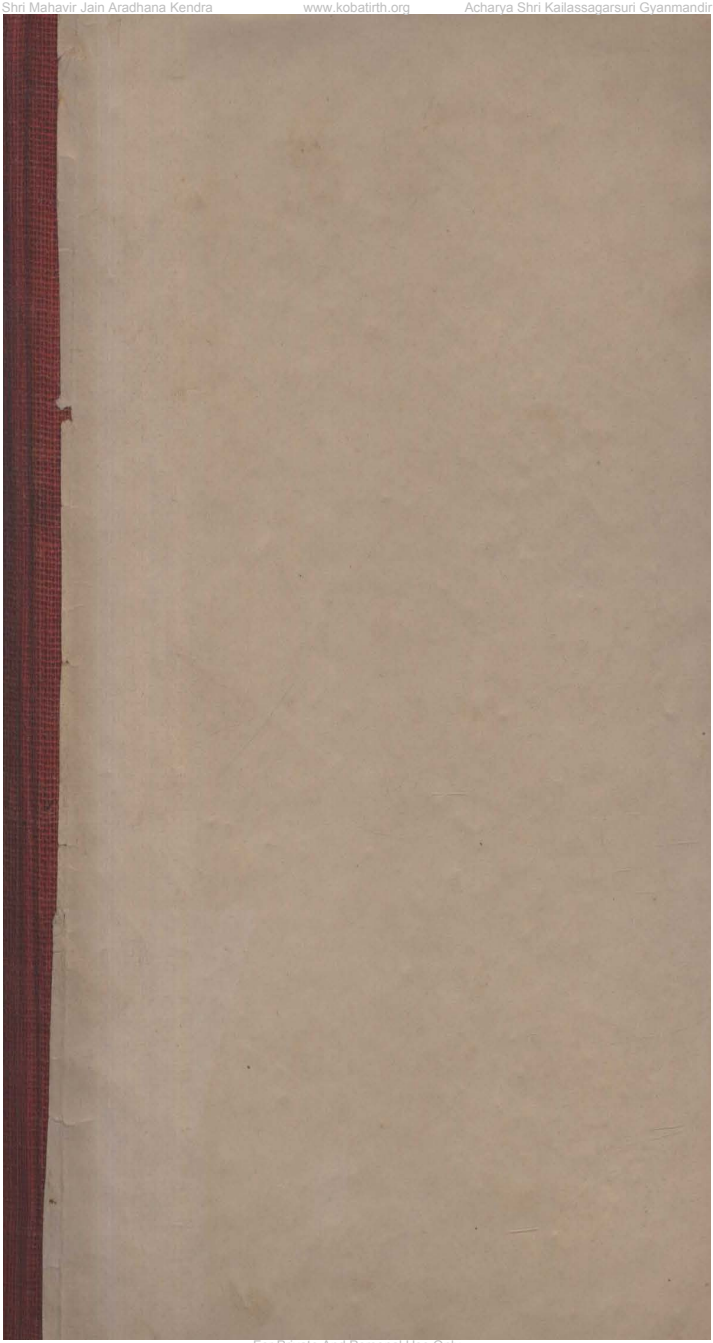

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

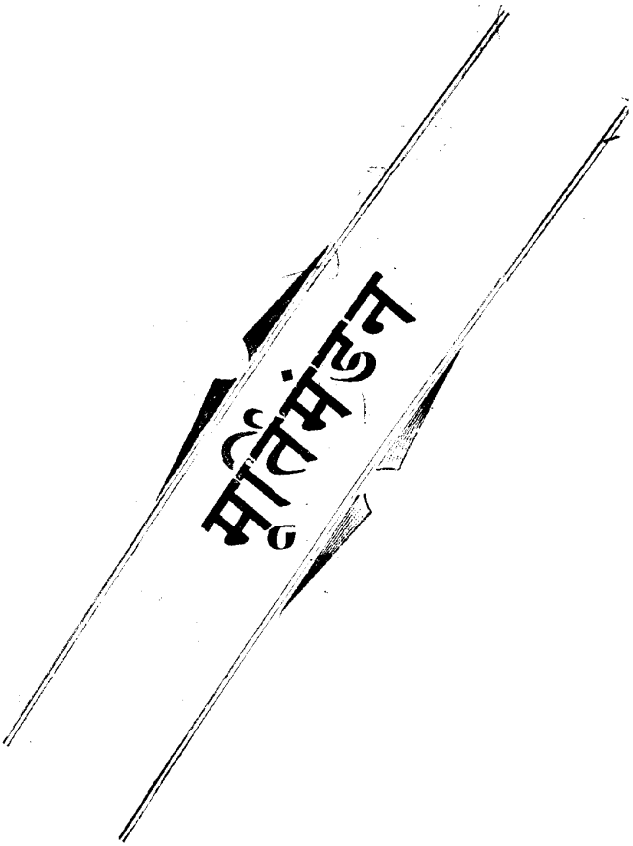

श्रीयुत मुनिलब्धिविजयजी कृत

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ॐ

श्री वीतरागायनमः

मूर्तिमंडन

आ. श्री कैलाससागर सूरि ज्ञान मंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा

श्री १००८ श्रीमद्विजयानंदसूरीश्वरजी के

पट्टधर

श्री १००८ श्रीमद्विजयकमल सूरिजी के

शिष्य

श्रीयुत मुनि लब्धिविजयजी महाराज

प्रसिद्धकर्त्ता

और

मिलने का पता—

जनरल बुकडिपो, सैद मिट्ठा बाज़ार, लाहौर।

बाम्बे मैशीन प्रैस, लाहौर।

प्रथमावृत्ति १०००] [मूल्य चार आने

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री जैनधर्मोपदेशक

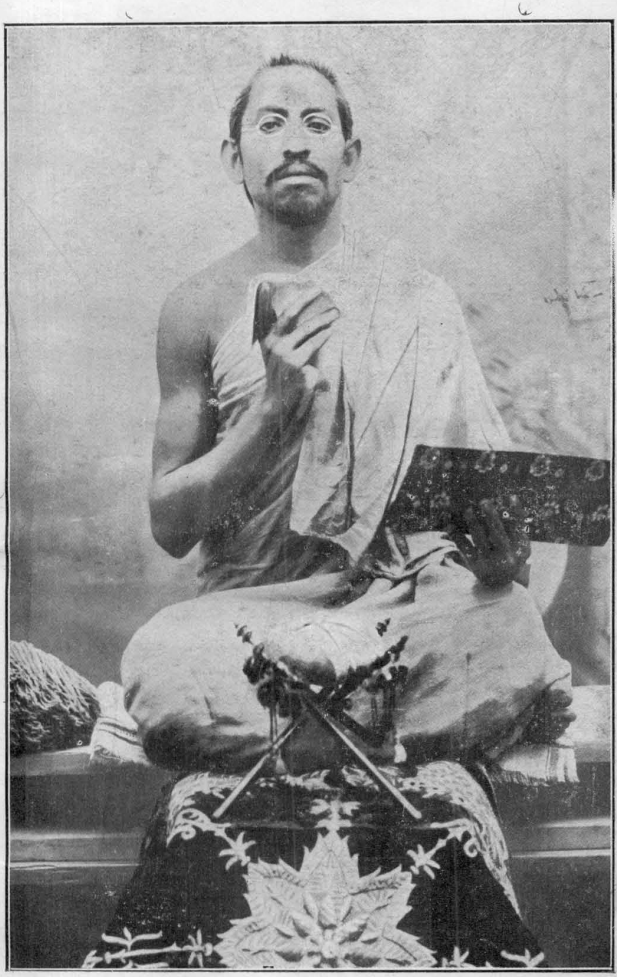

श्रीयुतमुनि लब्धि विजयजी महाराज

जन्म १९४०. दीक्षा १९५९.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रस्तावना

श्रीमद्विजयानन्दसूरिभ्योनमः

हंहो विचक्षणशेमुषीधरा नराः पुरा किलात्र भारतक्षेत्रेऽस्मज्जैन-मण्डले निजबुद्धिबलाधस्कृतबृहस्पतयो जैनशास्त्रादिसकलसंस्कृत-विद्यापारावारपारीणाः पराजिताखिलवादिनिवहा बहवो मुनिपतयो बभूवुः। ते च सर्वे प्रायशो गृहस्थद्रव्यव्ययानपेक्षाः स्वयं जैनशा-स्त्राभ्यासोपलब्धविनयादिगुणोपेतान् नानाशास्त्रार्थग्रहणधारण-पटून्स्वशिष्यबटून् सम्यगध्याप्य दीपाः प्रतिदीपानिव स्वसमानां-स्तान्निर्वर्त्तयांचक्रिरे। अथ चैवं शिष्यप्रशिष्यपठनपाठनप्रणा-लिका कियत्कालं यावच्चलिता परन्त्वधुना कालदोषादापतितेन गरीयसा प्रमाददोषेण पानीयसिञ्चनादिसाधनविरहेणोद्यानभूरिव जीर्णतामावहति। तद्व्यवहारणेऽपि तत्कालापेक्षया महान् भेदो जातः॥ अतोऽस्यातिपवित्रस्यापि जिनोक्तधर्मस्य ह्रासो दरी-दृश्यते। ततोऽधुनापि विनिद्रीभूय हस्ताभ्यां नेत्रे उन्मील्य साव-धानीभूय प्रतिबन्धकान्यपनीय कुर्व्वन्त्वस्य जिनेश्वरोक्तधर्म्मस्य परां वृद्धिं प्रतिबोधयन्तु नानानिबन्धैरनेकाँल्लोकानिति स्व-प्रान्तरोत्थितविचारविवशेनाल्पमेधसाऽपि मया प्रतिबोधप्रत्ययोऽयं निबन्धो निरमायि। कोऽत्रविषय इति चेन्निशम्यताम्,जैनानां तिस्रः शाखाः सन्ति तास्वातिप्राचीनाः श्वेताम्बरा अर्वाचीनदिगम्बराश्च मन्वन्ते मूर्तेरुपाशनां फलवतीम् किन्तु ढूंढकनाम्ना प्रसिद्धा या शाखाऽस्ति साऽवमन्यते मूर्तेरुपाशनाम्।प्रायशोत्र शाखायां भूयांसो निरक्षरानरा वरीवर्तन्ते यद्येतेषु कश्चित् किञ्चिज्ज्ञो भवति तदा सस्वं सर्वज्ञं मन्यते। इमे तीर्थङ्करदेवप्रतिकृतेरवज्ञाकारका मलक्लिन्न-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शरीराः सर्वदैव मुखवस्त्रिकया मुखं बध्वाऽवतिष्ठन्ते । पञ्चनद देशीयानामेतेषामर्धदेशीया बाढं पुण्योदयवन्तोऽभवन् । यदेतेषामनुग्रहाय स्वयशःसुधाकरचन्द्रिकाधवलिताखिलवसुन्धरा अमेरिकेङ्गलेन्डादि नानाविदेशविस्तृतभूरिकीर्त्तयो धर्म्ममूर्तयो विजयानन्दसूरयः प्रसिद्धख्यात्यात्मारामाह्वमुनिपतयो वादिगणलब्धविजया अत्र पञ्चनददेशे समभवन् । यैरेते निर्धूतकलिकल्मषैः सूरीश्वरैरनेकयुक्तिप्रयुक्तिभिर्नानासूत्रस्थमूर्त्तिपूजाविधिविधानकपाठैश्च प्रतिबोधिताः सन्तोऽतीव प्राचीनश्वेताम्बरमूर्त्तिपूजकशाखायां संप्रविष्टा जाताः, परन्तु येऽवशिष्टाः सन्ति ते पक्षपातग्रस्ता न भवेयुः किन्तु यथा सत्यं सत्यमसत्यमसत्यं ज्ञात्वा दिव्यागमज्ञाननेत्रप्रदातुर्महोपकर्तुर्जिनेशितुर्मूर्तिं सत्क्रियेरंस्तथोपदेशायास्य पुस्तकस्य पूर्वार्द्धार्द्धे ढूंढकमतावलम्बीनां शास्त्रानुसारेणैव मूर्तेर्मण्डनंकृतमस्ति । पश्चात् प्रसंगवशादन्यधर्मिणां मध्ये ये मूर्त्तिमवमन्यन्ते तानुद्दिश्यानेका युक्तयस्तेषामागमप्रमाणानि च दर्शितानि सन्ति । पश्चात् कीदृश्या मूर्तेः पूजनमात्मकल्याणायालंभवेदिति निर्णीतिर्विहिता । चास्य सम्यग् ज्ञाने बालो ऽप्यलंभूष्णुतामालम्बेतैतदर्थमेवेदं पुस्तकं कल्पितनृपतिमन्त्रिसंवादरूपं निबद्धमस्ति ॥

यद्यस्य पक्षपातशून्यस्यापि पुस्तकस्य पाठात् केषांचिच्चित्तानि प्राप्नुयुर्दुःखं तदा ते ममोपरि क्षमां कुर्व्वीरन्नित्यभ्यर्थयते श्रीमद्विजयकमलसूरिचरणोपासक मुनीनामनुचरोऽयं **मुनिलब्धिविजयः।** किमधिकेन ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

❀ श्रीवीतरागायनमः ❀

❀ मूर्ति मण्डन ❀

रागद्वेषपरित्यक्ता विज्ञाता विश्ववस्तुनः
सेव्यः सुधाशनेशानां गिरीशो ध्यायते मया ॥१॥
जिनवर! तव मूर्तिं ये न पश्यन्ति मूढाः
कुमतिमतकुभूतैः पीड़िताः पुण्यहीनाः ?
सकल सुकृतकृत्यं नैव मोक्षाय तेषां।
सुनिविड़तृणराशि श्राग्निसंगाद्यथैव ॥२॥
सूरिं श्रीविजयानन्दं तं नमामि निरन्तरम्।
यस्याभूवं प्रसादेन बालोऽपि मुखरीतरः ॥३॥
प्रणम्य सद्गुरुं भक्त्या सूरिं श्रीकमलाव्हयं ?
क्रियते मूर्तिपूजाया मण्डनं दुःख खण्डनम् ॥४॥

इस संसार में जितने मतानुयायी पुरुष हैं वे सब कहते हैं कि ईश्वर परमात्मा का ध्यान इस असार संसार से पार करने वाला है, परन्तु इस बात का विचार नहीं करते कि निराकार का ध्यान कैसे होसक्ता है, क्योंकि जिसका कोई आकार ही नहीं है उसका कोई भी मनुष्यमात्र अपने हृदय में ध्यान नहीं कर सक्ता, यथा किसी पुरुष को कहा जाए कि सीतलदास

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जो कि बड़ा ही योग्य पुरुष है, और बम्बई नगर में रहता है, तुम उसका ध्यान करो, जिस पुरुष को सीतलदास का ध्यान करने के लिये कहा गया, उसने सीतलदास का कभी भी दर्शन नहीं किया है, अब वह बिचारा उसका ध्यान कैसे कर सक्ता है, यदि उस समय उसको सीतलदास का चित्र दिखला कर कहा जावे कि अब तुम उसका ध्यान करो, तो उसी समय उसका चित्त से ध्यान कर सक्ता है, परन्तु केवल नाम मात्र से कार्य्य नहीं होसक्ता। यदि नाम के सुनने से ही कार्य्यसिद्ध होजाए तो आर्य्यस्कूल (पाठशाला) में अथवा ईसाईस्कूल में पढ़ने वाले लड़के अथवा कन्याओं के विवाह के समय एक दूसरे के चित्र न देखते। केवल लड़के लड़की का नाम ही पूछ लेते, परन्तु ऐसा नहीं करते हैं, जिससे विवाह करना होवे उनके चित्र आपस में अवश्य देख लेते हैं। अब ध्यान कीजिए कि लड़का लड़की तो एक प्रत्यक्ष वस्तु है, जब उनके चित्र विना कार्य्य नहीं होसक्ता,तो वह निराकार परमात्मा है उस का स्वरूप चित्र के विना अवलोकन करना अतीव दुःसाध्य है। और उसका ध्यान करना भी चित्र के विना कठिन है। यदि कोई यह कहे कि पुरुष तो स्वरूप वाला है, इसलिये इसका चित्र तो बन सक्ता है, परन्तु ईश्वर परमात्मा की तो कोई मूर्त्ति ही नहीं है, इसवास्ते उसकी मूर्त्ति नहीं होसक्ती, पुरुष मात्र को इस बात का ज्ञान होना चाहिये कि हमारे ढूंढिये भाई तो ऐसा कह ही नहीं सक्ते, क्योंकि वे भी हमारी तरह चौवीस अवतारों को साकार मानते हैं। बतलावें कि यह लोग मूर्त्तिपूजा से कैसे छूट सक्ते हैं। शेष जो अन्यमतानुयायी हैं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वेह भी मूर्त्तिपूजा से नहीं छूट सक्ते। केवल उनका यह व्यर्थ कथन है कि हम मूर्त्ति को नहीं मानते। सो यह वार्त्ता आप को यथाकथन राजा के दृष्टान्त से अच्छी तरह मालूम हो जाएगी, यदि ईर्षा के उपनेत्र को उतारकर ध्यान करेंगे, तो अवश्य मूर्त्तिपूजा के सूक्ष्म विषय को मान लेंगे, अब दत्त-चित्त होकर सुनिये। एक नगर में एक राजा था, वह बड़ा धर्म्मात्मा जिज्ञासु और समदर्शी था। इसके दो मन्त्री थे, उन में से एक मन्त्री तो मूर्त्तिपूजा को मानता था और दूसरा नहीं मानता था और राजा साहिब स्वयं ही मूर्त्तिपूजा किया करते थे। राजा साहिब प्रतिदिन प्रातःकाल को इष्टदेव की भक्ति पूजा करके न्यायालय में आया करते थे, इसवास्ते प्रायः कुछ विलम्ब होजाया करता था। एक दिन मूर्त्तिपूजा को न मानने वाले मन्त्री ने हाथ जोड़कर कथन किया कि महाराज! आप बहुत विलम्ब से न्यायालय में आते हैं इसका क्या कारण है? श्रीमहाराजने प्रत्युत्तर दिया कि मैं पूजन करके आया करता हूं, इसवास्ते प्रायः देर होजाती है, तब मन्त्री ने कहा कि महाराज! अपमान न समझिए, आप ऐसे बुद्धिमान् होकर मूर्त्तिपूजा करते हो, मूर्त्तिपूजा से कुछ भी लाभ नहीं होसक्ता (मूर्त्तिपूजा क्यों करते हैं?) क्योंकि जड़ वस्तु को ईश्वर मानकर पूजना बुद्धिमानों का कर्त्तव्य नहीं है, अन्त में उस मन्त्री ने ऐसी २ बहुतसी बाते सुनाई कि तत्क्षण महाराज जी का ख्याल बदल गया, और मूर्त्तिपूजा करनी छोड़दी। जब दो चार दिन व्यतीत हुए तो मूर्त्तिपूजक मन्त्री ने भी यह बात सुनी कि महाराज ने मन्त्री के ऐसे मूर्त्तिपूजा निषेध

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपदेश से मूर्त्तिपूजा करनी छोड़दी है। तब एक दिन मूर्त्ति-पूजक मन्त्री ने महाराज से निवेदन किया कि स्वामिन् ! हे नाथ ! क्या बात है, सुना जाता है कि आपने भगवान् की मूर्त्ति का पूजन करना छोड़ दिया है। तब महाराज ने प्रत्युत्तर दिया कि हां सत्य है मैं जड़ पूजा नहीं करूंगा। जड़ वस्तु हम को कुछ नहीं दे सक्ती। मूर्त्तिपूजक मन्त्री ने कहा कि हे स्वामिन् ! यदि ऐसा था तो आप पूर्व क्यों मूर्त्तिपूजन किया करते थे ? महाराज ने प्रत्युत्तर दिया कि मैं पहिले अज्ञान में था, परन्तु मुझे अब दूसरा मन्त्री सन्मार्ग पर ले आया है, इसलिये मैंने यह कार्य्य छोड़ दिया है। मूर्त्तिपूजक मन्त्री ने कहा,महाराज ! इस संसार में प्रायः ऐसा कोई भी मत है जो मूर्त्तिपूजन से रहित हो ? और किसी न किसी दशा में वह मूर्त्तिपूजा न मानता हो ? राजा साहिब ने कहा कि आप का यह कहना असत्य है, क्योंकि हमारा दूसरा मन्त्री ही मूर्त्तिपूजन को नहीं मानता ? और " ढूंढिये " " यवन " "सिक्ख" "आर्य्य" " ईसाई " इत्यादि मतवाले मूर्त्तिपूजन को नहीं मानते हैं। मूर्त्तिपूजक मन्त्री ने कहा कि आपको यह भी मालूम है कि आपके दूसरे मन्त्रीजी किस मत के अनुयायी हैं ? राजा ने कहा, हां ! मुझे मालूम है कि वह आर्य हैं। मूर्त्तिपूजक मन्त्री ने कहा कि आपको निश्चय हो गया है कि " आर्य्य " " ढूंढिये " " सिक्ख " "यवन" "ईसाई" आदि मतानुयायी मूर्त्तिपूजन को नहीं मानते हैं। राजा ने कहा कि हां ! मुझ को दूसरे मन्त्री ने सुनाया है कि हम लोग मूर्त्ति को नहीं मानते हैं॥ मूर्त्तिपूजक मन्त्री ने कहा कि महाराज !

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आंखों और कानों में चार अंगुलियों का अन्तर है आपने मन्त्री से केवल सुना ही है परन्तु अवलोकन नहीं किया है कि सत्य है यह लोग मूर्त्तिपूजन को नहीं मानते। यदि देखलें तो आपको स्वयं ही मालूम होजाए, कि यह लोग क्या २ करते हैं। मैं आपको अच्छी तरह से दिखला सक्ता हूं कि यह लोग मूर्त्तिपूजन से कदापि दूर नहीं होसक्ते। राजा ने कहा कि हां! बड़े हर्ष की बात है कि यदि आप युक्ति प्रमाण से सिद्ध करके दिखलाओगे कि वस्तुतः ही यह उक्त धर्म्मावलम्बी मूर्त्तिपूजन को मानते हैं, तो मैं तत्क्षण मूर्त्तिपूजन करने लग जाऊँगा, और मान लूंगा। मूर्त्तिपूजक मन्त्री ने कहा कि हे स्वामिन्! बहुत अच्छा, तीसरे दिन आप एक सभा लगाएं। और 'ढूंढिये' 'सिक्ख' 'यवन' और 'आर्य्य' इन धर्म्मावलम्बिओं के चार सुयोग्य पुरुषों को बुलबाएं। राजा ने यह बात स्वीकार करली और नियत दिन आने पर सभा लगाई गई और सर्वमतानुयायी सज्जनगण एकत्रित होगये, और वे चार आदमी भी बुलाए गए। इस के अनन्तर राजा ने मूर्त्तिपूजक मन्त्री को आज्ञा दी, कि अब आप इन चार आदमियों से प्रश्न उत्तर कीजिए, और मूर्त्तिपूजा सिद्ध करिए। मन्त्री ढूंढिये भाई के सन्मुख हुए और कहा, भ्रातृगण! क्या आप मूर्त्तिपूजा को नहीं मानते हैं?

ढूंढिया—नहीं, हम जड़ मूर्त्ति को नहीं मानते, क्योंकि मूर्त्तिपूजा न तो युक्ति से सिद्ध होती है, और न ही हमारे सूत्रों में तीर्थङ्कर महाराज का मूर्त्तिपूजा के विषय में कथन है॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मन्त्री—प्रथम मैं आपको युक्ति से सिद्ध करके दिखलाता हूं॥ लो सुनिए ! क्या आप खण्ड के बने हुए १ "हस्ती,अश्व, वृषभ" आदि खिलौने खाते हो या नहीं ?

ढूंढिया—देखिए साहिब ! मैं साफ २ कह देता हूं कि हम खाते तो कदापि नहीं हैं, परन्तु जब से मूर्त्तिपूजा की विपदा हमारी ग्रीवा में चिमड़ने लगी—उस समय से तो हमको यही कहना पड़ता है कि हां ! खालेते हैं ॥

मन्त्री—वाह जी वाह ! ठीक मनुष्यों के भय से आप ने अपना मन्तव्य छोड़ दिया। इन बातों को जाने दो ज़रा आप यह तो बतलाएं कि माला के कितने मणके होते हैं ॥

ढूंढिया—(१०८) एकसौ आठ

मन्त्री—न्यूनाधिक क्यों नहीं होते ? एकसौ आठ ही की संख्या क्यों नियत है ?

ढूंढिया—मुझे मालूम नहीं, इसलिये मैं आपको अपने गुरु जी से पूछकर निवेदन कर सक्ता हूं ॥

१—नोट—जिस मनुष्य को इसमें शंका हो वह किसी ढूंढिये भाई को अपने सन्मुख खण्ड का खिलौना खिलावे,वह कदापि नहीं खाएगा। यही कारण है कि वस्तुतः मूर्त्तिपूजन मानते हैं। केवल ईर्षा में आकर हठ में पडकर कुछ परमार्थ का ख्याल नहीं करते ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मन्त्री—अच्छा जाइए परन्तु शीघ्र पधारिये, देर किसी प्रकार न हो ॥

ढूंढिया—श्रीमान् जी ! मैं पूछ करके आगया हूं ॥

मन्त्री—कहिए क्या ?

ढूंढिया—गुरुजी ने कहा है कि अर्हन्त भगवन्त के द्वादश गुण, और सिद्ध महाराज के आठ, और आचार्य्यजी के छत्तीस, और उपाध्याय जी के पच्चीस, और साधु महाराज जी के सत्ताईस, इन सब का योग करने से १०८ गुण होते हैं, इसलिए मणके भी १०८ रक्खे गए हैं ॥

मन्त्री—आप कुछ समझे ?

ढूंढिया—नहीं श्रीमान् जी मैं कुछ नहीं समझा हूं ॥

मन्त्री—आप तनक ध्यान से सुनिए, मैं आपको समझाता हूं। पांच * परमैष्ठी के गुण एकसौ आठ होने से माला के मणके भी १०८ बनाकर उन में उन महात्माओं के गुणों की स्थापना (मूर्त्ति) क्यों नहीं मानी जाएगी ? जरूर ही माननी पड़ेगी ॥

ढूंढिया—यह बात तो ठीक है, भला कोई और भी युक्ति है ?

मन्त्री—लो ध्यान दीजिए, आप यह कहें आप लोगों के गुरु और गुरुणी के चित्र होते हैं ? वा नहीं ?

---

* जैनियों के मूलमन्त्र का नाम है, जो नवकार मन्त्र के नाम से प्रसिद्ध है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ढूंढिया—हां साहिब, उनके तो सैंकड़ों ही चित्र मिल सक्ते हैं परन्तु हम लोक उनके केवल दर्शन ही करते हैं फल फूलादिक चढ़ाकर कच्चे पानी से स्नान कराकर हिंसा तो नहीं करते ॥

मन्त्री—अच्छा जी यदि आप लोक हिंसा नहीं करते तो आपके गुरु करते होंगे ॥

ढूंढिया—वह कैसे ?

मन्त्री—जिस समय चित्र लिया जाता है आप नहीं जानते कि कच्चे पानी से धोना पड़ता है जिस से असंख्य जीवों का नाश होता है आपके गुरू जान बूझकर चित्र खिचवाते हैं। तो वे स्वयं जानकर ही हिंसा करवाते हैं इसलिए आपके गुरु हिंसा से पृथक् नहीं होसक्ते। और हिंसा समझ कर ईश्वर परमात्मा की मूर्त्ति की पूजा से हटजाना आपकी बड़ी भारी मूर्खता है चित्र खिचवाने से मूर्त्ति का स्वीकार करना प्रत्यक्ष प्रतीत होता है ॥

बड़े शोक की बात है कि आप लोक ईश्वर परमात्मा की मूर्त्तिएं नहीं बनवाते और नाही उनके सन्मुख सिर नमाते हो किन्तु गुरु जी की मूर्त्ति के सन्मुख मस्तक झुकाते हो इन बातों से आपके गुरुओं में अभिमान भी पाया जाता है। जो कि अपने चित्र खिचवाकर "उनके सन्मुख जब आप लोक सिर झुकाते हैं" तो आपको मना नहीं करते और मूर्त्तिपूजा नहीं बतलाते क्या ईश्वर के साथ ही शत्रुता है ? और क्या वे तीर्थङ्कर महाराज से जो कि जगद्गुरु कहलाते हैं उन से भी बड़े हैं ? यदि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आप लोग पक्षपात को छोड़कर ध्यान देंगे तो मूर्तिपूजा से कदाचित भी दूर नहीं होसक्ते। भला एक बात मैं आपसे और पूछता हूं कि जिस स्थान में स्त्री की मूर्ति हो ब्रह्मचारी साधु वहां रहें वा न रहें ?

ढूंढिया—कदाचित भी वहां न रहें, क्योंकि जैनसूत्रों में लिखा है कि जिस स्थान पर स्त्री की मूर्ति हो वहां पर साधु न ठहरें इस बात को हम लोग भी मानते हैं ॥

मन्त्री—अब आप तनक ध्यान तो दें कि सूत्रों में निषेध क्यों लिखा है ॥

"विना प्रयोजनं मन्दोऽपि न प्रवर्त्तते"

अर्थात मूर्ख भी विना प्रयोजन कोई काम नहीं करता तो फिर सूत्रों में तो सर्वज्ञों का ज्ञान है क्यों निषेध किया है ?

ढूंढिया—सूत्रों में इसलिये निषेध किया है कि वार२ स्त्री की मूर्ति की ओर देखने से बुरे भाव उत्पन्न होते हैं ॥

मन्त्री—तो फिर क्या वीतराग परमात्मा की मूर्ति देखने से शुद्धभाव नहीं उत्पन्न होंगे ? क्यों नहीं अवश्य ही उत्पन्न होंगे ? इसलिये ही सूत्रों में निषेध किया है, कि जिस दीवार पर स्त्री की मूर्ति हो साधु वा ब्रह्मचारी उसको न देखे। जैसे सूर्य्य को देखकर अपनी दृष्टि पीछे हटा ली जाती है, इसी प्रकार ही मुनि अपनी दृष्टि पीछे खैंचले, क्योंकि दीवार पर स्त्री की मूर्ति को देखकर साक्षात उस स्त्री का स्मरण होता है जिस की वह मूर्ति है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अब ज़रा ध्यान से देखें कि जब तुच्छ स्त्री की मूर्ति को देखकर साक्षात् स्त्री का भान होता है तो क्या तीर्थङ्कर भगवान् की मूर्ति को देखकर उनका स्मरण नहीं आएगा ? अवश्य ही स्मरण आएगा। और आप लोक अपने गुरुओं के चित्रों का सन्मान तो करते हैं, यदि उनके चित्रों का अपमान करें, तो उसको बहुत ही अयोग्य प्रतीत होता है, तो फिर क्या परमात्मा की ही मूर्ति से द्वेष है ? यदि आप यह कहेंगे कि हम अपने गुरुओं की मूर्ति का सन्मान नहीं करते हैं तो आपका यह कथन भी मिथ्या है क्योंकि यह बात तो हम उस समय मानें जब आपके गुरु की मूर्ति किसी ऐसे स्थान पर गिरी पड़ी हो जो कि अपवित्र स्थान हो,और आप न उठाएं। फिर तो हम भी मानें कि निस्सन्देह आप लोक सन्मान नहीं करते, आप लोक तो विरुद्ध इसके शीशे में जड़ा कर अपने निवासस्थान में अपने शिर के ऊपर लटकाते हैं॥

यथा सती पार्वतीजी और उदयचन्दजी और सोहनलालादि अपने गुरुओं के चित्र क्यों बनवाते हो ? क्योंकि आपकी धार्म्मिक युक्ति से मूर्ति को सन्मान करना और शिर झुकाना विरुद्ध है। क्योंकि वह भी तो स्याही और पत्र के विना और कोई वस्तु नहीं हैं॥ जैसे आप तीर्थङ्कर महाराज की मूर्तिओं को जड़ कहते हैं, इसप्रकार वे भी तो जड़ हैं ? इसलिये आप के गुरुओं को भी योग्य नहीं कि वे खिचवाएं, क्योंकि बनाने में असंख्य जीवों का नाश होता है, आप लोग मूर्ति से कुछ लाभ ही नहीं समझते हैं तो फिर आपके गुरु हिंसा समझकर रात्रि को जलतक भी नहीं रखते, परन्तु चित्रकार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के मिसाले से असंख्य जीवों की हिंसा के पाप के भागी होते हैं, सो यह बात विचारास्पद है, हठ को छोड़िए और पक्षपात से मुख मोड़िए सन्मार्ग में अनुराग जोड़िये ॥

ढूंढिया—हां साहिब ! युक्ति से तो निस्सन्देह सिद्ध हो गया परन्तु सूत्रपाठ के विना हम नहीं मान सक्ते ॥

मन्त्री—यदि जैनसूत्रों से मूर्तिपूजा सिद्ध होजाए तो आप मान जायेंगे ?

ढूंढिया—हां साहिब ! अवश्य २ ॥

मन्त्री—लो तनक ध्यान दीजिए, आवश्यक सूत्र की निर्युक्ति में लिखा है कि भरत चक्रवर्त्ती ने अष्टापद पर्वत पर जिनमन्दिर बनवाए, और चौबीस तीर्थङ्करों की मूर्तिएं विराजमान कीं ॥

ढूंढिया—श्रीमान्जी, तनक धैर्य्य करें,हम लोग 'निर्युक्ति' 'भाष्य''चूर्णी''टीका' इत्यादि नहीं मानते हम को तो सूत्र का मूलपाठ ही स्वीकार है ॥

मन्त्री—आप घबराते क्यों हो, लो सुन लीजिए, श्री भगवती सूत्र में साफ लिखा है कि निर्युक्ति को मानना चाहिए जो नहीं मानता वह सूत्र के अर्थ का शत्रु है यदि इस बात में सन्देह हो तो श्रीभगवती सूत्र का पाठ सुनलो—

पाठ यह है—

निज्जुतिमन्तव्या सुत्तत्थो खलु पढमो बीओनिज्जुति

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिस्सओ भणीओ तइओय निर्विसेसो। एस विही होइ अणुओगो ॥

इस पाठ में साफ लिखा है कि प्रथम सूत्रार्थ का कथन करना, फिर निर्युक्ति के साथ द्वितीय वार अर्थ करना, और तीसरी वार निर्विशेष अर्थात पूरा २ अर्थ करना, अब ख्याल करना चाहिये कि इस पाठ से निर्युक्ति मानना साफ प्रतीत होता है ॥

ढूंढिया—भरत महाराज ने धर्म्म जानकर नहीं प्रत्युत बाप के मोह से मन्दिर और मूर्तियें बनवाई ॥

मन्त्री—आपका यह कथन मिथ्या है क्योंकि भरत महाराजजी ने श्रीऋषभदेवजी की ही नहीं प्रत्युत और तेईस तीर्थङ्कर महाराजजी की मूर्तियां बनवाई थी, आप लोगों ने तो निर्युक्ति—भाष्य—टीका—और चूर्णी—यह जो पांच अङ्ग हैं उनमें से केवल एक सूत्र को ही माना शेष छोड़ दिये। इस कारण से ही आप जैनश्वेताम्बरधर्म्म के अनुयायी नहीं हैं। यथा वैदिकधर्म्म में स्वामी दयानन्दजी ने वेद के मूल पाठ को माना टीका और भाष्य को नहीं माना, और नया मत प्रकाशित किया और मुसलमान मत में जिन्होंने कुरान को माना,और हदीस को न माना वह राफ जी मत कहलाया, वैसे ही आप लोगों ने भी ठीक बात को न मानकर उलटी बात को माना और ढूंढिए कहलाए ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्वितीय प्रमाण ।

श्रीसूगडाङ्ग के दूसरे श्रुतस्कन्ध की निर्युक्ति में लिखा है कि आर्द्रकुमार ने जिनमूर्ति को देखकर प्रतिबोध पाया ॥

तृतीय प्रमाण ।

श्रीमहावीरजी स्वामी के सन्मुख अंबड़ परिव्राजक ने अर्हन्त की मूर्ति को नमस्कार करना स्वीकार किया है ॥

पाठ यह है—

अंबडस्सणं परिवायगस्स नो कप्पइ अण्ण उत्थि-एवा अण्ण उत्थिय देवयाणि वा अण्ण उत्थिय परि-ग्गाहियाइं अरिहंत चेइयाइं वा वंदित्तए वा नमंसित्तए वा णण्णत्थ अरिहंतेवा अरिहंतचेइआणिवा ॥

आशय इस पाठ का यह है कि मुझ को अन्य मत के देवों की मूर्ति और यदि अन्य धर्म्मावलम्बी लोगों ने अर्हन्त की मूर्ति को लेकर अपना देव मान लिया हो उनको बन्दना नमस्कार करना स्वीकार नहीं है परन्तु अर्हन्त और अर्हन्त की प्रतिमा को बन्दना नमस्कार करूंगा ॥

चतुर्थ प्रमाण ।

आनन्द श्रावक के पाठ से प्रत्यक्ष भान होता है कि वह श्रीतीर्थंकर महावीर स्वामीजी के सन्मुख गया और उसने यह नियम स्वीकार किया कि मुझ को अन्य मत की मूर्ति को और अपने देव की मूर्ति को जो अन्यने स्वीकार कर ली हो उनको

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वन्दना नमस्कार करना स्वीकार नहीं है। सो श्रीउपासक दशाङ्ग सूत्र का वह पाठ पाठकगणों के प्रतीत होने के लिये नीचे लिखा जाता है॥

पाठ यह है—

नोखलु मे भंते कप्पइ अज्जप्पभिइंचणं अन्न उथ्थियावा अन्नउथ्थिय देवयाणिवा अन्न उथ्थिय परिग्गहियाइं अरिहंतचेइयाइं वा वंदित्तए वा नमंसित्तए वा पुव्विं अणालित्तेणं आलवित्तए वा संलवित्तए वा तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दाउंवा अणुप्पदाउंवा णण्णथ्थ रायाभिओगेणं गणाभिओगेणं बलाभिओगेणं देवयाभिओगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तिकंतारेणं कप्पइमे समणे निग्गंथे फासुएणं एसणिज्जेणं असण पाण खाइम साइमेणं वथ्थपडिग्गह कंबल पाय पुच्छणेणं पाडिहारिय पीढ फलग सेज्जा संथारएणं ओ सहभेसज्जेणय पडिलाभेमाणस्स विहरित्तए तिकट्टइमं एयाणुरूवं अभिग्गह अभिगिण्हंइ॥

पञ्चम प्रमाण।

श्रीज्ञातासूत्र में लिखा है कि जिनमन्दिरों में जाकर जिन-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रतिमाकी द्रौपदीने सतारह भेदी पूजा की और "नमुथ्थुणं" पढ़ा है, सो पाठ यह है—

तएणं सा दोवइ रायवर कन्ना जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ मज्जणघर मणुप्पविसइण्हायाकय-बलिकम्मा कयकेउय मंगल पायंत्छित्ता सुद्धपावे-साइं वत्थाइं परिहियाइं मज्जणघराओ पीडणिक्खमइ जेणेव जिनघरे तेणेव उवागच्छइ जिनघर मणु-पविसइ पविसइत्ता आलोए जिणपडिमाणं पणामं करेइ लोमहत्थयं परामुसइ एवं जहा सुरिया-भो जिण पडिमाओ अच्चेई तहेव भाणियव्वं जाव धुवं डहइ धुवं डहइत्ता वामं जाणु अंचेइ अंचेइत्ता दाहिण जाणु धरणी तलंसि निहट्टु तिखुत्तो मुद्धाणं धरणीतलंसि निवेसेइ निवेसेत्ता इसिं पच्चुणमइ कर-यल जावकट्टु एवं वयासि नमोथ्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जावसंपत्ताणं वंदइ नमंसइ जिनघराओ पडिणिक्खमइ ॥

षष्ठ प्रमाण ।

श्रीमहानिशीथ सूत्र में लिखा है कि जो पुरुष जिनमंदिर बनवाएगा उसको द्वादश स्वर्ग की गति प्राप्त होगी, देखलो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इस में जिनमन्दिर बनवाने वाले को बारहवा देवलोक की गति का मिलना प्रत्यक्ष है ॥

ढूंढिया—हम महानिशीथ सूत्र को नहीं मानते ॥

मन्त्री—श्रीनन्दी सूत्र को आप मानते हो वा नहीं ?

ढूंढिया—हां साहिब ज़रूर ॥

मन्त्री—उसी श्रीनन्दी सूत्र में श्रीमहानिशीथ का नाम लिखा है, बड़े ही शोक का स्थान है कि जिस नन्दी सूत्र को आप मानते हैं, उसके मूलपाठ में श्रीमहानिशीथ का नाम लिखा है, तो फिर आप उसको क्यों नहीं मानते ? ॥

सप्तम प्रमाण ।

श्रीमहाकल्प सूत्र के पाठ से प्रत्यक्ष सिद्ध है कि साधु और श्रावक जिनमन्दिर में सदैव जावें इस पर श्रीगौतम स्वामीजी ने भगवान् से पूछा कि यदि न जाएं तो क्या दण्ड लगता है। भगवान् ने उत्तर दिया कि यदि प्रमाद के कारण न जावें तो दो व्रत का या तीन व्रत का दण्ड लगता है। फिर श्रीगौतम स्वामीने पूछा कि हे भगवन् ! क्या पौषध ब्रह्मचारी श्रावक पौषध में रहा हुआ जिनमन्दिर में जावे ? भगवान् ने उत्तर दिया कि हां गौतम ! जावें ॥ फिर श्रीगौतम स्वामीजी ने भगवान् से पूछा कि वह मन्दिर में किस लिये जावे, भगवान ने उत्तर दिया कि ज्ञान दर्शन चारित्र के वास्ते जावे ॥ श्रीमहा कल्प सूत्र का पाठ यह है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से भयवं तहारुवं समणं वा माहणं वा चेइयघरे गच्छेज्जा हंता गोयमा दिणे दिणे गच्छेज्जा। से भयवं जत्थ दिणे ण गच्छेज्जा तओ किं पायच्छित्तं हवेज्जा गोयमा पमायं पडुच्च तहारूवं समणं वा माहणं वा जो जिणघरं न गच्छेज्जा तओ छट्ठं अहवा दुवालसमं पायच्छित्तं हवेज्जा। से भयवं समणो वासगस्स पोसहसालाए पोसहिए पोसह वं भयरि। किं जिणहरं गच्छेज्जा। हंता गोयमा। गच्छेज्जा। से भयवं केणट्ठेणं गच्छेज्जा। गोयमा णाण दंसण चरणट्ठाए गच्छेज्जा। जे केई पोसहसालाए पोसह बंभयारी जओ जिणहरे न गच्छेज्जा तओ पायच्छित्तं हवेज्जा ? गोयमा जहा साहू तहा भाणियव्वं छट्ठं अहवा दुवालसमं पायच्छित्तं हवेज्जा ॥

ढूंढिया—महोदय ! यह सूत्र भी बत्तीस सूत्रों में नहीं हैं इसलिये हम लोक नहीं मानते ॥

मन्त्री—रे भ्रातः ! श्रीनन्दीसूत्र के मूलपाठ में इसका नाम है वा नहीं ?

ढूंढिया—हां श्रीनन्दीसूत्र के मूलपाठ में तो अवश्य है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मन्त्री—तो फिर आप श्रीनन्दीसूत्र को मानते हो वा नहीं

ढूंढिया—हां मानते हैं ॥

मन्त्री—तो बड़े ही शोक की बात है कि फिर श्रीमहाकल्प सूत्र को क्यों नहीं मानते ॥

अष्टम प्रमाण ।

श्रीभगवती सूत्र में लिखा है कि तुंगीया नगरी के श्रावकों ने श्रीजिनप्रतिमा पूजी है ॥

नवम प्रमाण ।

श्रीरायपसेणीसूत्र में लिखा है कि सूर्य्याभ देवता ने श्री जिनप्रतिमा की पूजा की है ॥

दशम प्रमाण ।

श्रीउत्तराध्ययनसूत्र की निर्युक्ति अध्ययन १० में लिखा है, श्रीगौतम स्वामीजी अष्टापद की यात्रा करने को गए ॥

एकादश प्रमाण ।

श्रीआवश्यकसूत्र की निर्युक्ति में लिखा है कि वग्गुर श्रावक ने श्रीमल्लीनाथजी का मन्दिर बनवाया, इसी सूत्र में लिखा है कि फूलों से यदि जिनपूजन किया जावे तो संसार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

में आवागमन नहीं होवे अर्थात् मोक्ष प्राप्त होवे,इसी सूत्रमें लिखा है कि प्रभावती श्राविका उदायन राजा की रानी ने जिनमन्दिर बनवाया। और श्रीजिनप्रतिमा के आगे नाटक किया, इसी सूत्र में लिखा है कि श्रेणिक राजा प्रतिदिन सोने के यव बनवाकर श्रीजिनप्रतिमा के आगे साथिया किया करता था॥

द्वादश प्रमाण।

श्री प्रथम अनुयोग में अनेक श्रावक और श्राविकाओं ने जिनमन्दिर बनवाये, और श्रीजिनप्रतिमा पूजी ऐसा वृत्तान्त है।

ढूंढिया—प्रमाण तो महोदयजी आपने उत्तम २ दिये, परन्तु चैत्य शब्द पर सन्देह है, क्योंकि इसका अर्थ मूर्त्ति वा भगवान् की प्रतिमा नहीं होसक्ता॥

मन्त्री—तो और क्या होसक्ता है?॥

ढूंढिया—इस शब्द का अर्थ साधु होता है।

मन्त्री—किसी कोश में भी "चैत्य" शब्द का अर्थ साधु नहीं किया है, कोश में तो "चैत्यं जिनौकस्तद्बिम्बं चैत्यं जिनसभातरुः" अथवा जिनमन्दिर और श्रीजिनप्रतिमा को चैत्य कहा है, और चौतराबन्ध वृक्ष का नाम चैत्य कहा है, आपने जो चैत्य शब्द का अर्थ साधु किया है, वह किसी प्रकार से भी ठीक नहीं है क्योंकि सूत्रों में तो किसी स्थान पर भी साधु शब्द को चैत्य कहकर नहीं बुलाया है, सूत्रों में तो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

"निग्गंथाणवा निग्गंथिणवा" "साहुवा साहुणीवा" "भिक्खु वा भिक्खुणी वा" ऐसे लिखा है परन्तु "चैत्यं वा चैत्यानि वा" ऐसे तो किसी स्थान में भी नहीं लिखा है। यदि चैत्य शब्द का अर्थ साधु हो तो चैत्य शब्द का अर्थ स्त्री लिंग में नहीं बोला जाता है तो फिर साध्वी को क्या कहना चाहिए। श्रीमहावीर स्वामीजी के १४००० चैत्य नहीं कहे! और श्रीऋषभदेवजी महाराज के ८४००० साधु कहे हैं परन्तु ८४००० चैत्य नहीं कहे, इसी प्रकार सूत्रों में कई स्थानों पर आचार्य्यों के साथ इतने साधु हैं ऐसा तो कहा है परन्तु किसी भी स्थान में इतने चैत्य हैं ऐसे नहीं कहा, केवल आपने अपनी इच्छा से ही चैत्य शब्द का अर्थ साधु किया है, सो अत्यन्त ही मिथ्या है, जहां २ चैत्य शब्द का अर्थ साधु करते हो, सो यदि यथार्थ अर्थ के जानने वाले विद्वान् देखेंगे, तो उनको मालूम होजाएगा कि आपका किया हुआ अर्थ विभक्ति सहित वाक्ययोजना में किसी रीति से भी नहीं मिलता है और जब सर्वत्र "देवयं चेईयं" का अर्थ साधु और तीर्थंकर मानते हो तो श्रीभगवतीसूत्र में डाढ़ों के वर्णन में भगवान् ने श्रीगौतमस्वामीजी को कथन किया है कि जिनडाढ़ा देवताओं को पूजने योग्य हैं। "देवयं चेइयं पज्जु वासामि" इस स्थान में "चईयं" शब्द का क्या अर्थ करेंगे? । यदि साधु अर्थ करेंगे तो यह दृष्टान्त डाढ़ों के साथ नहीं आसक्ता, यदि "तीर्थङ्कर" ऐसा अर्थ करोगे तो डाढ़ें श्रीतीर्थङ्करदेव के तुल्य

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सेवा पूजा करने योग्य होगई, जब तीर्थङ्कर महाराज की डाढ़ा सेवा पूजा के योग्य होगई, तो फिर तीर्थङ्कर भगवान् की मूर्ति क्यों पूजने योग्य नहीं होसक्ती ?। अवश्य ही पूजने योग्य है। अतः चैत्य शब्द का अर्थ जो हमने किया है वह ही ठीक है और पूर्वाचार्यों ने यही अर्थ किया है ॥

ढूंढिया—चैत्य शब्द का अर्थ ज्ञान भी होसक्ता है, मूर्ति अथवा प्रतिमा नहीं होसक्ता ॥

मन्त्री—यह आपका कथन भी सर्व प्रकार से मिथ्या है क्योंकि सूत्रों में ज्ञान को किसी स्थान में भी चैत्य नहीं कहा है। श्रीनन्दीजी सूत्र में तथा जिस २ सूत्र में ज्ञान का वर्णन है वहां सर्वस्थानों में ज्ञान अर्थ वाचक "नाण" शब्द लिखा है। और सूत्रों में जिस २ स्थानों में ज्ञानि मुनि महाराज का वर्णन है वहां पर "मइनाणी" "सुअनाणी" "ओहिनाणी" "मनपज्जवनाणी" "केवल नाणी" ऐसे तो कहा है। परन्तु "मइचैत्यी सुअचैत्यी" आदि २ किसी स्थान में भी नहीं कहा है, और जिस २ स्थान में भगवन्त को और साधु को "अवधिज्ञान, मनःपर्य्यवज्ञान, परम अवधिज्ञान," और "केवलज्ञान" उत्पन्न होने का वर्णन है वहां पर ज्ञान उत्पन्न हुआ, ऐसे तो कहा है, परन्तु "अवधिचैत्य" "मनः पर्य्यवचैत्य" और "केवलचैत्य" आदि ऐसा किसी स्थान में

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नहीं कहा है। और सम्यक्दृष्टि श्रावक आदि को "जाति-स्मरण ज्ञान" और "अवधि ज्ञान" उत्पन्न हुआ, ऐसे तो कहा है परन्तु "अवधि चैत्य" वा "जातिस्मरणचैत्य" उत्पन्न हुआ,ऐसे किसी स्थान में भी नहीं कहा है। इससे सिद्ध होता है कि सूत्रों में किसी स्थान में भी ज्ञान को चैत्य नहीं कहा है। इसलिये आपका कहना प्रत्येक प्रकार से मिथ्या है॥ और सुनिए चमरेन्द्र के वर्णनमें "अरिहन्तेवा,चेइआइयेवा" और "अणगारिएवा" ऐसा पाठ लिखा हुआ है, इस पाठ से भी स्पष्ट "चेइयं" शब्द का अर्थ "प्रतिमा" ही सिद्ध होता है, क्योंकि इस पाठ में साधु भी पृथक् और अर्हन्त भी पृथक् लिखे हुए हैं। और "चेइयं" अथवा श्रीजिनप्रतिमा का भी पृथक् वर्णन है, इसलिये इस स्थान में और कोई अर्थ नहीं होसक्ता, आप जो तीनों ही स्थान में केवल "अर्हन्त" ऐसा अर्थ करते हैं सो यह आपकी मूर्खता है आप स्वयं ही विचार लेवें क्योंकि कोई साधारण मनुष्य भी शब्दार्थ के जानने वाला कदापि नहीं कहसक्ता है, कि तीनों स्थानों में केवल अर्हन्त ही अर्थ हो सक्ता है॥

ढूंढिया—यदि उक्त वृतान्त में चैत्य शब्द से जिनप्रतिमा का अभिप्राय होवे और चमरेन्द्र प्रतिमा का शरण लेकर सुधर्म्म देवलोक तक गया होवे तो फिर नीचे के लोग और द्वीपों में शाश्वती जिनप्रतिमा थीं और ऊर्ध्वलोक में मेरुपर्वत

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऊपर और सुधर्म्मदेवलोक में और सिद्धायतन में समीप ही शाश्वती जिनप्रतिमा थी तो जिस समय शक्रेन्द्र ने चमरेन्द्र पर वज्रपात किया था उस समय वह जिनप्रतिमा की शरण क्यों न गया ? और श्रीमहावीर स्वामी की शरण क्यों गया ?

मन्त्री—यह भी आपकी चालाकी केवल भोले लोगों को ही धोखा देने के लिये है, परन्तु दत्तचित्त होकर सुनिए। इसका उत्तर प्रत्यक्ष है कि जिस किसी की जो शरण लेकर जाता है और फिर जब वह आता है तो उसी के समीप ही आता है। चमरेन्द्र श्रीमहावीर स्वामी की शरण लेकर गया था, जब शक्रेन्द्र ने इस पर वज्रपात किया तो चमरेन्द्र श्रीमहावीरजी की शरण ही आया, यदि आपका ऐसा ख्याल होवे कि मार्ग में समीप ही शाश्वती प्रतिमा और सिद्धायतन थे, चमरेन्द्र इनके समीप क्यों न गया ? सो यह ख्याल भी केवल आपकी अज्ञानता ही है, क्या मार्ग में श्रीसिमन्दरस्वामी और दूसरे विहरमान जिन विद्यमान नहीं थे ? उनकी शरण चमरेन्द्र क्यों न गया ? फिर तो आपकी मति के अनुसार विहरमान तीर्थङ्कर शरण लेने के योग्य न हुए, वाह जी ! वाह ! आपकी ऐसी बुद्धि पर शोक है ॥

ढूंढिया—वन आदि को "चैत्य" कहा जासक्ता है ॥

मन्त्री—जिस वन में यक्ष आदि का मन्दिर होता है उस वन को सूत्रों में "चैत्य" कहा है, दूसरे किसी वन को भी सूत्रों में "चैत्य" नहीं कहा है इसलिये आपका यह कथन भी मिथ्या है

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ढूंढिया—यक्ष को भी चैत्य कहा है।

मन्त्री—आपका यह कहना भी असत्य है, क्योंकि जैन-सूत्रों में किसी भी स्थान में यक्ष को "चैत्य" नहीं कहा है। यदि कहा है तो आप सूत्रपाठ दिखलावें, ऐसे ही बातें बनाने से नहीं माना जाता और जो आप लोग मूर्ति नहीं मानते हैं तो आप लोगों को कोई पुस्तक न पढ़ना चाहिये क्योंकि पुस्तक भी केवल ज्ञानस्थापना है। ज्ञान एक अरूपी पदार्थ आत्मा का ज्ञान गुण है, (क) (ख) (ग) अथवा (आ) (ब) (प) (त) आदि २ अक्षरों में स्थापना बनाई हुई है। इसलिए उनको भी जैनशास्त्रों में अक्षर श्रुतज्ञान माना है। इस वार्ता को आपलोग भी मानते हैं,। अब तनक ध्यान दीजिए कि जब पत्र और मसी जड़पदार्थों को अक्षरज्ञान माना, तो भगवान् की मूर्तिको भगवान् क्यों न मानाजाए? और यथा सन्मान और पूजाभक्ति शास्त्रकी की जाती है वैसे ही भगवान् की मूर्तिकी पूजा क्यों नहीं करते हो?॥

ढूंढिया—अक्षरको हम श्रुतज्ञान नहीं मानते हैं प्रत्युत उससे जो ज्ञान उत्पन्न होताहै उसका नाम श्रुतज्ञान है॥

मंत्री—हमारा भी तो यह कहना है कि हम भी मूर्तिको भगवान् नहीं मानते हैं प्रत्युत उससे जिस पदार्थका ज्ञान होता है, उसको ही हम भगवान् मानते हैं, अब आपको ध्यान देना चाहिए कि आप लोग शास्त्र को पढ़ने वाले मूर्ति पूजासे कैसे दूर हो सक्ते हैं। क्योंकि समस्त शास्त्र भी जड़ स्वरूप हैं और ज्ञान की स्थापना हैं। यदि प्रत्येक भाषा में अक्षरों

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की बनावट पृथक् २ भी क्यों न हो, परन्तु अक्षरों के आकार को तो फिर भी ज्ञान का कारण स्वीकार करना ही पड़ेगा। चाहे उर्दू नागरी अरबी आदि किसी भाषा के क्यों न हों, ऐसे ही मूर्तियां भी पृथक् २ श्रीऋषभदेव जी स्वामी और श्रीमहावीर जी स्वामी की हुई हैं। इन मूर्तियों को भी जिनकी यह मूर्तियां हैं, उनके ज्ञान का कारण स्वीकार करना ही पड़ेगा, क्योंकि हमने ईश्वर प्रतिमा नहीं देखी है इसलिये उसकी मूर्ति के विना ईश्वर प्रतिमा के स्वरूप का बोध हम को कदाचित् नहीं होसक्ता, जो लोग मूर्ति को नहीं मानते हैं वे लोग ईश्वर परमात्मा का ध्यान कदाचित् नहीं करसक्ते ॥

ढूंढिया—हम लोग अपने हृदय में परमात्मा की मूर्ति की स्थापना कर लेते हैं ॥

मन्त्री—वाह जी ! वाह ! आपकी कैसी समझ है, अरेभाई ! जब आप हृदय में कल्पना कर लेते हैं तो बाहिर क्यों नहीं करते ? यह तो केवल कहने की बातें हैं कि हम मूर्तिके विना ध्यान कर सक्ते हैं। मूर्ति बड़ा भारी प्रभाव रखती है, यदि मूर्ति कुछ प्रभाव नहीं रखती, तो आप लोगों को परमात्मा की मूर्ति देखकर द्वेषभाव क्यों प्रगट होता है, इससे सिद्ध होता है, मूर्ति बड़ा भारी प्रभाव रखती है ॥

द्वेषियों को द्वेषभाव और रागियों को राग आता है। यदि आपको द्वेष आता है तो हमको आनन्द आता है जब परमात्मा की मूर्ति हम को इस संसार में आनन्द देती है तो परलोक में भी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हम को आनन्ददायक होगी। आप इस संसार में परमात्मा की मूर्ति को देखकर अप्रसन्न होते हैं तो परलोक में भी अप्रसन्न रहोगे। जो लोग इस संसार में धर्म्म करने से प्रसन्न हैं वे परलोक में भी अवश्य प्रसन्न और सुखी होंगे और जो लोग इस जगत में धर्म्म करने से रुष्ट रहते हैं वे परलोक में भी अवश्य दुःखी होंगे, इससे सिद्ध होता है कि परमात्मा की मूर्ति दोनों लोक में लाभदायक है, और न मानने वालों को दुःखदायक है ॥

ढूंढिया—फिर तो भगवान् वीतराग सिद्ध न हुए जो कि सुख और दुःख देते हैं ॥

मन्त्री—परमात्मा की मूर्ति तो एक प्रकार का साधन है, वस्तुतः तारने वाली तो हमारी आन्तरिक भावना ही है। जो मनुष्य परमात्मा की मूर्ति को देखकर परमात्माभाव लाएगा, और इनके इतिहास पर ध्यान करेगा, और शुभ भावना को विचारेगा तो वह अवश्य ही अच्छा फल पाएगा, और जो परमात्मा की मूर्ति देखकर, द्वेष करेगा और अशुभ भावना करेगा वह अवश्य ही बुरा फल पाएगा ॥

ढूंढिया—जड़ वस्तु से अच्छे और बुरे भाव किस तरह आसक्ते हैं आप दृष्टान्त के साथ समझाएं ॥

मन्त्री—एक सुन्दरी स्त्री वन में अकेली जारही थी मार्ग में विचारी को सर्प ने काटा सर्प अति विषयुक्त था। इसलिये तत्क्षण विचारी देहान्त होगई। अकस्मात् इसी मार्ग से एक पथिक जारहा था, उसने मृत स्त्री के शरीर को

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देखकर अपने हृदय में विचारा, कि अहो! यह कैसी सुन्दरी युवति है, परन्तु खेद यह है कि यह मृत हुई २ है, यदि जीवित होती तो मैं अवश्य इससे अपनी इच्छा पूरी करता। नम्रता से वा लोभ से वा मीठी २ बातों से मान जाती तो अच्छा होता, नहीं तो मैं हठ से भी इसको न छोड़ता, चाहे मुझे कारागार जाना ही पड़ता, ऐसा दुष्टभाव हृदय में रखता हुआ आगे चला गया। थोड़ी देर पीछे फिर इसी मार्ग से एक और पथिक का आगमन हुआ, वह कोई बड़ा धर्म्मात्मा था और सदाचारी था, इसने जब उस मृत स्त्री को देखा तो वह बड़े शोक समुद्र में डूब गया, और हृदय में विचार करने लगा कि यह संसार असार है, इस संसार में जन्म जरा मरण रोग शोक आदि प्राणियों को नित्य ही दुःख दे रहे हैं। इन सर्व दुःखों में से मृत्यु का दुःख अधिक है, धन्य योगीश्वर महात्मा पुरुष हैं जिन्होंने इस संसार को असार जानकर त्याग दिया। यह तो कोई बड़ी सदाचारिणी अच्छे भावों वाली मधुर-भाषिणी सत्कुलोत्पन्ना स्त्री प्रतीत होती है तथा प्रतीत होता है कि विचारी किसी आवश्यक कार्य्य के लिए जारही थी॥ हाय! कर्म्म कैसे बलवान् हैं, कि यह विचारी अकेली इस भयानक निर्जन बन में सर्प के काटने से मरगई। यदि मैं उस समय इस विचारी के समीप होता तो अवश्य इस सदाचारिणी को बचाने के लिये हृदय से यत्न करता, सम्भावना थी कि यह विचारी मृत्यु के वश न होती और अपना नित्यधर्म्म कर्म्म करके जन्म सफल करती। देखो कैसी मोहिनी मूर्ति है यह तो कोई साक्षात् देवी है, ऐसा विचार करके वह मनुष्य आगे चला गया॥ अब ध्यान करना चाहिये कि दोनों मनुष्यों ने

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इस स्त्री के मृत तथा जड़ शरीर को देखकर पृथक् २ भावना के वश से पाप पुण्य का बन्धन किया। इस दृष्टान्त से सिद्ध होता है कि पाप पुण्यका फल केवल अपनी आन्तरिक भावना से ही मिलता है। भगवान् वीतराग तो न किसी को सुखी और न किसी को दुःखी करते हैं और न किसी को पुण्य और न किसी को पाप देते हैं। भगवान् तो वीतराग ही हैं। किसी वस्तु को देखकर जो भाव उत्पन्न होता है, वह वस्तु तो उस भाव के उत्पन्न होने में एक निमित्त कारण है ऐसे ही भगवान् की मूर्ति भी निमित्त कारण है, वस्तुतः तारने वाली तो हमारी आन्तरिक भावना ही है परन्तु निमित्त के विना भावना नहीं आसक्ती, इसलिये भगवान् वीतराग की मूर्ति भी बड़ा भारी निमित्त कारण है जिस किसी को जैसा निमित्त प्राप्त होता है उसको वैसे ही भाव प्रगट होजाते हैं॥

मूर्तिपूजक तो शुभभाव आने से पुण्य उत्पन्न कर लेते हैं और मूर्तिनिन्दक भगवान वीतराग की मूर्ति को देखकर भ्रकुटी को चढ़ाकर दुष्टभाव हृदय में लाने से पाप उत्पन्न कर लेते हैं अब आप तनक सांसारिक व्यापार की ओर भी दृष्टि करें, कि वह भी मूर्ति विना कदाचित् नहीं चलसक्ता॥

ढूंढिया—यह बात भी दृष्टान्त के साथ समझाएं, क्योंकि दृष्टान्त से बात हृदय में आरूढ़ होजाती है॥

मन्त्री—जब किसी मकान को नीलाम या कुड़क कराना हो या किसी गृह आदि पर दावा करना हो तो उसका चित्र बनाकर न्यायालय में देना पड़ता है, क्या न्यायालय में वृत्तान्त

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुनाकर चित्र के दिये विना कार्य्य नहीं चलसक्ता ? मान्यवर ! न्यायालय में यदि कहें कि चित्र की आवश्यकता नहीं, हम अपने मुख से सब वृत्तान्त समझा देते हैं, तो शीघ्र ही मुख पर चपेट लगती है, और धक्के भी मिलते हैं कि जाओ चित्र बनाकर लाओ, चित्र के विना कार्य्य का होना असम्भव है। और जब किसी को लम्बी यात्रा करनी हो तो प्रायः प्रथम ही रेलवे चित्र देख लिया जाता है कि अमुक मार्ग (लैन) कहां से पृथक् होता है अमुक नगर किस तरफ है विना चित्र के कुछ भी समझ में नहीं आता। और स्कूलों में भी लड़के चित्र के आश्रय से नगरों का वृत्तान्त समझते हैं। आपको शुद्धचित्त होकर विचार करना चाहिये कि जब सांसारिक काम भी मूर्ति के विना नहीं चलसक्ते तो उस परोक्ष परमात्मा का ध्यान मूर्त्ति के विना कैसे होसक्ता है। और बड़े शोक की बात यह है कि आप लोग अपने गुरु की समाधि को जिसमें कि केवल शिला और चूनें के विना और कुछ भी नहीं है, मस्तक झुकाते हैं और वहां पर प्रसाद बांटते हैं, किन्तु केवल परमात्मा वीतराग की मूर्ति के सन्मुख ही सिर झुकाना आपको व्यर्थ प्रतीत होता है, समाधि आदि का सत्कार तो किया जाता है परन्तु किस की शक्ति है जो वहां पर जूता तो लेजाए ॥

ढूंढिया—क्यों साहिब ! हम गुरु की समाधि पर जूता कैसे जानेदें। और इसका अपमान हम लोग कैसे कर सक्ते हैं।

मन्त्री—वीतराग परमात्माकी मूर्ति जो कि जगद्गुरुकी मूर्ति

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है, क्या इसी से द्वेष है ? आप लोग वीतराग परमात्मा की मूर्ति का सन्मान क्यों नहीं करते, और इसे नमस्कार क्यों नहीं करते और निन्दा क्यों करते हो ? यह तो केवल आपकी मूर्खता है मालूम होता है कि आपके गुरुओं का संयम भी नहीं है, क्योंकि उन में मान पाया जाता है और जिस स्थान में मान होता है वहां संयम नहीं रहसक्ता ॥

ढूंढिया—हमारे गुरुओं में मान कैसे सिद्ध होता है ।

मन्त्री—आपके गुरु अपने चित्र का सत्कार तो कराते हैं अपने चित्र का असन्मान कदापि सहार नहीं सक्ते, और आप लोग अपने गुरुओं की * समाधि की पूजा करते हैं इनके विद्यमान शिष्य ऐसी बुरी बात से आपको क्यों नहीं रोकते ?। और समाधियां बनानेके समय आप लोगों को क्यों न रोक दिया ? कि समाधि इत्यादि जड़ वस्तुओं को मत बनाओ ॥

वीतराग परमात्मा की मूर्ति के सन्मुख सिर झुकाने से तो निषेध करते हैं, प्रत्युत शपथ कराते हैं कि मन्दिरों में मत जाओ तो यह मान और ईर्षा नहीं तो और क्या है ? अब अधिक कहांतक कहा जाए आप को चाहिये कि

---

* रायकोट और जगराओं में रूपचन्द की और फरीदकोट में जीवणमल की और अम्बाले में लालचन्दजी की समाधियां विद्यमान हैं। वहां पर ढूंढिये भाई जाकर लड्डू बांटते हैं, और मस्तक झुकाते हैं । पाठकगणो ! यह मूर्तिपूजा नहीं तो और क्या है ? जिस साहिब को उक्त बात में संशय हो स्वयं देखकर निश्चयकर सकता है॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पक्षपात छोड़ो और विद्या ग्रहण करो फिर आपको अच्छी तरह से ज्ञान होजाएगा कि मूर्तिपूजा के करने से कोई प्राणी भी शेष नहीं है। जो लोग कहते हैं कि हम मूर्तिपूजा को नहीं मानते वे लोग केवल मिथ्या बातें बनाने वाले हैं॥

ढूंढिया भाई निरुत्तर होकर शान्त होगया। तदनन्तर मन्त्रीजी मौलवी साहिब की तरफ ध्यान देने लगे॥

मन्त्री—क्यों जी मौलवी साहिब! आप भी मूर्ति को नहीं मानते?

मौलवी—अपराध क्षमा कीजिये, आपको कुछ भी समझ नहीं, ऐसे ही मन्त्री पदवी मिल गई, आप इस बात को नहीं जानते कि हमारा मत मूर्तिपूजक नहीं है। यह बात तो प्रत्यक्ष स्पष्ट है कि हम लोग हिन्दुजातिवत् मूर्तिपूजा नहीं करते। क्या पत्थर भी कभी खुदा होसक्ता है? और कोई बुद्धिमान जड़ में परमात्मा की स्थापना कर सक्ता है? जो आप हमारे से ऐसी बातें पूछते हैं॥

मन्त्री—मौलवी साहिब! इतना न घबराइये, तनक धैर्य से सुनिए, हमारे पास यह पत्र का खण्ड है इस पर खुदा लिखा है क्या आप इस पत्रखण्ड पर अपना पाद स्थापित कर सक्ते हैं॥

मौलवी—रक्तमयआंखे करके कहने लगे, बड़े ही शोक की बात है कि आप ऐसे निर्भय होकर बुद्धि के प्रतिकूल कठोरं अक्षर क्यों कहते हैं। क्या आपको परमात्मा का भय नहीं है, और मृत्युका भय नहीं है? आप मन्त्री पद को ग्रहण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करके यह अभिमान हृदय कदापि न करिये कि प्रत्येक स्थान में हमारा आधिपत्य चल जाएगा, धर्म्म के लिए मरजाना कोई बड़ी बात नहीं ॥

मन्त्री—वाह जी ! वाह ! शोक है । मौलवी साहिब तनक ध्यान तो दो,कि मैंने पूर्व क्या कहा और अब क्या कह रहा हूं । यद्यपि मैंने आपको बुरा भला नहीं कहा, केवल यही पूछा है कि क्या आप इस पत्रखण्ड पर अपना पाद स्थापित करसक्ते हो ? जिस पर आप कपड़ों से बाहर होगये और बहुत क्रोध में आगए । अब तो आपही अपने मुख से जड़ वस्तु का सन्मान करने लगगए,यह क्या ?

मौलवी—हमने कब जड़ मूर्तिका पूजन माना है? ॥

मन्त्री—क्या पत्र और मसी जड़ वस्तु नहीं है ?

मौलवी—हां हां ! जड़ नहीं तो और क्या हैं ।

मन्त्री--मौलवी जी यदि ऐसा ही है तो पत्र और मसी आपस में एकत्रित होकर खुदा लिखा जाता है इस में पत्र और मसी के बिना और कोई तीसरी वस्तु नहीं है न तो इस में खुदा का हाथ है और न हि इस में खुदा का पाद है तो फिर आप को क्रोध कैसे आया ? ॥

मौलवी--हां जी हां ! बस इस में परमात्मा का नाम प्रत्यक्ष लिखा हुआ है इस पर हम पाद कैसे स्थापित कर सक्ते हैं ॥

मन्त्री--जब आप पत्र और मसी के द्वारा लिखे हुए परमात्मा के नाम पर अपने प्राणों को बलिदान करने लगे हैं तो परमात्मा की मूर्ति पर क्यों बलिदान नहीं होते । और आप कैसे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कह सक्ते हो कि हम जड़ वस्तु को नहीं मानते। अच्छा मौलवी साहिब एक बात आप और बतलाएं कि आप लोग माला के मणके गिनते हो कि नहीं ?।

मौलवी—हां जी जरूर।

मन्त्री—माला के मणकों की जो विशेष संख्या नियत है इसमें जरूर कोइ कारण है जो यही प्रतीत होता है कि अवश्य किसी न किसी बात की स्थापना है। कई लोग कहते हैं कि खुदा के नाम एक सौ एक हैं—इसलिये माला के मणके १०१ रक्खे गए हैं। अभिप्राय यह है कि कोइ न कोइ कारण विशेष संख्या नियत का अवश्य है। बस यह जो नियत कर लेना है इसी का नाम स्थापना है। बस जिसने स्थापना स्वीकार करली उसने मूर्त्ति अवश्य मानली, केवल आकार का भेद है। कोई किसी मूर्त्ति को मानता है परन्तु मूर्त्ति के विना निर्वाह किसी का भी नहीं हो सक्ता। इसलिए आप भी मूर्त्ति से पृथक् कदापि नहिं हो सक्ते। यह तो केवल आपकी अज्ञानता है। जब आप लकड़ी के या पत्थर के टुकड़ों में परमात्मा के नामकी स्थापना मानते हो तो इस नामवाले की स्थापना क्यों नहीं मानते।

मौलवी—जबकि परमात्मा का आकार ही नहीं है तो इसकी मूर्त्ति कैसे बन सक्ती है।

मन्त्री—कुरानशरीफ में लिखा है कि मैंने पुरुष को अपने आकार पर उत्पन्न किया। अथवा जिसने पुरुष के आकार की पूजा की उसने परमात्मा के आकार की ही पूजा की। और इससे प्रत्यक्ष सिद्ध है कि परमात्मा का आकार अवश्य है। कुरान की शिक्षा यह है कि खुदा फरिस्तों की कतार के साथ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विशाल स्थान में आएगा और इसके सिंहासन को आठ फरिस्तों ने उठाया हुआ होगा। भला यदि परमात्मा मूर्त्तिमान् नहीं है तो इस के सिंहासन को आठ देवताओं के उठाने का क्या अर्थ है। और मूर्त्तिमान् आकार के बिना हो भी नहीं सक्ता। और भी आप लोगों का मानना है कि परमात्मा एकादश अर्श में सिंहासन पर बैठा हुआ है। अच्छा मौलवी जी तनक यह तो बतलादें क्या आपने कभी हज भी किया है?।

मौलवी—हज से तो स्वर्ग मिलता है, फिर काबा शरीफ़ का हज क्यों न करना चाहिए। मैंने तो दो वार किया है॥

मन्त्री—क्योंजी वहां पर क्या वस्तु है इसका तनक वर्णन करो।

मौलवी—हज मक्काशरीफ में होता है। वहां पर एक कृष्ण पाषाण है, जिसका चुम्बन किया जाता है और काबा के कोट की प्रदक्षिणा करते हैं।

मन्त्री—क्या यह मूर्त्तिपूजा नहीं है?।

मौलवी—कदाचित् नहीं।

मन्त्री—पाषाण का चुम्बन करना और प्रदक्षिणा करना और वहां जाकर सिर झुकाना मूर्त्तिपूजा ही है॥ मौलवी साहिब, आप जो खुदा के घरका इस कदर सत्कार करते हो तो परमात्मा की प्रतिमा का सत्कार क्यों नहीं करते। और इसकी मूर्त्ति क्यों नहीं मानते। भला मौलवी जी यह जो ताज़िये निकाले जाते हैं यह बुत नहीं तो और क्या है?। और जो आप काबा की ओर मुख करके निमाज़ पढ़ते हो, यह भी एक प्रकार की मूर्त्तिपूजा ही है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मौलवी—काबा तो खुदा का घर है इसलिए हम उधर मुख करते हैं।

मन्त्री—क्या शेष स्थान ईश्वर से खाली हैं? तो आपका यह कथन कि परमात्मा सब स्थान में है, उड़ जाएगा।

मौलवी—काबा की तरफ हम इसलिए मुख करते हैं कि काबा खुदा का घर है—इस तरफ मुख करने से दिल प्रसन्न होता है और स्थिर रहता है।

मन्त्री—काबा तो एक परोक्ष वस्तु है, जो कि दूर से दृष्टि गोचर नहीं होता, ईश्वर का मूर्त्ति को तो सन्मुख होने से और दृष्टि गोचर होने से ध्यान अधिक लगेगा, और स्थिर रहेगा। यद्यपि आप लोक जो नमाज़ पढ़ते हो यदि किसी ऐसे स्थान पर नमाज़ पढ़ा जाए कि जिस स्थान पर पुरुषों का आगे से चलने का संभव हो, तो आप लोक मध्य में लोटा अथवा वस्त्र वा और कोई वस्तु रखलेते हैं ताकि नमाज़ में विघ्न न पड़ जाए, यह जो वस्त्र अथवा लोटा आदि स्थापना वस्तु रक्खी जाती है यह भी एक प्रकार की खुदा के लिए कैद है, मानो सम्भावना की हुई वस्तु है। मौलवी साहिब! आप एक बड़ा दृढ़ प्रमाण और सुनिए, मूअल्लिफ़ किताब दिलबस्तान मुज़ाहिब अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि मुहम्मद साहिब ज़ोहरा अर्थात् शुक्र की पूजा करते थे। मालूम होता है कि इस कारण से ही शुक्रवार को यवन पुरुष पवित्र जानकर प्रार्थना का दिन समझते हैं। और मुहम्मद साहिब का पिता मूर्त्ति की पूजा किया करता था। मौलवी साहिब! आपका कोई मततो ताजीया की पूजा करता है और कोई कुरान की पूजा और कोई कबर की

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पूजा करता है। ऐ मौलवी साहिब! आप तनक पक्षपात को छोड़ कर ध्यान करें तो आप लोगों का भी मूर्त्तिपूजा के विना निर्वाह कदाचित् नहीं होगा। मोलवी साहिब लज्जित होकर चुप्प होगए। मन्त्री जी फिर सिक्ख साहिब की ओर ध्यान देकर कहने लगे कि ऐ भाई साहिब! आप मूर्त्तिपूजा को क्यों नहीं मानते?।

सिक्ख—नहीं जी हम जड़ मूर्त्ति को किसी प्रकार भी नहीं मानते।

मन्त्री—क्यों जी भला आप गुरुनानक जी और गुरु गोविन्दसिंहजी की मूर्त्तिओं को देखकर प्रसन्न होते हैं वा नहीं?।

सिक्ख—भला साहिब, गुरु की मूर्त्ति देखकर पुरुष रुष्ठ कैसे होसक्ता है। हम तो प्रसन्न होते हैं, क्योंकि इन्हों ने धर्म्म की रक्षा के लिए प्राणों की भी परवाह नहीं की है। और ऐसे ही गुरु नानक जी साहिब और गुरु गोविन्दसिंह जी जिनको कि भविष्य पुराण में भी अवतारों में माना है। भला इनके चित्र देख कर हम रुष्ठ हो सक्ते हैं?। और यदि रुष्ठ होते हों तो द्रव्य खर्च करके इनके चित्र अपने मकानों में क्यों रक्खें?। और चित्रकारों को रुपैया देकर इनके चित्र दीवारों पर क्यों बनवाएं?।

मन्त्री—क्यों जी आप लोक अपने गुरुओं की मूर्त्तिओं के आगे शिर झुकाते हो वा नहीं। और उनका सन्मान करते हो वा नहीं?।

सिक्ख—हां जी जरूर।

मन्त्री—मूर्त्ति के सन्मुख शिर झुकाना और उसका सन्मान करना क्या मूर्त्तिपूजा नहीं है?। मूर्त्ति के सन्मुख शिर झुकाना और उसका सन्मान करना मूर्त्ति पूजा ही है। कोई किसी प्रकार करता है और कोई किसी प्रकार से करता है। कोई किसी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आकार में मानता है और कोई किसी आकार में मानता है। परन्तु मूर्त्तिपूजा से कोई छुट नहीं सक्ता। आप लोक गुरुग्रन्थ-साहिब को तो उत्तम २ वस्त्रों में लपेट कर चारपाई वा चौंकी पर रखते हो और इसकी समाप्ति होने पर भोग पाते हो और इसके आगे धूपादि जला कर घण्टे बजाते हो और भी कई प्रकार के राग और शब्दादि इसके सन्मुख बोलते हो और भी कई प्रकार से इसकी पूजा करते हो, तो फिर आप मूर्त्तिपूजा से कैसे छूट सक्ते हैं, क्योंकि यदि मूर्ति जड़ है तो ग्रन्थ साहिब भी कोई चैतन्य वस्तु नहीं है, वह भी तो केवल पत्र और स्याही मिलकर ही बना है कि जिसके नीचे रखने वाली चार-पाई को भी आप लोक मंजा साहिब के नाम से कहते हो, अब आपको तनक ध्यान देना चाहिए, कि आप जड़ की किस प्रकार पूजा करते हो।

भ्रातृगण! जब कि इसके साथ स्पर्श करने वाली वस्तु की पदवी इस प्रकार अधिक होजाती है तो परमात्मा की मूर्त्ति की पदवी सबसे अधिक क्यों न मानी जाए और इसकी पूजा क्यों न की जाए?।

सिक्ख—महोदय! वह गुरुओं की वाणी है इसलिये हम इसका सन्मान और पूजा करते हैं॥

मन्त्री—भाई जी! जैसे आप लोग गुरुओं की वाणी या गुरु साहिब का सन्मान व पूजा करते हैं। इसी तरह हम भी परमात्मा की मूर्त्ति का सन्मान और पूजा करते हैं। और जब कि आप गुरुओं और इनकी वाणी की प्रशंसा करते हैं तो फिर आप को परमात्मा की मूर्त्ति की भी जो कि गुरुओं की वाणी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

से भी अधिक पवित्र है, पूजा और सन्मान करना चाहिए, परन्तु आप साहिब उक्त वृत्तान्त से जड़ वस्तु की पूजा करते हुए भी मूर्त्तिपूजा पर आक्षेप करते हैं, सो अत्यन्त अयोग्य और समझ के प्रतिकूल है। अन्त में सिक्ख भाई तो निरुत्तर होकर चुप्प होगए, परन्तु एक आर्य्य साहिब मूछों पर हाथ फेर कर तत्क्षण आगे बढ़े और इनके साथ मंत्री जी के निम्न लिखे हुए प्रश्नोत्तर हुए।

मन्त्री—क्यों महाशय जी भला आप मूर्त्तिपूजा को मानते हो या नहीं।

आर्य्य—नहीं, श्रीमन्! हम तो मूर्त्ति को कदापि नहीं मानते, क्योंकि मूर्त्ति तो जड़ है और जड़ से कोई लाभ भी प्राप्त नहीं हो सक्ता है।

मन्त्री—महाशय जी! यह तो केवल कहने की मिथ्या वार्ता है कि हम मूर्त्ति को नहीं मानते हैं, यदि ईर्षाभाव को छोड़ कर ध्यान किया जाए आप तो क्या कोई मत भी मूर्त्ति-पूजा से किसी प्रकार से छूट नहीं सक्ता है। महाशय जी! मुझे इस बात में सन्देह है कि आप भी ईसाई साहिबान की तरह तो नहीं कहते, जिनका यह कथन है कि हमलोग मूर्त्तिपूजक नहीं हैं वस्तुतः तो इनका एक रोमन कैथलिक मत भली प्रकार मूर्त्ति पूजक है, क्योंकि वह हजरत मसीह और मरिअमके चित्रों को गिर्जाघर में रख कर फल फूलादि चढ़ाते और उनकी पूजा करते हैं और रूस के तो सर्व मतानुयायी मूर्त्तिपूजक हैं। तदनन्तर मुअल्लिफ़ किताब दिलबस्तान मजाहिब अपने पुस्तक में लिखते हैं कि हजरत ईसामसीह सूर्य्य की पूजा करते थे और

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रविवार के दिन सूर्य्य की पूजा करते हैं। इसी वास्ते ईसाइ लोग आदित्यवार के दिनको पूजा और सन्मान का दिन मानते हैं।

आर्य्य—नहीं श्रीमन् ! नहीं, भला हम स्वामी दयानन्द के अनुयायी होकर जड़की पूजा कर सक्ते हैं ?। तीनों काल में अर्थात् भूत भविष्यत वर्त्तमान काल में यह वार्ता असम्भव है ॥

मन्त्री—महाशय जी ! मूर्त्तिपूजा जड़पूजा में मिश्रित नहीं है क्योंकि मूर्त्तिपूजा जड़की पूजा नहीं हो सक्ती। प्रत्युत वह तो चेतन की पूजा होती है।

आर्य्य—श्रीमन् ! यदि ऐसे हो तो आप कोई दृष्टान्त देकर भली प्रकार समझा देवें।

मन्त्री—लो जी तनक सावधान होकर सुनो, कि यदि कोई आर्य्य समाजी किसी परम विद्वान् संन्यासी की प्रत्येक प्रकार से सेवा करता है और जब संन्यासी महाराज जी समस्त दिन ज्ञान ध्यान के कारण थक जाते हैं, तो समाजी उनकी टांगों और शरीर आदि को अत्यन्त दबाता है, महाशय जी ! अब आप बतलाइए कि उस आर्य्य समाजी को इस तरह दिन रात्री परम भक्ति और सेवा से कुच्छ फल प्राप्त होगा या नहीं ?।

आर्य्य—अजी क्यों नहीं, अवश्य प्राप्त होगा, क्योंकि यदि ऐसे महात्मा की सेवा करने से भी फल प्राप्त न होगा, तो और किसकी सेवा से फल प्राप्त होगा।

मन्त्री—वाह ! जी वाह ! यह सेवा तो जड़ शरीर की थी और जड़की सेवा निष्फल होती है, तो फिर आप इस सेवा का फल कैसे मानते हो ?

आर्य्य—श्रीमन् ! विद्वान् का शरीर जड़ नहीं हो सक्ता, क्योंकि इसमें तो जीवात्मा विद्यमान है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मन्त्री—सत्य है, शरीर में जीवात्मा के होने से चेतन ही की सेवा मानी जाती है परन्तु सेवा तो वस्तुतः जड़शरीर की ही की जाती है, जीवात्मा की नहीं । और इसी तरह मूर्त्ति-पूजा में भी जानना चाहिए, अथवा जैसे विद्वान् के शरीर में जीवात्मा माना जाता है, वैसे ही मूर्त्ति में भी आपके मत के अनुसार ईश्वर माना जाता है क्योंकि ईश्वर सर्व व्यापक है ऐसा आप कहते हैं, इसवास्ते मूर्त्ति में भी ईश्वर का होना अवश्य है,इससे सिद्ध हुआ कि मूर्त्तिपूजा जड़पूजा नहीं है, क्यों-कि मूर्त्तिपूजा करते समय प्रत्येक मतके भक्त यही प्रार्थना करते हैं कि हे सच्चिदानन्द ! ज्योतिः स्वरूप ! हे ईश्वर ! हे परमात्मन् ! हे वीतराग ! हे देवेश ! हे परमब्रह्म भगवन् ! हम को अपनी कृपा करके इस संसार सागर से पार करो । और ऐसे तो कोई भी नहीं कहता है कि हे जड़ पत्थर ! वा अयि मूर्त्ते ! तूं हमको इस संसार समुद्र से पार कर अथवा हमारा कल्याण कर । इससे स्पष्ट है कि पूजा मूर्त्ति वाले की होती है और मूर्त्ति से तो केवल इस मूर्त्ति वाले का अनुभव होता है, वा ऐसे कह सक्ते हैं कि जैसे विद्वान् की सेवा में विद्वान् का शरीर ही एक कारण होता है, वैसे ही मूर्त्ति वाले की सेवा वा पूजा में मूर्त्ति भी कारण होती है । और जैसा कि शरीर के विना केवल अकेले जीवात्मा की सेवा असम्भव है क्योंकि जीवात्मा निराकार वस्तु है, वैसे ही ईश्वर परमात्मा की सेवा वा पूजा भी जो कि जीवात्मा से बहुत सूक्ष्म है मूर्त्ति के विना कदाचित् नहीं हो सक्ती है ।

आर्य्य—भला सच्चिदानन्द की सेवा में जड़को कारण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बनाने की क्या आवश्यकता है, क्या वेदकी श्रुतिओं से मूर्त्ति के बिना ईश्वर की प्रशंसा और पूजा नहीं हो सक्ती है ?।

मन्त्री—वाह ! साहिब ! क्या वेदकी श्रुतिएं चैतन्य हैं ? वह भी तो जड़ अक्षरों का समूह ही है । इस प्रकार से ईश्वरपूजा का कारण जड़ ही सिद्ध हुआ ।

आर्य्य—श्रीमन् ! हम उन जड़ अक्षरों से ईश्वर ही का जाप करते हैं ।

मन्त्री—महाशय जी ! हम भी तो मूर्त्ति द्वारा ईश्वर के स्वरूप को ही स्मरण करते हैं । अथवा जैसे आपनें जड़ अक्षरों में ईश्वर का जपन किया ऐसे ही हमने भी ईश्वर की जड़मूर्त्ति द्वारा ईश्वर के स्वरूप को स्मरण किया, भाई साहिब ! बात तो एक ही है । आप को भी मौलवी साहिब की तरह चक्कर खाकर स्थान पर आना ही पड़ेगा वा मूर्त्तिपूजा को मानना ही पड़ेगा ।

आर्य्य—अच्छा जी, हम वेदकी श्रुतिओं को भी न पढ़ा करेंगे और केवल अपने मुख से ईश्वर की सेवा और प्रशंसा किया करेंगे कि हे परमात्मन् ! तूं ऐसा है और कहा करेंगे कि हे परमात्मन् ! तूं हमको तारदे आदि २, तो फिर इसमें क्या व्यङ्ग्य है ।

मन्त्री—वाह साहिब ! आपके ऐसे कहने से तो यह सिद्ध होता है कि आप विद्या से रहित हैं क्योंकि केवल विद्या के प्रभाव से जो कुछ मुख से बोला जाए उसे पद कहते हैं और कई अक्षरों के मिलने से पद बनता है तो फिर आपने जो कहा कि ऐसा तूं है तूं ऐसा है तूं हमको तारदे आदि २ क्या पद नहीं हैं ? और क्या जड़ नहीं हैं ? सर्व पद चाहे किसी ही भाषा के क्यों न होवें, जड़ही कहलाएंगे । इससे सिद्ध हुआ कि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ईश्वर की प्रशंसा और उपासना करना जड़के विना ग्रहण करने के असम्भव है, क्योंकि यदि आप जड़के विना कारण ईश्वर की उपासना करना चाहोगे तो आपको हूं, हां, कौन, और क्यों, आदि पदों को त्याग कर मूक बनकर मोक्ष मार्ग को सिद्ध करना पड़ेगा।

आर्य्य—माना कि पद जड़ हैं परन्तु इनसे हम प्रशंसा तो सच्चिदानन्द की ही करते हैं।

मन्त्री—महाशय जी! निस्सन्देह इस प्रकार से तो हम भी मानते हैं कि मूर्त्ति जड़ पदार्थ है परन्तु इसके कारण से हम मूर्त्तिवाले ईश्वर की पूजा करते हैं वा यह कि हमारी प्रार्थना भी मूर्त्ति के कारण ईश्वर परमात्मा की ही होती है। इसलिए मूर्त्तिपूजा से आपको विरुद्ध होना योग्य नहीं है क्योंकि तत्वपदार्थ के प्राप्त करने में जड़ भी कारण हो सक्ता है। अच्छा अब आप यह बतलाइए कि यदि किसी महर्षि का शुद्धभाव से दर्शन किया जाए तो इसका फल अच्छा प्राप्त होगा कि नहीं?

आर्य्य—अजी क्यों नहीं, अवश्य अच्छा फल प्राप्त होगा।

मन्त्री—अब आप यह बतलाएं कि महात्मा जी के जीवात्मा का दर्शन हुआ या जड़ शरीर का? तो इसके उत्तर में आपको कहना पड़ेगा कि अरूपी जीवात्मा का तो दर्शन नहीं हो सक्ता, महाराजजी के शरीर का ही दर्शन हुआ। अब ध्यान करना चाहिए कि यदि मनुष्य जड़ शरीर के देखने से पुण्य उत्पन्न कर सक्ता है तो क्या परमात्मा की निर्दोष मूर्त्ति से पुण्य-बंधन नहीं कर सकेगा? अवश्य प्राप्त कर सकेगा॥

आर्य्य—श्रीमन्! महर्षि का दृष्टान्त तो मूर्त्ति से कदाचित् सम्बन्ध नहीं रखता है क्योंकि महर्षि जी के दर्शन से तो इस

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वास्ते पुण्य होता है कि वह हमको शिक्षायुक्त बातों का उपदेश करते हैं जिस पर वर्ताव करने से हम बहुत कुछ लाभ उठा सक्ते हैं परन्तु मूर्त्ति हमको कुछ भी उपदेश नहींकर सक्ती और नही कोई लाभ देसक्ती है, इसलिए मूर्त्ति का मानना ठीक नहीं है।

मन्त्री—महाशय जी! आपका यह कथन सत्य है कि महर्षि जी अच्छी बातें और अच्छा उपदेश सुनाते हैं, जिससे हमें लाभ होता है, परन्तु आप यह तो बताओ कि यदि हम महर्षि जी के कहने पर वर्ताव न करें तो क्या महर्षि जी के दर्शन से हमें कोई लाभ या फल मिल सक्ता है? कदाचित् नहीं। क्योंकि यदि महर्षि जी के कहने पर ध्यान और वर्ताव ही न किया जाएगा और इनकी बातों पर निश्चय भी नहीं किया जाएगा तो केवल महर्षि जी के मुख देखने से तो हमारा कल्याण कदापि नहीं हो सकेगा, इससे सिद्ध हुआ कि फलका प्राप्त करना वा न करना हमारे ही आधीन है। और जबकि हमको निश्चय दिलाने और वर्ताव करने से ही शिक्षा मिल सक्ती है तो फिर इसमें महर्षि जी की क्या बड़ाई हुई क्योंकि फलका प्राप्त करना हमारे ही हाथ में है, इसवास्ते हम अपनी भावना करके मूर्त्ति से भी अवश्य अच्छा फल प्राप्त कर सक्ते हैं। हम वीतराग ईश्वरमूर्त्ति की वीतराग आकृति को देख कर वीतराग बनने की इच्छा वा यत्न करें, और उनके गुणों का स्मरण करें, और उनके गुणों को ग्रहण करके रागद्वेष के परिणाम को रोकें, तो निस्सन्देह मूर्त्ति हमें तारने वाली होती है। आप भी इस बातको ऊपर मान चुके हैं कि यदि हम शिक्षा मानकर इस पर वर्ताव करेंगे तो हमारा ही लाभ होगा॥ और सुनिए मैं आपको एक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दृष्टान्त सुनाता हूं और यह सिद्ध करके दिखलाता हूं कि कइ एक चैतन्य पुरुषों से भी हमें इतना लाभ नहीं प्राप्त हो सक्ता जितना कि जड़ वस्तु से, यथा एक मनुष्य जोकि बड़ा विद्वान् है और ऐसी अच्छी २ शिक्षाएं दे रहा है कि जिनका वर्णन करना शक्ति से बाहिर है परन्तु इसको अपने मतका उपदेश न समझने वा इसका वर्णन अपने मतके प्रतिकूल देखने से और इसके वचनों पर निश्चय न करने के कारण हम इसके उपदेश पर वर्ताव नहीं करते, प्रत्युत ऐसा ध्यान करते हैं कि ऐसे मूर्ख प्रायः उपदेशक फिरते ही हैं,अब आपही बतलाइए कि क्या इस चैतन्य से हमारा कल्याण हो सक्ता है ? कदाचित् नहीं होसक्ता, और यदि हम इससे घर बैठे ही अपने मतके जड़ पुस्तकों को विचारें वा पढ़ें और इसकी बातों पर अपना धर्म्मशास्त्र होनेके कारण निश्चय करके यथाकथन पर वर्ताव करें तो निस्सदेह उस जड़ पुस्तक से हमको बहुत कुछ लाभ प्राप्त होसक्ता है। अब आपही न्याय से कहें कि चैतन्य लाभ देने वाला हुआ वा जड़ शास्त्र ?। आपका यह कहना 'कि जड़से कुच्छ लाभ प्राप्त नहीं होसक्ता' प्रत्युत व्यर्थ और मिथ्या सिद्ध हुआ॥

आर्य्य—हां साहिब ! आपकी युक्ति तो वस्तुतः सत्य है परन्तु इसमें केवल इतना ही संदेह है कि निराकार ईश्वर का आकार कैसे बन सक्ता है।

मन्त्री—महाशय जी ! आप यदि ध्यान से विचार करेंगे तो अवश्य समझ जायेंगे, कि निराकार साकार भी होसक्ता है आपके कथनानुकूल ईश्वर निराकार है परन्तु साकार वाले ओंकार शब्द में ही इसका समावेश हो जाता है और देखें आप

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जो सदैव काल कहा करते हैं कि ईश्वर सर्व व्यापक है और वह परिच्छिन्न मूर्त्ति में कदापि नहीं आसक्ता है, अब सोचना चाहिए कि जब सर्वव्यापक ईश्वर एक छोटे से ओंकार शब्द में समा सक्ता है तो क्या वह मूर्त्ति में नहीं समा सक्ता ?। और जब कि एक छोटासा ओंकार शब्द सर्वव्यापक ईश्वर का बोध करा सक्ता है तो फिर मूर्त्ति क्यों न करा सकेगी ? जैसे कि निराकार ईश्वर ओंकार के स्वरूप में ही लिखा या माना जाता है, तथैव यदि पत्थर या धातुकी मूर्त्ति में भी इसकी स्थापना मानली जाए, तो क्या हानि की बात है। ईश्वरज्ञान निस्संदेह निराकार है ऐसा भी आप मानते हैं और देखें साकार जड़ वेदों में भी ईश्वर का ज्ञान मानते हो, भला यह स्थापना नहीं तो और क्या है ?। इसलिए आपको ऐसा तो अवश्य ही मानना पड़ेगा कि निस्सन्देह परमात्मा के निराकार ज्ञान की साकार वेदों में स्थापना की हुई है और ईश्वर परमात्मा का ज्ञान निःसंदेह अनन्त है, परन्तु प्रमाणवाले शास्त्रों में तो इसकी स्थापना करनी ही पड़ती है, अथवा कहना पड़ता है कि वेदों में परमात्मा का ज्ञान है *। इस प्रकार यदि निराकार ईश्वर की प्रतिमा बनाली जावे तो क्या दोष है ?। और सुनिए, कि आर्य्यप्रतिनिधिसभा पंजाव के बनाए हुए जीवनचरित्र स्वामी दयानन्द जी के पृष्ठ ३५९ में लिखा हुआ है कि ईश्वर का कोई रूप नहीं है, परन्तु जो कुछ इस संसार में दृष्टि गोचर हो रहा है वह इसी का ही रूप है। इससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि मूर्त्ति भी परमात्मा का रूप है जब कि संसार की सर्व साकार वस्तु परमात्मा का रूप है तो क्या मूर्त्ति परमात्मा के रूपसे पृथक् रहगई ?।

* आर्य सिद्धांतानुकूल यह लिखा है, जैनों को मान्य नहीं है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आर्य्य—यह बात तो अपकी सत्य है परन्तु जड़की पूजा करने से चेतन का ज्ञान कदापि नहीं हो सक्ता है।

मन्त्री—महाशय जी! यदि ऐसे माना जाए तो जड़ वेदों से भी चेतन ईश्वर परमात्मा का ज्ञान न होना चाहिए, परन्तु आपका विश्वास है कि वेदों से ईश्वर परमात्मा का ज्ञान प्राप्त होता है इसलिए सिद्ध हुआ कि जड़ पदार्थ से चेतन का ज्ञान ज्ञात हो सक्ता है।

आर्य्य—भला यदि कोई तुम्हारी मूर्त्तिओं के भूषण चुरा कर लेजाए या मूर्त्तिको तोड़ देवे या निरादर करे तो वह मूर्त्ति इसका कुछ नाश नहीं कर सक्ती है, तो फिर हमको वह क्या लाभ पहुंचा सक्ती है?॥

मन्त्री—महाशय जी! यदि आप ऐसा मानते हो तो फिर तो आपको ईश्वर परमात्मा को भी न मानना चाहिए, क्योंकि बहुत से नास्तिक लोग ईश्वर को नहीं मानते, प्रत्युत भला बुरा कहते हैं कि ईश्वर कौन है और क्या वस्तु है इत्यादि २। परन्तु ईश्वर परमात्मा इनका कुछ नहीं कर सक्ता। इसलिए तुम्हारे विश्वास के अनुसार तो ईश्वर को भी न मानना चाहिए, और क्या ईश्वर परमात्मा पहिले न जानता था कि यह पुरुष मुझको नहीं मानेंगे, मैं इनको उत्पन्न न करूं, यदि जानता था तो मानो ईश्वर भी बहुत मूर्ख है जो जान बूझकर अपने शत्रु उत्पन्न करता है और यदि नहीं जानता था तो ईश्वर ब्रह्मज्ञानी न रहा। महाशयजी! ऐसा मानने से तो आपके ईश्वर पर कई तरह के आक्षेप होसक्ते हैं, परन्तु वस्तुतः तो केवल इतनी बात

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है कि जो कुछ होता है सब अपनी ही भावना से होता है, इस लिए मूर्त्ति के भूषण चुराने या तोड़ने और मूर्त्तिका खण्डन करनेवाले को तो इसके संकल्प के अनुसार वैसा ही फल मिलता है, और ईश्वर परमात्मा के आदेश के प्रतिकूल चलने या निन्दक और न मानने वाले को इनकी भावनानुकूल वैसाही फल मिलता है।

आर्य्य—श्रीमन्! मूर्त्ति तो अपने ऊपर से माक्षिका तक भी नहीं उडा सक्ती तो दूसरों को इसकी भक्तिसे क्या लाभ हो सक्ता है?।

मंत्री—वाह! जी वाह! अच्छा सुनाया, आपके वेद भी तो जड़ हैं जोकि मूर्त्ति की तरह अपने ऊपर से मक्खी भी नहीं उडा सक्ते जिनसे कि आप परमपद मुक्तिका फल प्राप्त करना मान रहे हो, यदि कहोगे कि वेदों से तो ज्ञान प्राप्त होता है तो हम यह पूछते हैं कि क्या वेद स्वयं ज्ञान कराने में समर्थ हैं या पुरुष अपनी बुद्धि से प्राप्त कर सक्ता है? यदि कहोगे कि वेद स्वयं ही ज्ञान कराने में समर्थ हैं तो आपका यह कहना कदापि सत्य नहीं है, क्योंकि यदि ऐसा ही हो तो मूर्ख पुरुष भी अपने पास वेद रखने से वेदों के ज्ञान से योग्य होजाएं, परन्तु ऐसा कदापि देखने में नहीं आता है, क्योंकि वेदों को पास रखने वाले तो सहस्रों हैं, परन्तु उनके समझने वाले सैंकड़ों में से केवल एक या दो ही निकलेंगे। और यदि कहोगे कि अपनी बुद्धि से ही ज्ञान प्राप्त होता है तो ऐसे तो मूर्त्ति से भी ज्ञान प्राप्त होसक्ता है, जैसाकि हाथी की मूर्त्ति देखकर उस पुरुष को जिसने कभी हाथी नहीं देखा हाथी का ज्ञान होजाता है कि हाथी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऐसा ही होता है। और यदि केवल इसको हाथी का नामही बतलाया जावे तो इसको हाथी का ज्ञान प्राप्त न होगा कि हाथी कैसा होता है। इस दृष्टान्त से भी सिद्ध होता है कि मूर्त्ति अवश्य माननी चाहिए। और भी तुम्हारे गुरु स्वामी दयानन्दजी की बनाई हुई सत्यार्थप्रकाश से सिद्ध होता है कि मूर्त्ति अवश्य माननी चाहिए।

आर्य्य—हां! आपने तो यह आश्चर्ययुक्त बात सुनाई भला यह बात होसक्ती है कि हमारे स्वामी जी मूर्त्ति का मानना लिखें? कदापि नहीं।

मन्त्री—आप क्यों व्याकुल होते हैं, यदि हमारे कहने पर आपको विश्वास नहीं आता, तो सत्यार्थप्रकाश के पृष्ठ ३७ पर देखलो। जहां अग्निहोत्र की विधि और इसके सम्बन्ध में आपश्यक सामग्री का व्याख्यान किया है। इतनी लम्बी चौड़ी चौकोन वेदी और ऐसा प्रोक्षणी पात्र और इस प्रकार का प्रणीतापात्र और इस प्रकार की आज्यस्थाली और इस नमूनें का चिमचा बनाना चाहिए अब तनक ध्यान करो कि यदि स्वामीजी मूर्त्ति को नहीं मानते थे तो वह अपने सेवकों को चित्र के बिना उक्त स्वरूपों को क्यों न समझा सके।

आर्य्य—श्रीमन्! हम इन चित्रों को निश्चय करके वेदी इत्यादिक तो नहीं मानते, हम तो केवल इन चित्रों को असली वेदी इत्यादि के ज्ञान होने में निमित्त मानते हैं॥

मन्त्री—हम भी तो ऐसा ही कहते हैं कि मूर्त्ति ईश्वर तो नहीं, परन्तु ईश्वर के स्वरूपका स्मरण कराते में कारण है?।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आर्य्य—वेदी इत्यादि वस्तु तो साकार हैं इनका चित्र बनाना तो योग्य है परन्तु ईश्वर हृदय में चिन्तनीय है, इस वास्ते इसकी मूर्त्ति कैसे बन सक्ती है ?।

मन्त्री—यदि आप ईश्वर को हृदय मात्र चिन्तनीय और अरूपी मानते हैं तो ओम् पदका सम्बन्ध ईश्वर के साथ न रहेगा क्योंकि ओम् पद रूपी है और ईश्वर अरूपी है तो फिर इस पदके ध्यान और उच्चारण से आपको क्या लाभ होगा ?

आर्य्य—जिस समय हम ओं पदका ध्यान और उच्चारण करते हैं उस वक्त हमारा आन्तरिक भाव जड़रूप ओं शब्द में नहीं रहता है प्रत्युत उस पदके वाच्य, ईश्वर में रहता है।

मन्त्री—जबकि आपका भाव 'वाचक' ओं पदको छोड़ कर 'वाच्य' ईश्वर में रहता है तो फिर आपको 'वाचकपद' ओं की क्या आवश्यकता है।

आर्य्य—श्रीमन् ! ओं पदकी आवश्यकता इस वास्ते है कि ओं शब्द के विना ईश्वर का ज्ञान नहीं होता।

मन्त्री—जिस प्रकार ओं पदकी स्थापना के विना ईश्वर का ध्यान नहीं होसक्ता इसी तरह मूर्त्ति के विना ईश्वर का ज्ञान भी नहीं होसक्ता, क्योंकि जब तक मनुष्य को केवल ज्ञान नहीं होता, तब तक मूर्त्ति के दर्शन विना ईश्वर के स्वरूप का बोध होना असम्भव है, और यह वर्णन पीछे भी हो चुका है कि एक आदमी ने तो हाथी को देखा हुआ है और दूसरे ने केवल नाम सुना हुआ है परन्तु असली हाथी कदापि नहीं देखा है अब देखना चाहिए कि दूसरे आदमी को 'जिसने केवल हाथी का नामही सुना है' जब तक हाथी की प्रतिमा इसको न दिखाई जावे तब तक असली हाथी का ज्ञान इसको कदापि नहीं हो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सक्ता। इसीतरह हम तुमने भी ईश्वर का केवल नामही सुना है, परन्तु देखा नहीं, इसलिए ईश्वरमूर्त्ति के विना ईश्वर का ज्ञान कदापि नहीं होसक्ता। यदि आप कहेंगे कि मूर्त्ति बनाने वाले ने ईश्वर को कब और कहां देखा था तो आपका यह कहना भी ठीक नहीं, क्योंकि नकशे को बनाने वाले ने क्या सर्व देश शहर कसबे ग्राम समुद्र नदी इत्यादि देखे भाले होते हैं? कदापि नहीं। जिस तरह नकशा बनानेवाले ने सर्व देश इत्यादि नहीं देखे होते परन्तु इसके बनाए हुए नकशे के देखने वालों को सर्व देश नगर इत्यादि का ज्ञान होजाता है, इस प्रकार मूर्त्ति में भी समझना चाहिए। यदि मूर्त्ति बनानेवाले ने ईश्वर को नहीं देखा है परन्तु इस मूर्त्ति के देखने से हमको ईश्वरका ज्ञान प्राप्त होता है।

आर्य्य—क्यों साहिब! जब शास्त्रों से ही ईश्वर का ज्ञान प्राप्त होसक्ता है तो फिर मूर्त्ति की क्या आवश्यकता है।

मन्त्री—महाशयजी! आपका यह कहना भी व्यर्थ है। देखिये, एक आदमी को तो मुम्बइ के वृत्तान्त से ऐसे सावधान किया जाए कि इस नगर की अमुकद्वार तो पूर्व की तरफ और अमुकद्वार पश्चिम की तरफ है और अमुक गृह स्टेशन से अमुक दिशा में है इत्यादि २ और दूसरे मनुष्य को मुम्बई नगर का चित्र भी दिखाया जाए, और वृत्तान्त भी सुनाया जाए तो आप ही कथन करिए कि मुम्बई नगर का अतिज्ञान किस मनुष्य को हुआ। अवश्य कहना पड़ेगा कि समाचार सुनकर चित्र देखने वाले को अधिक ज्ञान हुआ।

आर्य्य—क्यों जी! यदि आप पत्थर की मूर्त्ति को देखने से शुभ परिणाम का आना मानते हो तो इस के जड़ता के भाव

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भी आप में अवश्य आजाएंगे। और जब बुद्धि पत्थर होजाएगी तो आप भी पाषाणवत् जड़ होजाएंगे।

मन्त्री—अहहह! आपकी बुद्धि और तर्क का क्या ही कहना है, तनक आंख तो खोलो कि अतिमूर्ख भी जानता है कि स्त्री की प्रतिमा देखकर काम तो निःसंदेह उत्पन्न होता है कि वह मनुष्य स्त्री नहीं बनजाता है। इस प्रकार वीतरागदेव की शान्तोदान्त मूर्त्ति को देखकर शान्तोदान्त तो हो सक्ते हैं न कि जड़ बनजाते हैं। और यदि आपका भाव ऐसाही है तो फिर तो तुम भी जड़रूप ओं शब्द के देखने से जड़ बन सक्ते हो और आपने तो अनेक वार ओं शब्द को देखा होगा, परन्तु जड़ न हुए।

आर्य्य—नहीं जी, आपका कहना असत्य है, क्योंकि ओं शब्द के देखने से तो हमको परमात्मा स्मरण होता है॥

मन्त्री—महाशय जी! इस तरह से हमको भी मूर्त्ति के देखने से ईश्वर परमात्मा स्मरण आते हैं, और यह प्रख्यात नियम है कि कोई कार्य्य कारण के विना कदापि नहीं होसक्ता, इस प्रकार भाव भी कारण के विना उत्पन्न नहीं होसक्ता।

आर्य्य—श्रीमन्! सुनिए, मूर्त्ति के विषय में और भी एक बड़ा भारी आक्षेप है कि मूर्त्ति तो जड़ होती है फिर उस जड़ मूर्त्ति से चेतन ईश्वर का ज्ञान कैसे होसक्ता है।

मन्त्री—महाशयजी! हम जड़मूर्त्ति से चेतन का काम नहीं लेते, क्योंकि परमात्मा की मूर्त्ति तो 'जोकि जड़रूप है' केवल अच्छे भावों को 'जोकि वह भी जड़रूप है' उत्पन्न करने वाली है। और शास्त्र और मूर्त्ति आपस में जुगराफ़िया और चित्रवत्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम्बन्ध रखते हैं क्योंकि शास्त्र तो जुगराफिए की तरह वैराग्य भाव और ईश्वर के स्वरूप को वर्णन करने वाला और मूर्त्ति ही इसकी प्रतिमा बनाई हुई है जैसेकि शास्त्र जड़ हैं परन्तु अच्छे भावों के उत्पन्न करने वाले हैं, तथैव मूर्त्ति भी निस्सन्देह जड़ है परन्तु अच्छे भावों को ' जिन से ईश्वर का ज्ञान होता है, उत्पन्न करने वाली है। और संसार में ऐसा कोई भी मत नहीं है जोकि मूर्त्ति को किसी न किसी तरह न मानता हो या पूजा न करता हो। यदि किसी मतानुयायी पुरुष आकार वाली मूर्त्ति को न मानते होंगे और उसका सन्मान न करते होंगे, तो वे वेद कुराण अंजील इत्यादि अपनी पवित्र पुस्तकों को ' जोकि आकार वाली है ' अवश्य मानते और सन्मान करते होंगे।

(नोट मन्त्री की ओर से)

यह बात सभा पर प्रकाशित हो कि आकार वाली वस्तु को मूर्त्ति के नाम से प्रख्यात कर सक्ते हैं।

आर्य्य—श्रीमन ! क्योंकि मूर्त्ति जड़ है, इसलिए इसकी उपासना से मनुष्य भी जड़ होजाएगा ॥

मन्त्री—बड़े शोक की बात है कि मैं अनेक युक्तिओं से इस बात को सिद्ध कर चुका हूं, परन्तु आप वारंवार वह ही प्रश्न करते हैं। अच्छा और भी दोचार दृष्टान्तों से आपको समझाता हूं कि जड़ पदार्थकी पूजा से मनुष्य जड़ नहिं होसक्ता, प्रत्युत इस बात के विरुद्ध जड़ पदार्थों से बहुत लाभ प्राप्त होतेहैं। देखिऐ, कि ब्राह्मी नाम बूटी एक जड़ पदार्थ है, परन्तु इसके खाने से चेतनता बढ़ती है, इससे सिद्ध हुआ कि जड़ में भी ज्ञान को बढ़ाने की शक्ति है। और देखिए कि किसी वक्त जड़

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चेतन से भी अधिक लाभ पहुंचा सक्ती है, यथा आत्मा का ज्ञान गुण है, इसलिए पदार्थोंको आत्मा ही देख सक्ता है परन्तु फिर भी आत्माकी चक्षुः इत्यादिक इन्द्रियों की सहायता की आवश्यकता पड़ती है, क्योंकि जब चक्षुः किसी हेतु से नाश हो जाते हैं तो पदार्थोंका दर्शन नहिं होसक्ता, अब ध्यान करना चाहिए कि पदार्थों का दर्शन क्यों नहिं होता, क्या देखने वाला आत्मा विद्यमान नहीं, तो कहना ही पड़ेगा कि आत्मा तो अवश्य विद्यमान है परन्तु सहायक चक्षुओं के नाश होजाने से पदार्थों का दर्शन नहिं होता है अब आप ही न्याय से कहें, कि जड़का कितना प्रभाव है कि जिसके न होने के कारण आत्मा भी पदार्थों को नहिं देख सक्ता है। लो और सुनो। कि आंखें सचेतनता के होने पर भी अपने आपको नहिं देख सक्ती हैं, परन्तु जब आदर्श सन्मुख किया जावे तो शीघ्र ही आंखें अपने आपको देख लेती हैं, या ऐसे कहो कि अपनी आंखें आपको नज़र आने लग पड़ती हैं, देखिए कि इस जगह हमको जड़ रूप आदर्श किस प्रकार लाभ पहुंचाता है ऐसे ही मूर्त्ति भी ईश्वर परमात्मा का बोध करा सक्ती है। और भी देखिए कि मनुष्य अपने देखने की पूर्ण शक्ति होते भी एक आध मील से ज्यादा दूर कदापि नहीं देख सकता परन्तु दूरबीन लगाकर देखा जाए तो दस २ मील से भी अधिक दूर की वस्तु दृष्टि गोचर होती है, अब देखना चाहिए कि दूरबीन एक जड़पदार्थ है परन्तु इस में कितनी शक्ति है और कितना लाभ देने वाली वस्तु है। हे प्यारे! न्याय की दृष्टि से तो मेरी इन युक्तिओं और प्रमाणों से आपको मानलेना चाहिए कि मूर्त्तिपूजा वस्तुतः ठीक है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आर्य्य—हां साहिब ! अब मैं इस बात को तो स्वीकार करता हूं कि मूर्त्ति अवश्य माननी चाहिए और यह बात भी कि निराकार ईश्वर परमात्मा की मूर्त्ति बन सक्ती है। आपने ऊपर की युक्तिओं से ठीक २ सिद्ध करके बतला दिया है। अब प्रश्न केवल इतना ही है कि आप वेदों के मन्त्रों से (प्रमाण से) इस बात को सिद्ध करके बतलाएं, क्योंकि वेदों पर हमें अधिक विश्वास है।

मन्त्री—लो साहिब ! आपके कथनानुसार अब मैं आप को वेद की श्रुतिओं से ही यह बात सिद्ध करके दिखलाता हूं तनक ध्यान देकर सुनिए, यजुर्वेद १६ अध्याय के ४९ मन्त्र में मूर्त्तिपूजा सिद्ध है यथा—

(याते रुद्र शिवातनूरघोरापापकाशिनी)

अर्थ—हे रुद्र ! तेरा शरीर कल्याण करने वाला है सौम्य है और पुण्यफल देने वाला है।

देखो यजुर्वेद के तृतीय अध्याय के ६ मन्त्रमें ऐसा लिखा है, यथा—

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥

तथाच निरुक्तम् । अ० १३ पा० ४ खण्ड—

त्रीणि अम्बकानि यस्य स त्र्यम्बको रुद्रस्तं त्र्यम्बकं यजामहे (सुगन्धिं) सुष्ठुगन्धिम् (पुष्टिवर्द्धनम्) पुष्टिकारकमिवोर्वारुकमिव फलं बन्धनादारोधनात मृत्योः सकाशान्मुञ्चस्व मां कस्मादित्येषामितरेषा पराभवति ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अर्थ–इस मन्त्रका महीधर ने भी यही भाष्य किया है, इसका सीधा २ अक्षरार्थ यही है कि तीन नेत्रों वाले शिवजी की पूजा हम करते हैं सुगन्धित पुष्टिकारक पका खरबूजा जैसे अपनी लता से पृथक् हो जाता है उसी तरह हमको मृत्यु से बचाकर मोक्षपद की प्राप्ति कराइए। इति।

देखिए, इस श्रुति से ईश्वर शरीरधारी सिद्ध होता है क्योंकि नेत्रों का होना शरीर के बिना असम्भव है, परन्तु स्वामि दयानन्द जीने त्र्यम्बकं पदका अर्थ तीन लोक की रक्षा करने वाला लिखा है, परन्तु इस पदका यह अर्थ किसी प्रकार से भी नहीं होसक्ता है। और देखिए मनुस्मृति के चतुर्थ अध्याय के १२५ श्लोक में भी लिखा है। यथा–

मैत्रं प्रसाधनं स्नानं दन्तधावनमञ्जनम्।
पूर्वान्ह एव कुर्वीत देवतानाञ्च पूजनम्॥

इसका यह अर्थ है शौचादि स्नान और दातन आदि का करना और देवताओं का पूजन प्रातःकाल ही करना चाहिए। देखिए यहां भी देवताओं की पूजा से मूर्त्तिपूजा सिद्ध होती है। यथा–

नित्यं स्नात्वा शुचिः कुर्य्यादेवर्षि पितृतर्पणम्।
देवताऽभ्यर्चनं चैव समिदाधान मेवच॥

अर्थ–नित्यप्रति स्नान करके प्रथम देव, ऋषि तथा पितरोंका तर्पण अपने गृह्योक्त विधि से करे, तदनन्तर शिवादि देव प्रतिमाओं का अभ्यर्चन नाम सम्मुख पूजन करे तिसके बाद विधि पूर्वक समिदाधान कर्म्म करे। यहां देवताभ्यर्चन पदसे माता

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पिता गुरु आदि किसी मनुष्य का आदर सत्कार इसलिए नहीं लिया जासक्ता कि इसी मनु के द्वितीयाध्याय में माता पिता गुरु आदि मान्यों की पूजा, आदर, सेवा, पृथक् २ कही है। अग्निहोत्र का विधान सस्त्रीक गृहस्थ के लिए है, अग्निहोत्र के स्थान में ब्रह्मचारी के लिए समिदाधान कर्म है। पाणिनीय अष्टाध्यायी अ० ५ पा० ३ सू० ९९ के अनुसार वासुदेव तथा शिवकी प्रतिमाओं का नाम भी "कन्" प्रत्यय का "लुप्" होजाने पर वासुदेव तथा शिव ही होता है॥ इसी के अनुसार देवता की प्रतिमा का नाम भी "कन्" का "लुप्" होजाने से देवता ही बोला जाएगा, (वासुदेवस्य प्रतिकृतिर्वासुदेवः। शिवस्य प्रतिकृतिः शिवः। देवतायाः प्रतिकृतिर्देवता। तस्या अभ्यर्चनं देवताभ्यर्चनम्) मनु में कहे हुए "देवताभ्यर्चन" पदका स्पष्टार्थ विष्णु शिवादि देवों का प्रतिमाओं का पूजन ब्रह्मचारी को नियम से करना चाहिए यही सिद्ध होता है। मनु के टीकाकारों की सम्मति भी देवप्रतिमा पूजने में स्पष्ट है। यथा–

गोविन्दराजः–(देवतानां हरादीनां पुष्पादिनाऽर्चनम्।

मेधातिथिः–अतः प्रतिमानामेवैतत्पूजनविधानम्।

सर्वज्ञनारायणः–देवतानामर्चनं पुष्पाद्यैः।

कूल्लूकः–प्रतिमादिषु हरिहरादिदेवपूजनम्।

मनुस्मृति के टीकाकार पं० गोविन्दराज जी कहते हैं कि यहां देवता शब्द से शिवादि देवता अभीष्ट हैं पुष्पादि से पूजन करना देवताभ्यर्चन कहा जाता है।

मेधातिथि कहते हैं कि यहां प्रतिमाओं ही का पूजन अभिमत है

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सर्वज्ञनारायण और कुल्लूकभट्ट को भी यही मत स्वीकृत है। इसलिये इन प्रमाणों से देवताओं की पूजा करने से मूर्त्ति-पूजा सिद्ध है।

आर्य्य—नहीं जी नहीं, हमारे धर्म्मशास्त्रों में तो देवताओं का अर्थ विद्वान् लिया गया है इस कारण से आपका कथन युक्तियुक्त नहीं है।

मन्त्री—महाशय जी आपको तनक ध्यान देना चाहिए कि यदि यहां देवताओं से विद्वान् का अर्थ सिद्ध होता है, तो मातः काल में ही देवताओं का पूजन करना चाहिए, ऐसा क्यों लिखा है। और यदि कथञ्चित् इस बात को स्वीकार भी करलें कि देवता का अर्थ यहां विद्वान् ही है, तो फिर भी आप जड़-पूजा से पृथक् किसी प्रकार नहीं हो सक्ते हैं। क्योंकि यदि आप किसी विद्वान् की पूजा करेंगे तो आत्मा को निराकार होने के कारण इस विद्वान् के शरीर की ही पूजा करेंगे, परन्तु शरीर जड़ है, इसलिए वह भी जड़ही की पूजा हुई। यदि आप कहेंगे कि शरीर में चैतन्य आत्मा के होते हुए चैतन्य शरीर के पूजने से हम जड़पूजक नहीं हो सक्ते हैं, तो ऐसे तो हम भी मूर्त्तिपूजने के कारण जड़पूजक किसी प्रकार भी नहीं हो सक्ते हैं, क्योंकि आपके मानने के अनुकूल ईश्वर सर्वव्यापक होने से मूर्त्ति में भी ईश्वर विद्यमान है, और देखिए मनुस्मृति के नवम अध्याय के २८० श्लोक में लिखा है, यथा—

कोष्ठागारायुधागारदेवतागारभेदकान्।
हस्त्यश्वरथहर्तृंश्च हन्या देवाविचारयन्॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसका आशय यह है कि कोश कारागार देवताओं के मन्दिरों को जो तोड़ने वाले हैं अथवा वस्तुओं की चोरी करने वाले जो चोर हैं इन सबको राजा विना सोचविचार के मारडाले॥

और देखिए कि मनुस्मृति के नवम अध्याय के २८५ श्लोक में लिखा है। यथा–

(सङ्क्रमध्वजयष्टीनां प्रतिमानां च भेदकः)

इस श्लोक में मनुजी ने राजा के लिए आदेश किया है कि नालों से उतरने के लिए जो पुल बने हुए होते हैं उनको ध्वजा-यष्टि नाम तालाव में जो जल नापने की लकड़ी होती है उसको और देवताओं की प्रतिमा को तोड़ने वालों को राजा दण्ड देवे॥

देखिए इन स्थानों पर भी देवमन्दिर का नाम होने के कारण प्रत्यक्ष मालूम होता है कि मूर्त्तिपूजा का प्रचार मनुजी के समय में विद्यमान था। प्रत्युत मनुजी को भी यह पक्ष स्वीकार था।

आर्य्य–महाशय! देवमन्दिर से हम 'विद्वान् का स्थान' ऐसा अर्थ लेते हैं।

मन्त्री–आपको उत्तर दिया गया है कि आप देव शब्द का अर्थ विद्वान् नहीं कर सक्ते हैं, और आपने यह वाक्य 'विद्वांसो वै देवाः' शतपथब्राह्मणभाग से लिया है, और इस प्रमाण से ही देवता का अर्थ विद्वान् करते हैं परन्तु इस शतपथ ब्राह्मणभाग नाम ग्रन्थ की ६ कंडिका में मत्स्य अवतारादिका विस्तार से वर्णन किया गया है। यदि आप शतपथ ब्राह्मण के प्रमाण से ही देवता का अर्थ विद्वान् करते हैं तो आपको छठी कंडिका को भी मानना पड़ेगा, जिसमें अवतारों

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की सिद्धि का वर्णन है। जब अवतारों को मानलिया तो मूर्त्ति का स्वीकार करना स्वयं ही सिद्ध होगया और मनुस्मृति के अध्याय ८ श्लोक २४८ से भी प्रत्यक्ष ज्ञात होता है कि देवता शब्द का अर्थ प्रत्येक स्थान पर विद्वान् नहीं हो सक्ता है। श्लोक यह है, यथा—

"तड़ागान्युदपानानि वाप्यः प्रश्रवणानि च
सीमासन्धिषु कार्याणि देवतायतनानि च" ॥२४८॥

और देखिए, यजुर्वेद के १६ अध्याय के अष्टम मन्त्र में यह लिखा है ॥ यथा—

नमस्ते नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे
अथो ये अस्य सत्वानो हन्तेभ्यो करन्नमः

मन्त्रार्थ–नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे नमः अस्तु अथो अस्य ये सत्वानः तेभ्यः अहम् नमः अकरम्, इति मंत्रार्थः)॥

भावार्थ–नीलकण्ठ सहस्रनेत्र से सर्व जगत् को देखने वाले इन्द्ररूप वा विराट्रूप सेचन में समर्थ पर्जन्यरूप वा वरुणरूप रुद्र के निमित्त नमस्कार हो और इस रुद्र देवता के जो अनुचर देवता हैं उनको मैं नमस्कार करता हूं। देखिए इस श्रुति में "हजार नेत्रवाला और श्याम ग्रीवा वाला" यह लेख ईश्वर के शरीर धारण करने को प्रत्यक्ष सिद्ध कर रहा है क्योंकि शरीर के विना नेत्र वा कण्ठ किसी प्रकार से नहीं हो सक्ते हैं।

और देखिए, यजुर्वेद के १६ अध्याय के नवम मन्त्र में ऐसा लिखा है। यथा—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयो रार्त्न्यो र्ज्याम् ।
याश्चतेहस्त इषवः पराता भगवो वप ॥

मंत्रार्थ—भगवः धन्वनः उभयोः आर्त्न्योः ज्याम् त्वम् प्रमुञ्च याः ते हस्ते इषवः ताः परावप ।

भाषार्थ—हे षडैश्वर्यसम्पन्न ! भगवन् ! आप धनुष की दोनों कोटिओं में स्थित ज्या को दूर करो (उतारलो) और जो आपके हाथ में बाण हैं उनको दूर त्याग दो, हमारे निमित्त सौम्य मूर्त्ति हो जाओ ॥

इससे भी ईश्वर शरीरधारी सिद्ध होता है, क्योंकि शरीर के विना हस्त और पादों का होना असम्भव है ।

और देखिए, यजुर्वेद के १६ अध्याय के २९ मन्त्र में ऐसे लिखा है । यथा—

'नमः कपर्दिने च' इत्यादि

अर्थ—इस मन्त्र में कपर्दी शब्द है उसका अर्थ 'जटाजूट धारी' को नमस्कार हो ऐसे किया है । अब सोचना चाहिए कि जटा शिर के विना नहीं होसक्ती, इससे भी ईश्वर शरीर धारी सिद्ध हुआ ॥

और देखिए, यजुर्वेद के ३२ अध्याय में ऐसा लिखा है । यथा—

एषोहदेवः प्रदिशोऽनुसर्वाः पूर्वोहजातः सउगर्भे अन्तः । सएव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ्जनास्तिष्ठति सर्वतो मुखः ॥

अर्थ—यह जो पूर्वोक्त पुरुष ईश्वर सब दिशा विदिशाओं में

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नानारूप धारण कर ठहरा हुआ है वही पाहिले सृष्टि के आरम्भ में हिरण्यगर्भ रूपसे उत्पन्न हुआ और वही गर्भ में भीतर आया वही उत्पन्न हुआ और वही उत्पन्न होगा जो कि सबके भीतर अन्तःकरणों में ठहरा हुआ है और जो नाना रूप धारण करके सब ओर मुखों वाला होरहा है ॥ और भी देखो, यथा—

आयो धर्माणि प्रथमः ससाद ततो वपूंषिकृणुषे पुरूणि, अथर्व० ५।१।१२ ॥

अर्थ—हे ईश्वर! जिन आपने प्रथम सृष्टि के आरम्भ में धर्म्मों का स्थापन किया, उन्हीं आपने बहुत से वपु नाम शरीर अवतार रूपसे धारण किये हैं। वपु नाम शरीर का संस्कृत में प्रसिद्ध है। तथा—

'एह्यश्मानमातिष्ठाश्मा भवतु ते तनूः'।

अथर्व० २।१२।४।

अर्थ—हे ईश्वर! तुम आओ और इस पत्थर की मूर्त्ति में स्थित होओ और यह पत्थर की मूर्त्ति तुम्हारा तनू नाम शरीर बनजाए अर्थात् शरीर में जीवात्मा के तुल्य इस मूर्त्ति में ठहरो इसकी पुष्टि में उपनिषद् तथा ब्राह्मणभागादि के सैंकड़ों प्रमाण मिल सक्ते हैं॥

और देखिए यजुर्वेद के १३ अध्याय के ४० मन्त्र में यह लिखा है। यथा—

"आदित्यं गर्भं पयसा समङ्धि सहस्रस्य प्रतिमां विश्वरूपम्। परिवृङ्धि हरसामाभिमंस्थाः। शतायुषं कृणुहि चीयमानः" ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसका अर्थ यह है। सहस्रनाम वाला जो परमेश्वर है उसी की स्वर्णादि धातुओं से बनाई हुई मूर्त्ति को प्रथम अग्नि में डाल कर इसका मल दूर करना चाहिए, इसके बाद दूधसे उस परमात्मा की मूर्त्ति को धोना और शुद्ध करना चाहिए, क्योंकि शुद्ध और स्थापना की हुई मूर्त्ति पुरुष को दीर्घायुः* और बड़ा प्रतापी बना सक्ती है। देखो, इस वेदपाठ से प्रत्यक्ष मूर्त्तिपूजा सिद्ध होती है। यदि अब भी आप न मानें, तो क्या किया जाए। फिर तो केवल आपका हठ ही है। लो और सुनिए कि सामवेद के पाञ्चमें प्रपाठक के दशम खण्ड में लिखा है, कि—

" यदा देवतायतनानि कम्पन्ते दैवताः प्रतिमा हसन्ति रुदन्ति नृत्यन्ति स्फुटन्ति खिद्यन्ति उन्मीलन्ति निमीलन्ति " ॥

इस श्रुति का आशय यह है कि जिस राजा के राज्य में वा जिस समय में शयनावस्था में वा जागृतावस्था में ऐसा प्रतीत हो कि देवमन्दिर कांपते हैं तो देखने वाले को जरूर ही कोई कष्ट मिलेगा अथवा देवता की मूर्त्ति रोती नाचती अङ्गहीन होती आंखों को खोलती वा बन्दकरती दृष्टिगोचर हो तो समझना चाहिए, शत्रु की ओर से कोई कष्ट ज़रूर होगा। देखिए, इस श्रुति से भी प्रत्यक्ष प्रतीत होता है कि मूर्त्तिपूजा पूर्व भी थी, और वेदों में भी है। इसलिये आप मूर्त्तिपूजा को अयोग्य किसी प्रकार नहीं कह सक्ते हैं। और एक बात यह भी है कि आप लोक वेदी आदि बनाकर अग्नि में घृतादि उत्तम २ वस्तुएं डाल कर जलाते हैं (वा होम करते हैं) इस पर हम यह कह सक्ते हैं

* यह वैदिक धर्मीयों का मानना है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कि आप अग्निपूजक हो अथवा अग्नि को ईश्वर की स्थापना समझ कर पूजते हो ॥

आर्य्य—नहीं जी नहीं,हम स्थापना नहीं समझते, हमारा तो यह ख्याल है कि होम करने से वायु शुद्ध होजाती है, जिसकी वासना जगत् में दूर २ तक पहुंच जाती है और अशुद्ध वायु पवित्र होजाती है और लोक बीमारी से बच जाते हैं ॥

मन्त्री—महाशय जी ! यदि ऐसा ही है तो वेदी इत्यादि बनाने की क्या आवश्यकता है और अमुक वर्ण हो और वेदी द्वादशाङ्गल प्रमाण हो इन बातों से क्या अभिप्राय है। सीधे साधे चूल्हे में ही इन वस्तुओं को जला लेवें सुगन्धि स्वयमेव विस्तृत हो जाएगी। और यदि यह बात स्वीकार भी की जावे,तो फिर आप अग्निहोत्र करते समय श्रुतिआं और मन्त्र इत्यादि क्यों पढ़ा करते हैं। वायु तो ऐसे ही वेदी में घृत इत्यादि वस्तु डाल कर जलाने से शुद्ध होसक्ती है। बस इससे मालूम होता है कि जैसे हमलोग ईश्वर की प्रशंसा में श्लोक पढ़ते हैं और मूर्त्ति की पूजा करते हैं वैसे ही आप भी ईश्वर की प्रशंसा में श्रुतिआं पढ़ते और अग्निपूजा करते हैं और होम इत्यादि करने से तो आप लोग अग्निपूजक सिद्ध होते हैं। भेद केवल इतना है कि हमारी पूजा की सामग्री तो किसी पुजारी आदि के काम आजाती है और आपकी सामग्री भस्म होकर मृतिका में मिल जाती है। महाशय जी ! मूर्त्तिपूजा से आप लोग कदापि छूट नहीं सक्ते, और देखिए, कि आपके स्वामी दयानन्द जी के बनाए हुए सत्यार्थप्रकाश में लिखा है कि मनको दृढ़ करने के लिये पृष्ठकी अस्थि में ध्यान लगाना चाहिए। अब सभा को ध्यान

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करना चाहिए कि भला परमात्मा की मूर्त्ति में ध्यान लगाने से तो परमात्मा में प्रीति आएगी, और उनके गुणों का स्मरण होगा परन्तु सत्यार्थप्रकाश के सातवें समुल्लास में "शौचसन्तोष तपः स्वाध्यायेश्वर" इस योगसूत्र का अर्थ करते समय स्वामी दयानन्द जी ने लिखा है कि जब मनुष्य उपासना करना चाहे तो एकान्त देश में आशन लगाकर बैठे और प्राणायाम की रीति से बाह्य इन्द्रयों को रोक मनको नाभिदेश में रोके वा हृदय कण्ठ नेत्र शिखा अथवा पीठ के मध्य हाड़में मनको स्थिर करे। इस "हड्डीपूजा" से तो "मूर्त्तिपूजा" अच्छी है, पृष्ठकी अस्थि देखने वाले को या इसमें ध्यान लगाने वाले को क्या लाभ होसक्ता है। इस वास्ते आपको पृष्ठकी अस्थि को छोड़कर परमात्मा की मूर्त्ति में ध्यान लगाना चाहिए, क्योंकि तुम्हारी पृष्ठकी अस्थि से परमात्मा की मूर्त्ति सहस्रगुण लाभ पहुंचाने वाली है॥

इन सब प्रमाणों से स्पष्ट है कि मूर्तिपूजा सर्वथा वेदानुकूल है तथा वैदिकमतानुयायियों का आन्हिक कर्त्तव्य है अब एक दो उदाहरण इस बातके और दिखाए जाते हैं कि तुम लोगों के पूर्वज प्रतिमा पूजनको ठीक मानते रहे और उन्हों ने तदनुकूल आचरण भी किया॥ महाभारत के आदिपर्व में एक उपाख्यान उस समय का मिलता है जबकि हस्तिनापुर में द्रोणाचार्य्य जी पाण्डव और कौरवों के अस्त्रशिक्षा देरहे थे उनकी प्रशंसा सुन कर प्रतिदिन अनेक क्षत्रिय उनके पास धनुर्वेदविद्या सीखने के लिए आते थे।

'ततो निषादराज्स्य हिरण्यधनुषः सुतः।
एकलव्यो महाराज द्रोणमभ्याजगाम ह॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न स तं प्रतिजग्राह नैषादिरिति चिन्तयन् ।
शिष्यं धनुषि धर्मज्ञस्तेषामेवान्ववेक्षया ॥
स तु द्रोणस्य शिरसा पादौ गृह्य परन्तपः ।
अरण्यमनुसम्प्राप्य कृत्वा द्रोणं महीमयम् ॥
तस्मिन्नाचार्य्य वृत्तिञ्च परमामास्थितस्तदा ।
इष्वस्त्रेयोगामतस्थे परं नियममास्थितः ॥
परयाश्रद्धयोपेतो योगेन परमेण च ।
विमोक्षादानसन्धाने लघुत्वं परमाप सः ॥३५॥

महाभारत आदिपर्व अध्याय १३४

इस अध्याय के ३० श्लोकों में एकलव्यके चरित्र का वर्णन है, जब द्रोणाचार्य्य की प्रशंसा दूर २ तक फैल गई तो एक दिन निषदराज हिरण्यधनुषका पुत्र एकलव्य द्रोण के पास धनुर्विद्या सीखने के लिए आया, द्रोणाचार्य्य ने उसे शूद्र जान कर धनुर्वेद की शिक्षा न दी,तब वह मनमें द्रोणाचार्य्य को गुरु मान कर और उनके चरणों को छूकर वनमें चला गया, और वहां द्रोणाचार्य्य की एक मट्टी की मूर्त्ति बनाकर उसके सामने धनुर्विद्या सीखने लगा, श्रद्धा की अधिकता और चित्तकी एकाग्रता के कारण वह थोड़े ही दिनों में धनुर्विद्या में अच्छा निपुण होगया, एक वार द्रोणाचार्य्य के साथ कौरव और पाण्डव मृगया खेलने के लिए वनमें गए, उनमें से किसी के साथ एक कुत्ता भी गया था, वह कुत्ता इधर उधर घूमता हुआ वहां जा निकला कि जहां एकलव्य धनुर्विद्या सीख रहे थे, कुत्ता उनको देखकर भौंकने लगा,तब एकलव्य ने सात तीर ऐसे मारे कि जिनसे कुत्ते

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का मुंह बन्द होगया, वह कुत्ता पाण्डवों के पास आया, तब पाण्डवों ने इस अद्भुत रीति से मारने वाले को तलाश किया तो क्या देखते हैं कि एकलव्य सामने एक मट्टी की मूर्त्ति रक्खे हुए धनुर्विद्या सीख रहे हैं। अर्जुन ने पूछा महाशय! आप कौन हैं, एकलव्य ने अपना नाम पता बताया और कहा कि हम द्रोणाचार्य्य के शिष्य हैं, अर्जुन द्रोणाचार्य्य के पास गये और कहा कि महाराज! आपने तो कहा था कि हमारे शिष्यों में धनुर्विद्या में तुम्हीं सबके अग्रणी होंगे परन्तु एकलव्य को आपने मुझसे भी अच्छी शिक्षा दी है, द्रोणाचार्य्य ने कहा कि मैं तो किसी एकलव्य को नहीं जानता,चलो देखें कौन है। वहां जानेपर एकलव्य ने द्रोणाचार्य्य का पदरज मस्तक पर धारण किया और कहा कि आपकी मूर्त्ति की पूजा से ही मुझे यह योग्यता प्राप्त हुई है, आप मेरे गुरु हैं, द्रोणाचार्य्य ने कहा कि फिर तो हमारी गुरुदक्षिणा दो, एकलव्य ने कहा कि आप जो कहें सो मैं देने को तय्यार हूं, तब द्रोणाचार्य्य ने उसका अंगूठा दक्षिणा में मांगा, और एकलव्य ने देदिया, अंगूठा न रहने के कारण फिर एकलव्य में वैसी लाघवता न रही और द्रोणाचार्य्य की प्रतिज्ञा भी पूर्ण हुई। देखिए पाठक! द्रोणाचार्य्य की मूर्त्ति पूजने से ही एकलव्य अर्जुन से धनुर्विद्या में उत्कृष्ट होगया तो फिर जो लोग अहरहः देवपूजन करेंगे उनके कौनसे मनोरथ सिद्ध न होंगे? अथ वाल्मीकीय रामायण (जिसे संस्कृत*साहित्यमें आदि काव्य होने की महिमा प्राप्त है) को भी देख लीजिए,जिस समय मर्य्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी रावणादि राक्षसों को मारकर पुष्पक

* यह वैदिक लोकों का कहना है न कि हमारा॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विमान द्वारा लौटे, तो सीता जी को उन्हों ने उन २ स्थानों का पता बताया कि जहां २ पर वे सीता जी के वियोग में घूमते रहे थे, रामचन्द्र जी कहते हैं कि—

एतत्तु दृश्यते तीर्थं सागरस्य महात्मनः ।
यत्र सागरमुत्तीर्य तां रात्रिमुषिता वयम् ॥
एष सेतुर्मया बद्धः सागरे लवणार्णवे ।
तव हेतो र्विशालाक्षि ! नलसेतुः सुदुष्करः ॥
पश्य सागरमक्षोभ्यं वैदेहि वरुणालयम् ।
अपारमिव गर्जन्तं शङ्खशुक्ति समाकुलम् ॥
हिरण्यनाभं शैलेन्द्रं काञ्चनं पश्य मैथिलि ! ।
विश्रामार्थं हनुमतो भित्त्वा सागरमुत्थितम् ।
एतत्कुक्षौ समुद्रस्य स्कन्धावार निवेशनम् ॥
अत्र पूर्वं महादेवः प्रसादमकरोद्विभुः ।
एतत्तु दृश्यते तीर्थं सागरस्य महात्मनः ॥
सेतुबन्धं इतिख्यातं त्रैलोक्येन च पूजितम् ।
एतत्पवित्रं परमं महापातकनाशनम् ॥ इति

रामचन्द्र जी कहते हैं कि हे सीते ! यह समुद्र का तीर्थ दीखता है जिस जगह हमने एक रात्रि को निवास किया था, यह जो सेतु दीखता है इसे नल की सहायता से तुझे प्राप्त करने के लिए हमने बांधा था । जरा समुद्र को तो देखो जो वरुण देव का घर है कैसी ऊंची२ लहरें उठरही हैं जिसका ओर छोर नहीं दीखता, नाना प्रकार के जल जन्तुओं से भरे तथा शंख

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और सीपों से युक्त इस समुद्र में से निकले हुए सुवर्णमय इस पर्वत को देख जो हनूमान् के विश्रामार्थ सागर के वक्षःस्थल को फाड़ कर उत्पन्न हुआ है। यहीं पर विभु व्यापक महादेवजी ने हमें वरदान दिया था, यह जो महात्मा समुद्र का तीर्थ दीखता है इसका नाम सेतुबन्ध है और तीनों लोकों से पूजित है, यह परम पवित्र है और महा पातकों को नाश करने वाला है। इन अन्तिम दो श्लोकों पर बाल्मीकिय रामायण के टीकाकार लिखते हैं कि:-

"सेतोर्निर्विघ्नता सिध्यै समुद्रप्रसादानन्तरं शिवस्थापनं रामेण कृतमिति गम्यते कूर्मपुराणे रामचरिते तु अत्रस्थाने स्पष्टमेव लिङ्गस्थापनमुक्तं त्वत्स्थापितलिङ्गदर्शनेन ब्रह्महत्यादिपापक्षयो भविष्यतीति महादेववरदानं च स्पष्टमेवोक्तं, सेतुं दृष्ट्वा समुद्रस्य ब्रह्महत्यां व्यपोहतीतिस्मृतेः"॥

अर्थ-सेतु निर्विघ्न पूर्ण हो एतदर्थ रामचन्द्र जी ने समुद्र-प्रसादानन्तर यहां शिवमूर्त्ति का स्थापन और पूजन किया था, कूर्म पुराण में तो इस प्रकरण में रामचन्द्रजी का लिङ्गस्थापन और महादेवजी के वरदान का स्पष्ट वर्णन है तुम्हारे स्थापित किए हुए शिवमूर्त्ति के दर्शन करने से ब्रह्महत्यादि पापों का क्षय होगा, और स्मृति में भी लिखा है कि समुद्र का सेतुदर्शन करने से महा पातकों का नाश होता है॥

महाराज दशरथ जिस समय रामचन्द्रजी के वियोग में मृत्युङ्गत होगए थे तब भरतजी अपनी ननसाल में थे उनके बुलाने के लिए दूत भेजा गया जिस समय भरतजी अयोध्या के समीप पहुंचे तो उन्होंने अनेक अशुभ चिन्ह देखे, वे कहते हैं, यथा—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

"देवागाराणि शून्यानि नभान्तीह यथा पुरा ।
देवतार्चाः प्रविद्धाश्च यज्ञगोष्ठास्तथैव च" ॥

अर्थ–देवताओं के मन्दिर शून्य दीखते हैं, आज वैसे शोभायमान नहीं हैं जैसे पहिले थे। प्रतिमाएं पूजारहित होरही हैं उनके ऊपर धूप दीप पुष्पादि चढ़े नहीं देखते, यज्ञों के स्थान भी यज्ञकार्य से रहित हैं।

इन सब प्रमाणों से स्पष्ट प्रकट है कि मूर्त्तिपूजा सनातन है, त्रेता और द्वापर तक का जो वृत्तान्त मिलता है उनसे स्पष्ट प्रकट है कि यहां बड़े २ देवमन्दिर थे, जिनमें नित्य पूजा होती थी, विद्वान् पूजा करते थे ॥

हे महाशय जी! अब तनक ध्यान तो करो कि जब आप के पूर्वज प्रतिमा का पूजन करके प्रत्यक्ष फल प्राप्त कर गए हैं, यदि आप भी मूर्त्तिपूजन करेंगे तो आपकी अभिलाषा अवश्य ही पूर्ण तो होजाएगी और निःसन्देह सुख प्राप्त होगा ॥

आर्य्य–भला श्रीमन् ! मूर्त्ति को तो इसप्रकार से "कि इससे ईश्वर के स्वरूप का ज्ञान होता है" मानलिया, और यह समझकर परमात्मा की मूर्त्ति का सन्मान भी किया और सिर भी झुकाया, परन्तु इस पर फूल फल केसर चंदन धूप दीप चावल और मिठाई इत्यादि चढ़ाने से क्या तुम्हारा लाभ है ?।

मन्त्री–महाशय जी ! क्योंकि वस्तु के विना भाव नहीं आसक्ता, इस वास्ते भगवान् की मूर्त्ति पर उक्त वस्तुओं का चढ़ाना आवश्यक है और ऊपर लिखित वस्तु चढ़ाते समय नीचे लिखी हुई भावना करते हैं ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(फूल)

फूल चढ़ाते हुए हम यह भावना करते हैं कि हे भगवन् ! हे प्रभो ! यह जो फूल हैं सो कामदेव के बाण (काम को बढ़ाने वाले) हैं ॥ मैं अनादि काल से सांसारिक विषयों में मग्न हूं । आप वीतराग हैं और आपने कामदेव को भी पराजय किया है इसलिए मैं इन फूलों को आपके लिए अर्पण करके प्रार्थना करता हूं कि यह कामदेव के बाण "जो अनादि काल से हमको क्लेश दे रहे हैं" तेरी भक्ति के कारण से आगामि काल में दुःख न देवें ॥

(फल)

महाशयजी ! भगवान् की मूर्त्ति के आगे अच्छे और पवित्र फल रखकर हम यह प्रार्थना करते हैं कि हे भगवन् ! मुझको आपकी भक्ति का मुक्तिरूप फल प्राप्त हो ॥

(केशर वा चन्दन)

इनके चढ़ाते समय हम यह भावना करते हैं कि हे भगवन् ! जैसे इनकी वासना से दुर्गन्धि की वासना दूर होती है तथैव तुम्हारी भक्ति की वासना से हमारी भी बुरी अनादि वासना दूर होवे ॥

(धूप)

महाशय ! धूपदेने के समय हम ऐसी भावना करते हैं कि हे प्रभो ! जैसे धूप अग्नि में जलता है ऐसे ही आपकी भक्ति से मेरे सब पाप जलकर भस्म होजाएं, और जैसे धूम्रकी ऊर्द्ध गति होती है वैसे ही मेरी भी ऊर्द्ध गति होवे अर्थात् मोक्ष होवे ।

(दीपक)

महाशयजी ! निस्सन्देह हम घृतसे दीपक जलाकर परमात्मा की मूर्त्ति के आगे रखते हैं और हम इससे यह भावना करते

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हैं कि हे भगवन् ! जैसे दीपक के प्रकाश होने से अन्धकार दूर होजाता है ऐसे ही आपकी भक्ति से मेरे घट में भी केवलज्ञान (ब्रह्मज्ञान) रूप प्रकाश होवे, ताकि मेरा भी सर्व अज्ञानरूपी अन्धकार दूर होजाय।

(चावल)

जिनको संस्कृत में अक्षत कहते हैं, इनके चढ़ाते समय यह भावना करते हैं कि हे भगवन् ! हे प्रभो ! अक्षतपूजा से मुझे भी अक्षत सुखकी प्राप्ति हो ॥

(मिठाई पकवान इत्यादि)

इनसे हम यह भावना करते हैं कि हे भगवन् ! मैं अनादि-काल से ही इन पदार्थों का भक्षण करता आया हूं परन्तु मेरी तृप्ति न हुई। इसलिए मैं यह पकान्न आपको अर्पण करके प्रार्थना करता हूं कि मैं भी आपकी भक्ति के प्रताप द्वारा इन पदार्थों से तृप्त होजाउं (मुक्त होजाउं) ऐ प्यारे ! हम अपने दूसरे हिन्दु भाइयों की तरह भोग नहीं लगाते हैं, प्रत्युत हम उपर लिखित आठ प्रकार की वस्तु को (कि जिन में संसार के सर्व प्रकार के हर्षकी सामग्री आजाती है, और जिनको हम अष्टद्रव्य कहते हैं) भगवान् की मूर्त्ति के आगे अर्पण करके ऊपर लिखित भावना करते हैं, अथवा यह प्रार्थना करते हैं कि हे परमात्मन् ! मुझको संसार की यह अष्ट वस्तु मोहवश कर रही हैं और आपने तो उन सबका त्याग किया है, आप वीतराग हो, इसलिये आपकी भक्ति से मेरी भी इनसे मुक्ति हो, और मुझको भी आप जैसा शान्ति और वैराग्यभाव उत्पन्न हो, महाशयजी ! आपको विदित हो कि यह पकान्न इत्यादि हम ईश्वर को भक्षण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कराने के लिए नहीं चढ़ाते, प्रत्युत अपनी भलाई और लाभ के वास्ते तैय्यार करते हैं और ईश्वर की मूर्त्ति के आगे रखके केवल यह प्रार्थना करते हैं कि हे भगवन्! जिस तरह आपने इनका त्याग किया है मुझको भी इनसे छुड़ाकर आप मुक्ति का दान देवें।

आर्य्य—क्यों जी! आपका तो यह कहना है कि ईश्वर कुछ नहीं कर सक्ता और न कुछ देसक्ता हैं तो फिर यह प्रार्थना करनी कि हे ईश्वर! हमको मुक्ति दे, हमारे दुःख दूरकर इत्यादि २ व्यर्थ है।

मन्त्री—महाशय जी! ईश्वर परमात्मा तो वस्तुतः वीतराग है प्रशंसा करने से प्रसन्न और निन्दा करने से क्रोधित नहीं होता, न किसी को कुछ देता है, न किसी से कुछ लेता है, प्रत्युत यह तो केवल अपने भावही का फल है। प्रत्यक्ष सिद्ध है कि बुरी भावना से हमारी आत्मा मलीन होजाती है, और शुभ भावना से हमारे अशुभ कर्म्मों का नाश होता है, और क्योंकि ईश्वर का प्रशंसा करने या ध्यान करने से हमारे हृदय में शुद्ध परिणाम आजाता है, और उनका हमें अच्छा फल मिलता है, इसवास्ते जानना चाहिये कि ईश्वर ने ही हमें यह फल दिया है, क्योंकि ईश्वरनिमित्त होने से ही हमारा भाव अच्छा होता है जिसके कारण से हमें श्रेष्ठ फल मिलता है। अब प्रत्यक्ष सिद्ध है कि यह श्रेष्ठ फल ईश्वर के निमित्त होने के कारण से हमको मिला नं कि ऐसे इस तरह कहा जासक्ता है कि यह फल ईश्वर ने हमको दिया है, परन्तु तुम्हारे ईश्वर की तरह 'कि परमात्मा ही सब कुछ देता है' कदापि नहीं माना जासक्ता। और न ही हम ऐसा मान सक्ते हैं क्योंकि ईश्वर तो वीतराग है उसे लेने

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देने की कुच्छ आवश्यकता नहीं है और यदि उसे भी लेने देने की इच्छा है तो वह ईश्वर ही न रहा, तब तो हमारे जैसा ही समझना चाहिए। पाठकगणो! इस विषय में पुस्तक बढने के भय से अधिक नहीं लिखा गया, यदि आपको सम्यक् प्रकार से इस विषय के देखने की इच्छा हो तो आप चिकागु प्रश्नोत्तर जसवंतराय जैनी लाहौर से मंगवा कर पढ़ लेवें। *

प्यारे! एक बात मैं आपको और सुनाता हूं जो कि समझने के लायक है। स्मरण रखना चाहिए कि जिनेश्वरदेव की मूर्त्ति सर्वदैव रागद्वेष से पृथक् और अन्य मतानुयायियों की मूर्त्तियां सांसारिकविषययुक्त प्रतीत होती हैं। किसी की मूर्त्ति के साथ स्त्री की मूर्त्ति है किसी मूर्त्ति के हाथ में शस्त्र है, किसी मूर्त्तिके हाथ में जपमाला है किसी के हाथ में कमण्डलु है और कोई मूर्त्ति वृषभ पर आरूढ़ है और कोई गरुड़पर इत्यादि २॥यह सर्व अवस्थाएं सांसारिक हैं जिनमें मनुष्य अनादिकाल से ही प्रतिदिन लगा हुआ है, परन्तु मुक्ति का मार्ग सांसारिक दशाओं में लगे रहने से नहीं मिलता है प्रत्युत इसके त्याग करने से प्राप्त होसक्ता है इसलिए मसीद और मन्दिर इत्यादि में सांसारिक दशा के प्रतिकूल समझाने वाले कारणों का होना आवश्यक है। जैसा कि जैनियों की मूर्त्तियां शान्त दान्त निर्विकारी स्त्रीरहित निःस्पृह किसी वाहन के बिना रागद्वेष से विमुख होती हैं। यह बात निसंदेह है जैसा कोई होता है उसकी मूर्त्ति भी वैसी ही हुआ करती है। विचार करना चाहिए कि जिसकी मूर्त्ति के साथ स्त्री की

* इसी को जीरा जिला फिरोजपुर निवासी लाला राधा मल के पुत्र लाला नत्थूराम जी ने उर्दू में छपवाया है, उर्दू जानने वाले महाशय उन से मंगवा कर पढ़ सकते हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रतिमा होगी, वह अवश्य कामी होगा। वर्तमान काल में कोई मनुष्य गुरु या पीर होकर स्त्रीको साथ रक्खे तो लोग उसको अच्छा नहीं समझते, तो फिर जो परमेश्वर होकर स्त्री को साथ रक्खे, वह वीतराग परमात्मा कैसे होसक्ता है? कदापि नहीं हो सक्ता। और जिसके पास चक्र, त्रिशूल, धनुर्बाण या तलवार, इत्यादि शस्त्र होवें तो उसको अवश्य कोई भय होगा, या किसी शत्रुके मारने का संकल्प होगा, क्योंकि आवश्यकता के विना शस्त्रों का रखना मूर्खता को प्रकट करता है। यदि कहा जावे कि वह अपने महत्व के लिए शस्त्र रक्खता है तो वह ईश्वर परमात्मा ही नहीं होसक्ता, क्योंकि ईश्वर को दर्शनीयता और महत्व की कोई आवश्यकता नहीं, इसवास्ते जिस मूर्त्ति के साथ शस्त्र होवें वह पूजने के अयोग्य होती है। और जिसके हाथ में माला है, वह किसी दूसरे का जप करता होगा परन्तु ईश्वर परमात्मा ने किसका करना था, क्योंकि इससे बड़ा और कोई है नहीं, कि जिसका यह जपन करे, इसवास्ते माला वाली मूर्त्ति भी पूजने के योग्य नहीं है। और जिस मूर्त्तिका वाहन है, वह भी दूसरों को दुःख दाता है, परन्तु ईश्वर परमात्मा तो दयालु है किसी को दुःख नहीं देता। इसवास्ते सवारी वाली मूर्त्ति भी पूजने के योग्य नहीं। जिसके पास कमण्डलु है वह भी किसी आवश्यकता के लिए होगा परन्तु ईश्वर परमात्मा को किसी की आवश्यकता नहीं है, इसलिए कमण्डलु वाली मूर्त्ति भी पूजने के योग्य नहीं। अन्त में सभा को विचार करना चाहिए, क्या ऐसी मूर्त्तियां देखकर ध्यान और भाव शुद्ध होसक्ते हैं? कदापि नहीं। प्रत्युत ऐसी मूर्त्तियां देखकर तो उनके इतिहास स्मरण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हो जाते हैं, कि उन्हों ने .....ऐसे २ काम किए थे, इसलिए ऐसी मूर्त्तियों की पूजा कदापि न करनी चाहिए, पूजा के लिए शान्त दान्त निर्विकार मूर्त्ति होनी चाहिए। अब हम नीचे एक श्लोक लिखते हैं बुद्धिमान् इस श्लोक से सर्व परिणाम निकाल सक्ते हैं। यथा—

"स्त्रीसंगः काममाचष्टे द्वेषं चायुधसंग्रहः।
व्यामोहं चाक्षसूत्रादि रशौचञ्च कमण्डलुः" ॥

अर्थ इसका यह है—कि स्त्री की जो सङ्गति है सो काम का चिन्ह है और जो शस्त्र हैं सो द्वेषका चिन्ह हैं, और जो जपमाला है सो व्यमोह का चिन्ह है, और जो कमण्डलु है सो अपवित्रता का चिन्ह है, इसलिए मूर्त्ति शान्त दान्त निर्विकार होनी चाहिए, और ऐसी ही स्वीकार करने योग्य है। ऐसी अच्छी बातको सुनकर और निरुत्तर होकर सब चुप होगए। मन्त्री राजा की तरफ देखकर बोला, कि महाराज! अबतो आप को अच्छी तरह से मालूम होगया होगा कि मूर्त्तिपूजा से कोई मत खाली नहीं। राजा साहिब ने कहा कि हे मतिमन्! मन्त्रिन्! यह बात सर्वदैव सत्य है, मुझको अच्छी तरह से निश्चय होगया है कि व्यर्थ ही दूसरे मन्त्री ने मेरा ख्याल बदला दिया था, परन्तु अब यह ख्याल 'कि मूर्त्ति हमें कुछ लाभ नहीं दे सक्ती' सत्य नहीं है। मैं आपको हृदय से धन्यवाद देता हूं कि आप सन्मार्ग से भूले हुए मुझको अच्छे मार्ग पर लाए हैं, समय बहुत व्यतीत होगया है इसलिए सभामण्डल को आज्ञा है कि सब आदमी अपने २ घरों को जावें और सभा का विसर्जन किया जाए। रात्रि को जब राजा जी सोगए तो निद्रा में मूर्त्ति के ही स्वप्न

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आने लगे और जब निद्रा से जागे तो भी यह ख्याल था कि कब प्रातःकाल हो और मैं जिनेश्वरदेव जी महाराज की उपासना करूं। जब प्रातःकाल हुआ राजा जी निद्रा से विमुक्त हुए तो पुरीषोत्सर्ग से निवृत्त होकर और स्नानादि करके अष्टद्रव्य लेकर जिनेश्वरदेव की पूजा भक्ति में प्रवृत्त हुए।

सज्जन पुरुषो! इस दृष्टान्त के सुनने से आप को अच्छी तरह प्रतीत होगया होगा कि मूर्त्तिपूजा से कोई भी मत खाली नहीं है। राजा जिज्ञासु की तरह आप को आत्मा के कल्याण करने वाली जिनमूर्त्ति का पूजन करना चाहिए।

पाठक गणो! अब मैं अपने लेख को समाप्त करता हूं क्योंकि बुद्धिमानों को तो इतना ही कहना बहुत है, और साथ ही प्रार्थना करता हूं कि मेरा यह लेख किसी महाशय को न रुचे वा इस से किंचित् अप्रसन्नता हो, तो मैं उनसे क्षमा चाहता हूं, यथोक्तंच

खामेमि सव्व जीवे सव्वे जीवा खमंतु मे
मित्तीमे सव्व भुएसु वेरं मझ न केणइ॥

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

इति श्रीमद्विजयानन्दसूरिवर्य्याणां शिष्य श्रीमन्म-
होपाध्याय श्रीलक्ष्मीविजयानां शिष्य श्रीमद्विजय-
कमलसूरीश्वराणां शिष्यमुनिलब्धिविजयेन
विरचितमिदं मूर्त्तिमंडन नाम पुस्तकं
समाप्तिमगमत्॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मिलने के पते:--

(१) ज्वाहरलाल जैनी, सकन्दराबाद, यू. पी.

(२) श्रीआत्मानन्द पुस्तकप्रचारकमंडल,
छोटा दरीबा, दिल्ली ।

(३) श्रीआत्मानन्दजैनसभा, भावगनर ।

(४) लाला नत्थूराम जैनी, जीरा जिला फिरोजपुर

(५) बाबू चेतनदासजैनी, मुलतान शहर ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अर्हम्

पर्युषणा-विचार ।

लेखक

मुनि विद्याविजयजी

प्रकाशक

उदयराज कोचर (फलोधी)

चन्द्रप्रभा प्रेस बनारस सिटी ।

वीर सं. २४३५ ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अर्हम्

पर्युषणा-विचार।

आत्मकल्याणाभिलाषी भव्यजीव निर्मूलता समूलता का विचार छोड़ अपनी परम्परा पर आरूढ़ होकर धर्मकृत्यों को करते हैं, और धर्मिष्ठ पुरुषों को देखकर खुशी होते हैं, तथा त्यागीवर्ग पर प्रेम दिखलाते हैं। किन्तु खेद इतनाही है कि पक्षपाती जन परस्पर निन्दादि अकृत्यों में प्रवर्तमान होकर सत्य धर्म की अवहीलना (तिरस्कार) करते हैं। यह बात क्या शासनरसिकों के मन में सर्वथा अनुचित नहीं मालूम होती?। वर्तमान समय में केवलज्ञानी अथवा मनःपर्ययज्ञानी की तो बात ही क्या? अवधिज्ञानी भी कोई दृष्टिगोचर नहीं होता। अवधिज्ञानी भी दूर रहा, मतिज्ञान का भेदस्वरूप जातिस्मरणज्ञानवाला भी कोई दीखता नहीं। रहे केवल क्षयोपशमिकमतिज्ञानवान् और श्रुतज्ञानवान् पुरुष; वे युक्ति प्रयुक्ति द्वारा अपने २ मन्तव्य के स्थापन करने के लिये आभिनिवेशिकमिथ्यात्व सेवन करते हुए मालूम पड़ते हैं। सिद्धान्त का रहस्य ज्ञात होने पर भी एकांश को आगे करके असत्य पक्ष का स्थापन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और सत्य पक्ष का निरादर करने के लिये कटिबद्ध होकर प्रयत्न करते दिखाई पड़ते हैं। जैसे दृष्टान्त यह है कि "तत्र वार्षिकं पर्व भाद्रपदसितपञ्चम्यां, कालिकसूरेरनन्तरं चतुर्थ्यामेवेति" अर्थात् भाद्रपद सुदी पञ्चमी का साम्वत्सरिक पर्व था पर युगप्रधान कालिकाचार्य के समय से चतुर्थी में वह पर्व होता है। ऐसे सुस्पष्ट अक्षरों का दर्शन रहते भी "वासाणं सवीसइराइ मासे वइक्कंते, सत्तरिएहिं राइंदिएहिं सेसेहिं" इत्यादि समवायाङ्ग सूत्र के पाठ का पूर्वभाग "सवीसइ राइमासे वइक्कंते" पकड़कर उत्तर पाठ की क्या गति होगी इसका विचार न रख मूलमन्त्र को अलग छोड़कर दूसरे श्रावण के सुदी में पर्युषणापर्व के पांच कृत्य—

"संवत्सरप्रतिक्रान्तिर्लुञ्चनं चाष्टमं तपः।
सर्वार्हद्भक्तिपूजा च सङ्घस्य क्षामणं मिथः" ॥ १ ॥

(अर्थात् १ सांवत्सरिक प्रतिक्रमण, २ केशलुञ्चन, ३ अष्टमतपः, ४ सर्व मन्दिर में चैत्यवन्दन पूजादि, ५ चतुर्विध संघ के साथ क्षमापणा) करते हैं और भक्तों को कराते हैं। वस्तुतः तो भगवान् की आज्ञा के आराधक भव्यजीवों पर कल्पित दोषों का आरोप करके अपने भक्तों को भ्रमजाल में फँसाकर संसार बढ़ाते हैं। उन जीवोंपर भाव दया लाकर सिद्धान्तानुसार परोपकार दृष्टि से पर्युषणाविचार लिखा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाता है। उत्तमरीति से उपदेश करते हुए यदि किसी को रागद्वेष की प्रणति हो तो लेखक दोष का भागी नहीं है क्योंकि उत्तमरीति से दवा करनेपर भी यदि रोगी के रोग की शान्ति न हो और मृत्यु हो जाय तो वैद्य के सिर हत्या का पाप नहीं है। परिणाम में बन्ध, क्रिया से कर्म, उपयोग में धर्म, इस न्यायानुसार लेखक का आशय शुभ है तो फल शुभ है॥ अधिक मास को लेखा में गिनकर पर्युषणापर्व करनेवाले महानुभावों को नीचे लिखे हुए दोषों पर पक्षपात रहित विचार करने की सूचना दी जाती है।

प्रथम दोष।

आषाढ़ चौमासी बाद पचास दिन के भीतर पर्युषणापर्व करे इस नियम की रक्षा करते हुए तत्तुल्य दूसरे नियम का सर्वथा भङ्ग होता है, क्योंकि पचासवें दिवस संवत्सरी, और उसके पीछे सत्तरवें दिन चौमासी प्रतिक्रमणा करके पीछे मुनिराज को विहार करना चाहिये। यदि दूसरे श्रावण में सांवत्सरिक कृत्य करोगे तो सौ दिन बाकी रहेंगे तब सत्तर दिन का नियम कैसे पालन किया जायगा इसका विचार करो।

दूसरा दोष।

भाद्रसुदी में पर्युषणापर्व कहा हुआ है तत्संबन्धी पाठ आगे कहेंगे। अधिक मास मानने वाले दूसरे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रावण सुदी में पर्युषणापर्व करते हैं शास्त्रानुकूल न होने से आज्ञाभङ्ग दोष है।

तीसरा दोष।

अधिक मास के माननेवालों को चौमासी क्षमापना के समय "पंचण्हं मासाणं दसण्हं पक्खाणं पञ्चासुत्तरसयराइंदिआणमित्यादि" और सांवत्सरिक क्षमापना के समय "तेरसण्हं मासाणं छव्वीसण्हं पक्खाणं" पाठ की कल्पना करनी पड़ेगी। यदि ऐसा करोगे तो कल्पित आचार होने से फल से वञ्चित रहोगे, क्योंकि शास्त्र में तो "चहुण्हं मासाणं अट्ठण्हं पक्खाणं" इत्यादि, तथा "बारसण्हं मासाणं चउवीसण्हं पक्खाणं" इत्यादि पाठ है इसके अतिरिक्त पाठ नहीं है। उसके रहनेपर यदि नई कल्पना करोगे तो कल्पनाकुशल, आज्ञा का पालनकरनेवाला है या नहीं, यह पाठक स्वयं विचार कर सकते हैं। और दूसरी बात यह है कि किसी समय सोरह (१६) दिन का पक्ष होता है और कभी चौदह दिन का पक्ष होता है उस समय 'एक पक्खाणं पन्नरसण्हं दिवसाणं' इस पाठ को छोड़कर क्या दूसरी पाठ की कल्पना करते हो ? यदि नहीं करते तो एक दिन का प्रायश्चित्त बाकी रह जायगा। जैसे तुह्मारे मत में "चउण्हं मासाणं" इत्यादि पाठ कहने से अधिक मास का प्रायश्चित रह जाता है। यदि पाठ की नयी कल्पना करोगे तो क्या आज्ञाभङ्ग होने में

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुछ शङ्का रहेगी ?। अब लौकिक व्यवहार पर चलिए- लौकिक जन अधिक मास में नित्य कृत्य छोड़कर नैमित्तिक कृत्य नहीं करते । जैसे यज्ञोपवीतादि, अक्षयतृतीया, दीपालिका इत्यादि, दिगम्बर लोग भी अधिक मास को तुच्छ मानकर भाद्रपद शुक्ल पञ्चमी से पूर्णिमा तक दशलाक्षणिक नाम पर्व मानते हैं। अधिकमास संज्ञी पञ्चेन्द्रिय नहीं मानते, इसमें कोई आश्चर्य्य नहीं है क्योंकि एकेन्द्रिय वनस्पति भी अधिक मास में नहीं फलतीं । जो फल श्रावण मास में उत्पन्न होनेवाला होगा वह दूसरेही श्रावण में उत्पन्न होगा न कि पहिले में । जैसे दो चैत्र मास होंगे तो दूसरे चैत्र में आम्रादि फलेंगे किन्तु प्रथम चैत्र में नहीं। इस विषय की एक गाथा आवश्यकनिर्युक्ति के प्रतिक्रमणाध्ययन में यह है—

"जइ फुल्ला कणिआरया चूअग ! अहिमासयंमि घुट्ठंमि ।
तुह न खमं फुल्लेउं जइ पच्चंता करिंति डमराइं" ॥१॥

अर्थात् अधिकमास की उद्घोषणा होनेपर यदि कर्णिकारक फूलता है तो फूले, परन्तु हे आम्रवृक्ष ! तुमको फूलना उचित नहीं है, यदि प्रत्यन्तक (नीच) अशोभन (कार्य) करते हैं तो क्या तुम्हें भी करना चाहिये ?, सज्जनों को ऐसा उचित नहीं है ।

इस बात का अनुभव पाठकवर्ग करें यदि अभ्यास

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की सफलता हो तो जैसे कुशाग्रबुद्धि आज्ञानिबद्ध हृदय आचार्यों ने अधिकमास को गिनती में नहीं लिया है उसी तरह तुम्हें भी लेखा में नहीं लेना चाहिये। जिससे पूर्वोक्त अनेक दोषों से मुक्त होकर आज्ञा के आराधक बनोगे। वादी की शङ्का यहां यह है कि अधिक मास में क्या भूख नहीं लगती, और क्या पाप का बन्धन नहीं होता, तथा देवपूजादि तथा प्रतिक्रमणादि कृत्य नहीं करना?। इसका उत्तर यह है कि क्षुधावेदना, और पापबन्धन में मास कारण नहीं है, यदि मास निमित्त हो तो नारकी जीवों को तथा अढाईद्वीप के बाहर रहनेवाले तिर्यञ्चों को क्षुधावेदना तथा पापबन्ध नहीं होना चाहिये। वहाँ पर मास पक्षादि कुछ भी काल का व्यवहार नहीं है। देवपूजा तथा प्रतिक्रमणादि दिन से बद्ध है मासबद्ध नहीं है। नित्यकर्म के प्रति अधिक मास हानिकारक नहीं है, जैसे नपुंसक मनुष्य स्त्री के प्रति निष्फल है किंतु लेना लेजाना आदि गृहकार्य के प्रति निष्फल नहीं है उसीतरह अधिकमास के प्रति जानों। जैन पञ्चाङ्गानुसार तो एकयुग में दो ही अधिक मास आते हैं अर्थात् युग के मध्य में आसाढ़ दो होते हैं और युगान्त में दो पौष होते हैं। दो श्रावण, दो भाद्र, और दो आश्विन वगैरह नहीं होते। इस भाव की सूचना देने वाली पाठ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नीचे लिखी हुई देखोः—

" जइ जुग मज्झे तो दो पोसा जइ जुग अन्ते दो आसाढा "

यद्यपि जैन पञ्चाङ्ग का विच्छेद होगया है तथापि युक्ति और शास्त्रलेख विद्यमान हैं। किन्तु लौकिक पञ्चाङ्गानुसार अधिक मास को भी लेखा में गिननेवाले महाशयों से पूछता हूँ कि यदि आश्विन दो होंगे तो साम्वत्सरिक प्रतिक्रमणानन्तर सत्तरवें दिन में चौमासी प्रतिक्रमण करोगे कि नहीं, यदि नहीं करोगे तो समवायाङ्ग सूत्र के पाठ की क्या गति होगी ?। अगर चौमासी का प्रतिक्रमण करोगे तो दूसरे आश्विन सुदी पूर्णमासी के पीछे विहार करना पड़ेगा। आश्विन मास को लेखा में न गिनकर सत्तर दिन कायम रक्खोगे तो श्रावण अथवा भाद्रमास को लेखा में न गिनकर पचास दिन कायम रखकर भगवान् की आज्ञा के अनुसार भाद्र सुदी चौथ के रोज साम्वत्सरिक प्रतिक्रमण क्यों नहीं करते ?। कदाचित् ऐसा कहो कि चौमासे की मर्यादा आसाढ सुदी चतुर्दशी से कार्तिक सुदी चतुर्दशी तक बांधी हुई है तो वह वहां ही पूरी होगी अन्यत्र नहीं होसकेगी, तो पर्युषणापर्व की मर्यादा कालिकाचार्य महाराज से भाद्रपद सुदी चौथही को बंधी हुई है वह कैसे बनेगी क्योंकि पर्युषणाकल्पचूर्णि, तथा महानिशीथचूर्णि के दसवें

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उद्देशे में इसी तरह का पाठ है, उसे देखो और विचारो।

" अन्नया पज्जोसवणादिवसे आगए अज्जकालगेण सालवाहणो भणिओ, भद्दवयजुण्हपञ्चमीए पज्जोसवणा-" इत्यादि ।

तथा " तत्थ य सालवाहणो राया, सो अ सावगो, सो अ कालगज्जं इंतं सोऊण निग्गओ, अभिमुहो समणसंघो अ, महाविभूईए पविट्ठो कालगज्जो, पविट्ठेहिं अ भणिअं, भद्दवयसुद्धपंचमीए पज्जोसविज्जइ, समणसंघेण पडिवण्णं, ताहे रण्णा भणिअं, तद्दिवसं मम लोगानुवत्तीए इंदो अणुजाणेयव्वो होहित्ति साहू चेइए अणुपज्जुवासिस्सं, तो छट्ठीए पज्जोसवणा किज्जइ, आयरिएहिं भणिअं, न वट्टति अतिक्कमितुं, ताहे रण्णा भणिअं, ता अणागए चउत्थीए पज्जोसविज्जति, आयरिएहिं भणिअं, एवं भवउ, ताहे चउत्थीए पज्जोसवियं, एवं जुगप्पहाणेहिं कारणे चउत्थी पवत्तिआ, सा चेवाणुमता सव्वसाहूणमित्यादि" ।

ऊपर की पाठ साक्षात् सूचित करती है कि भाद्र सुदी चौथ को साम्वत्सरिक प्रतिक्रमण वगैरह करना चाहिये। किन्तु जब दो श्रावण आवें तो श्रावण सुदी चौथ के रोज साम्वत्सरिक कृत्य करे ऐसा तो पाठ कोई सिद्धान्त में नहीं है तो आग्रह करना क्या ठीक है ? । दो भाद्र आवें तो किसी तरह पूर्वोक्त पाठ का समर्थन करोगे परञ्च सत्तर दिन में चौमासी प्रतिक्रमण करना चाहिये इसबात का समर्थन नहीं करसकते और अपनी प्रवृत्ति के विरोध को रोक नहीं सकते । जैसे फाल्गुन और आषाढ की वृद्धि होनेपर दूसरे फाल्गुन और दूसरे आषाढ में

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चौमासी प्रतिक्रमणादि करते हो, उसी तरह अन्य अधिक मास में भी दूसरे ही में करना वाजिब है। वैसा नहीं करोगे तो विरोध के परिहार करने में भाग्यशाली नहीं बनोगे। एक अधिकमास मानने में अनेक उपद्रव खड़े होते हैं और अधिक मास को गिनती में न लेनेवाले को कोई दोष नहीं है। उसी तरह तुमभी अधिक मास को निःसत्त्व मानकर अनेक उपद्रव रहित बनो। और उमास्वाति महाराज के वचन पर कौन भव्य श्रद्धावान् नहीं होगा; देखो महापुरुष के युक्तियुक्त वाक्य को "क्षये पूर्वा तिथिः कार्या वृद्धा कार्या तथोत्तरा" अर्थात् अष्टमी का क्षय हो तो सप्तमी का क्षय करना और दो अष्टमी हो तो दो सप्तमी करना, तथा दो चतुर्दशी हो तो दो तेरस करना। इस न्याय को नहीं माननेवाले तिथि के विराधक हैं। दो अष्टमी, दो चतुर्दशी के माननेवाले को अष्टमी और चतुर्दशी का क्षय मानना पड़ेगा। कदाचित् तिथि का क्षय जैनपञ्चाङ्ग के प्रमाण से नहीं होता ऐसा मानोगे तो जैन पञ्चाङ्ग के प्रमाण से तिथि बढ़ती भी नहीं है ऐसा मानने में क्या प्रतिबन्ध है। इस रीति की व्यवस्था रहते हुए कदाग्रह न छूटे तो भले स्वपरम्परा पालो परन्तु स्वमन्तव्य में विरोध न आवे ऐसा वर्त्ताव करना बुद्धिमान पुरुषों का काम है। जैसे फाल्गुन के अधिक होनेपर दूसरे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फाल्गुन में नैमित्तिक कृत्य करते हो उसी तरह अन्य अधिकमास आनेपर दूसरे महीने में नैमित्तिक कृत्यों के करने का उपयोग रक्खो कि जिससे कोई विरोध न रहे । दो श्रावण हो, अथवा भाद्र हो तथा दो आश्विन हो तो भी कोई विरोध नहीं रहेगा । तीर्थंकर महाराज की आज्ञा सम्यक् प्रकार से पलेगी। हितबुद्धि से लिखे हुए विषयपर समालोचना करना हो तो भले करो, किन्तु शास्त्र के मार्ग से विपरीत न चलने के लिये सावधानी रखना। समालोचना की समालोचना शास्त्रमर्यादापूर्वक करने को लेखक तैयार है । पाठक महाशयों को पक्षपातशून्य होकर निबन्ध देखने की सूचना दी जाती है। स्नेह राग के वस होकर असत्य को सत्य नहीं मानना, और गतानुगतिक नहीं बनना, तत्त्वान्वेषी बनकर जल्दी शुद्ध व्यवहार को स्वीकार करके भगवान् की आज्ञानुसार भाद्र सुदी चौथ के दिन साम्वत्सरिक वगैरह पांच कृत्यों का आराधन करके थोड़े भव में पञ्चम ज्ञान (केवलज्ञान) के भागी बनो। इस तरह का धर्मलाभ पाठकवर्ग के प्रति लेखक देता है—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्योतिष चमत्कार समीक्षा

वेदादि सच्छास्त्र प्रमाणैः समन्विता।

गणक पण्डित हरिदत्तात्मज

रामदत्त शर्मा ज्योतिर्विद्

"धर्म्मोपदेशक भा०ध० महामण्डल"

विरचिता।

जिस को

पं० रामदत्त शर्मा ज्योतिर्विद् मु० सिलौटी

पोष्ट-भीमताल जिला नैनीताल निवासी ने

ब्रह्म प्रेस-इटावा

में छपाकर प्रकाशित किया॥

इस में छिपटी पं० जनार्दन जोषी के ज्योतिष

चमत्कार पु० का खण्डन किया गया है॥

संवत् १९६४ वि० सन् १९०८ ई०

प्रथमवार १०००

मूल्य प्रति पु० ॥)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीगणेशायनमः ।

भूमिका

ओम्–नक्षत्रमुल्काभिहतंशमस्तुनः॥

पाठकगण ? किसी समय में यह भारतवर्ष सम्पूर्ण विद्याओं का भाण्डार था, जिस काल में पृथ्वी के अधिकांश भाग में असभ्यता पूर्ण हो रही थी, उस समय इस देश में ज्ञान विज्ञान, ज्योतिष, भेषजतत्व, काव्य, साहित्य तथा धर्मादि विषयों की पूर्ण उन्नति हुई थी।

पश्चिमी लोग अमेरिका आदि देशों का नाम तक भी जिस समय में नहीं जानते थे, भारतवर्ष के ज्योतिषियों ने उस से बहुत काल पूर्व तामे तथा पीतलादि के भूगोल (नक्से) बनालिये थे, और भूगोल खगोल का बहुत कुछ वृत्तान्त भलीभांति जानते थे, कारण कि ऋषि मुनियों ने सत्य युग के बने हुए ग्रन्थों में विस्तार सहित यह विषय लिख दिया था।

यथा (सूर्यसिद्धान्त)

भूवृत्तपादेपूर्वस्यां यमकोटीतिविश्रुता ।
भद्राश्ववर्षेनगरी, स्वर्णप्राकारतोरणा॥
याम्यायांभारतेवर्षे लङ्कातद्वन्महापुरी ।
पश्चिमेकेतुमालाख्ये रोमकाख्याप्रकीर्तिता॥
उदक्सिद्धपुरीनाम कुरुवर्षेप्रकीर्तिता ।
तस्यांसिद्धामहात्मानो निवसन्तिगतव्यथाः॥

इसीप्रकार यूरूप के विद्वान् पृथ्वी की भांति तारों (ग्रहों) में बसामत अब मानने लगे हैं। पर हमारे शास्त्रों में यह बात पहिले ही से लिखी है। सूर्यलोक, चन्द्रलोक, भौमलोक, सब पृथक २ लोक हैं। जिस समय विमानों का प्रचार था इन सब लोकों की यात्रा होती थी। रावण ने पुष्पक विमान में चढ़ कर चन्द्रलोक पर जब चढ़ाई की तब, साथ के राक्षस शीत से अकड़ने लगे इत्यादि, वाल्मीकीय रामायणादि की कथाओं से प्र-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गट है। शिरोमणि में लिखा है कि चन्द्रमण्डल के ऊर्ध्वभाग में पितृगणों का निवास है यथा " विधूर्ध्वभागेपितरोवसन्ति "इसी प्रकार मंगल ग्रह में जल तथा बरफ अधिक होने के कारण विलायत के लोगों ने निश्चय किये हैं। भौम के अतिचार होने से प्रायः वर्षा होती है और सूर्यमण्डल के आगे भौम के आने से सूर्य अधिक आकर्षण करे तो अनावृष्टि हो। जैसे हमारे ग्रन्थोंमें लिखे हैं यही वृष्टि के योग हैं। उक्तंच—

चलत्यंङ्गारकेवृष्टिः त्रिधावृष्टिःशनैश्चरे।
तथा, भानोरग्रे महीपुत्रो जलशोषःप्रजायते ॥

इत्यादि—

इसी कारण इंग्लण्ड के तत्त्वदर्शी पण्डित गण भारतवर्ष ही को ज्योतिष विद्या का मूलस्थान बतलाते हैं। पर हाय भारतवर्ष के कुछ नई रोशनी वाले महाशय संस्कृतविद्या न जानने और नई शिक्षा दीक्षा प्राप्त होने के कारण अपनी विद्या की निन्दा करने को उतारू हो बैठते हैं। अहा! समय की क्या ही विचित्र गति है, जो देश सब देशों का शिरमौर था, वही आज इस दीनहीन दशा को प्राप्त हुआ, इसकी विद्या बुद्धि विदेशी शिक्षा में लय होगयी है, धर्म्म विप्लव होने से अनेक मत मतान्तर खड़े होगये। देश की सब विद्या लोप होने लगीं पूरे २ विद्वानों का अभाव होने से इस उन्नीसवीं सदी में—गणित भाग को स्थूलता का दोष और फलित को न मिलने का दोष, मन्त्रादि को ठगई का दोष, यन्त्रों को बाहियाती का डिप्लोमा, वेद विद्या को जंगली रागों का खिताब, पुराणों को उपन्यास की पदवी, अंगरेजी इष्ट्रोनोमी में वैदेशिक का अपवाद, एस्ट्रोलोजी को मन की गढ़न्त, इत्यादि कलि महाराज के दिए पदवियों की लूट होने लगी है। विलायत के लोग जिस प्रकार नई २ विद्या सीखने की चेष्टा में लगे हैं ठीक उसी प्रकार भारतवासी अपनी विद्या का लोप करने में कटिबद्ध हैं। अपने पूर्वजों की निन्दा, अपने

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शास्त्रों का खण्डन करने का असाध्य रोग भारतवर्ष में वे तरह फैला है। इसी अन्धाधुन्ध में हमारे मित्र पं० जनार्दन ज्योतिषी बी० ए० डिप्टी कलेक्टर साहब अलमोड़ा निवासी जी ने ज्योतिष चमत्कार नाम की एक पुस्तक ज्योतिष के खण्डन में लिख डाली है। इस पुस्तक में उसकी समालोचना लिखी जाती है। डिप्टी साहब ने ज्योतिष का पता जो कुछ लगाया है अधिकांश डाक्टर टीबो का मत उसमें ग्रहण किया है। ऐसा अनुमान होता है कि हिन्दुस्थानी टिम्स् पत्र में डा० टिबो के लेखों का इलाहाबाद के एक महाशय (वृहस्पति,) जी ने उत्तर छपाया है। हमारे डिप्टी साहब ने कदाचित् लेख नहीं पढ़े होंगे। अन्यथा टिबो साहब ही के आधार पर अपनी पुस्तक न लिखते। जो हो अब यहां से ज्योतिष विषय के कुछ कुतर्कों का समाधान लिखा जाता है।

प्रश्न—ग्रह जड़ हैं सुख दुःख क्यों कर दे सक्ते हैं और ग्रहों से हमारा क्या सम्बन्ध है।

उत्तर—ग्रहों के सूक्ष्म अधिष्ठाता, चैतन्य देवता हैं। यदि ग्रहों को जड़ भी मानलें तो क्या जड़ सुख दुःख नहीं दे सकता? जड़ अग्नि दुःख पहुंचा सकता है या नहीं, ? बिजली आकाश से गिर कर प्राण ले लेती है, इस प्रकार जल वायु रेल तार पाषाण शस्त्र बन्दूक तलवार ये सब जड़ ही हैं पर सुख दुःख भली भांति पहुंचा सकते हैं। ग्रह स्वयं दुख नहीं देते किन्तु पूर्व कर्मानुसार आने वाले दुःख अथवा सुख की सूचना देते हैं। जैसे कि किसी अभियुक्त को मजिस्ट्रेट ने ५ वर्ष की सजा का दण्ड दिया। यह समाचार १ राजकर्मचारी ने उसे सुनाया तो राजकर्मचारी दण्ड देनेवाला नहीं हुआ, क्योंकि दण्ड उसे अपने किये कर्मों के अनुसार मिला। मार्ग चलते समय नकुल का दर्शन हो गया आगे चलकर ५०) की थैली मिल गई तो यह थैली नकुल नहीं दे गया किन्तु उसने द्रव्य प्राप्ति की सूचना दी। इसी प्रकार पूर्व कर्मार्जित फल अदृष्य है

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उसको दृश्य करनेवाले ग्रह हैं। ग्रहों से हमारा क्या सम्बन्ध है? रहा इसका उत्तर सो जब आपका सारा काम ही ग्रहों से चलता है तो फिर सम्बन्ध पूछना कैसा! सम्पूर्ण नवग्रहों की कौन कहे एक सूर्य का ही प्रताप देखिये जो जगत् का प्रकाशक है, जग चक्षु कहलाता है इसी के उदय से हम सर्व कार्यों में प्रवृत्त होते हैं। मनुष्य के शरीर में जो उष्णता है वह सूर्य ही की है, और शीत उष्ण वृष्टि अनावृष्टि ये सम्पूर्ण ग्रह अन्यहैं, केवल शिशिर वसंत ग्रीष्म ही इसके साक्षी भूत नहीं, किन्तु इस की सत्यता हमारी प्रकृति से ही सिद्ध हो सकती है। क्यों कि जब ऋतु मेघाच्छन्न तथा क्षीण होता है तो हमारा शरीर निरुत्साह तथा शिथिल व क्षीण हो जाता है। जब ऋतु उज्वल कान्तिमान् होता है तब चित्त भी सानंद कान्तिमान् होता है। जब सूर्य आर्द्रा नक्षत्र पर जाता है तब श्वानों को जल भय रोग होता है, क्योंकि आर्द्रा नक्षत्र की श्वान योनि है,जब इस पर सूर्य्य आते हैं तब कुत्तों पर असर होता है। जब सूर्य्य वृष राशि पर आते हैं तब मनुष्यों की प्रकृति में उष्णता बढ़ जाती है, प्रायः महामारी इस ऋतु में होती है। जब कन्या राशि के सूर्य होते हैं तब विषम ज्वर (मलेरिया) फैलता है, मनुष्यों का सुख दुःख बीमारी तन्दुरुस्ती ऋतु के आधार पर है, ऋतु कर्ता ग्रह हैं तो सिद्ध हो गया कि मनुष्य के जीवन के हर्त्ता कर्त्ता ग्रह ही हैं। जो लोग सूर्य के समीप उष्ण कटिबन्ध में रहते हैं वे प्रायः काले (हबसी इत्यादि) होते हैं। और जो यूरोपदेश (पृथिवी के वायव्य कोण में है) भौम की मेष राशि के समीप है अतएव वहांवाले रक्त मुख श्वेत वर्ण होते है। इसी प्रकार सम्पूर्ण ग्रहों का प्रभाव जानना चाहिये,

प्रश्न—गणित सत्य है फलित नहीं,एक लग्न में दो युगल बालक तथा दरिद्री चक्रवर्ती जन्मते हैं उनका भाग्य एकसा क्यों नहीं होता।

उत्तर—गणित रूपी वृक्ष का फलित रूपी फल है जैसे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फलहीन वृक्ष शोभा नहीं देता उसी प्रकार फलित बिना गणित वृथा है जितने गणित हैं उन सब में थोड़ा बहुत फलित अवश्य है, किसी ने आजकी तिथि को २००) दोसौ रुपया कर्जा १) रु० सैकड़े पर दिया, दो वर्ष में क्या ब्याज हुआ ४८) रु० हों-गे देखिये दो वर्ष की बात आज प्रगट होगई। इसी प्रकार सिद्धान्त गणित भी है। किसी ने पंच तारा स्पष्ट किये मालूम हुआ कि बुध के ५ अंश गये और शनि के दश अंश गये हैं। सब सुन लिया हासिल कुछ नहीं फिर क्यों इतना गणित किया? नहीं २ फलित ही के निमित्त गणित बना है। नहीं तो कोरे अंश सुन लेने से क्या लाभ है? पंचांग बनाने की क्या आवश्यकता १३ मई को ५ बजे के १० मिनट में सूर्य उदय होगा, सब लोग निद्रा त्याग कर उठ बैठेंगे, पहिली तारीख मई की १३ ता० का सू-र्योदय जानलेना यही फलित है। रहा एक लग्न में जन्म लेना सो दो युग्म बालक एक लग्न में पैदा नहीं होते कुछ आगे पी-छे होते हैं। यदि लग्न भी एक हो तो नवांशक तथा अन्य बा-तें एक नहीं होतीं, जितनी बातें एक होती हैं उसके अनुसार रूप रंग इत्यादि करीब २ उनका एक ही होता है, भाग्य भी करीब २ एकसा होता है। नवांशक त्रिंशांशक तथा दशा एक न होने से कुछ २ फर्क होता है फल सुख दुख का आगे पीछे होता है। एक साथ ही दो बच्चे पैदा नहीं हो सक्ते क्योंकि मुर्गी भी दो अण्डे एक साथ नहीं देती। चक्रवर्ती राजा जिस समय जन्म लेता है दरिद्री का जन्म उस समय कदापि नहीं होता। इसी प्रकार किसी दरिद्री का चक्रवर्ती योग भी नहीं पड़ता। यह शरीर ग्रहों से बना है मनुष्य का शरीर देख कर जन्म कुण्डली मास दिवस तिथि इत्यादि कहे जा सक्ते हैं। कई विद्वान् हस्तरेख देख कर जन्म मास तिथि वार इष्ट मा-लूम करके कुण्डली बना देते हैं। ग्वालियर के बच्चू शास्त्री इस विचार में प्रसिद्ध थे आज कल भी ऐसे पण्डित भारतवर्ष में विद्यमान हैं। यथा पेठण के सुप्रसिद्ध ज्योतिभूषण पण्डित भ-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गवन्त गोविन्द तोड़ेवाले ने गतवर्ष मान्यवर पं० बालगंगाधर तिलक महोदय की अध्यक्षता में चेहरे से कुण्डली तय्यार करने की परीक्षा दिखाई थी, एक मनुष्य की कुण्डली देखकर माता पिता भ्राता आदि सारे कुटुम्ब की बहुत सी बातें बताईं। शारदा मठ के जगद्गुरु सह राज ने पण्डित जी को ज्योतिषभूषण की पदवी दी है। करवीर और सङ्केश्वर के शंकराचार्य महाराज ने इन्हें ज्योतिः कलादर्श की उपाधि तथा स्वर्णपदक दिया है। श्रीमान् महाराज बहादुर दरभंगा महामण्डल द्वारा पण्डित जी को उत्तम उपाधि देंगे। निजाम राज्य में आपकी बड़ी प्रतिष्ठा हैं अभिप्राय यह है कि अभी गुण ग्राहक भी मिलते ही हैं। २ अगस्त १९०७ ई० के श्रीवेंकटेश्वर में पण्डित जी का चित्र तथा चरित्र छपा है।

फलित की सत्यता के ऐसे २ प्रत्यक्ष प्रमाण होने पर भी डिप्टी साहब पं० जगादंल जी ने ज्योतिषचमत्कार नाम की फलित के खण्डन की पुस्तक बना डाली। हिन्दू धर्म के विरुद्ध लेख उसमें देखकर मुझे खंडन लिखना पड़ा और किसी प्रकार का द्वेष वा विरोध पण्डितजी से मेरा नहीं है। किन्तु मित्रता (रिश्तेदारी) है यह पुस्तक केवल धर्मरक्षा के अभिप्राय से लिखी है पाठक चमत्कार से इसको मिलाकर सत्यासत्य का निर्णय करें भूल चूक दृष्टिदोष जो कुछ रहगया हो क्षमा करके सज्जन गण सुधार लेवें।

धन्यवाद–भूमिका समाप्त करने से पूर्व बरेली के प्रसिद्ध वकील श्रीमान् बाबू जानकीप्रसाद जी ऐम, ए० तथा बाबू शंकर लाल ऐम० ए०–महोदय इन दोनों महाशयों को अनेक धन्यवाद देता हूं। छपाने से पूर्व जिन्हों ने इस पुस्तक का अवलोकन किया। तथा महोपदेशक पं० भीमसेन शर्म्मा सम्पादक आ० स० को धन्यवाद है आपने इस के शोधने छपाने की सहायता दी। पं० त्रिलोचन जी से इस की (प्रतिनिधी) नकल लिखवाई धन्यवाद— ओं शान्तिः ३

शिलौटी
भीमताल–नैनीताल

रामदत्त ज्योतिर्विद्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीगणेशायनमः ॥

॥ ज्योतिष चमत्कार समीक्षा ॥

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणायगुणात्मने
समस्तजगदाधार मूर्त्तयेब्रह्मणेनमः ॥ १ ॥

श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द भगवान् श्यामसुन्दर को नमस्कार करने के पश्चात् आज मैं एक ऐसे विषय की पुस्तक लिखने को बैठा हूं कि जिस से मनुष्य मात्र का सम्बन्ध है, दिन रात घड़ी पल विपल और मास पक्ष ऋतु अयन वर्ष युग चतुर्युग मन्वन्तर कल्प इत्यादि जिस विद्या से जाने जाते हैं। पूर्व तथा वर्त्तमान और परजन्म का वृत्तान्त जिस से विदित होता है। वैदिक धर्मावलम्बी लोगों का क्षणमात्र भी जिस विद्या के विना काम नहीं चलता, वैदिक यज्ञ कर्मादिक के काल का ज्ञान जिस कालविधान शास्त्र से होता है। और वैदिक संस्कार, नित्य नैमित्तिक कर्म तथा पर्वकाल पुण्यकाल इत्यादि का निश्चय जिस अंकशास्त्र से होता है। जिस विद्या से मनुष्यों के जन्म का हाल जाना जाता है, जिस विद्या से स्वर्ग भूमि अन्तरिक्ष के उत्पातादि का ज्ञान, ग्रहयुद्ध, चन्द्र सूर्य्य ग्रहण, समय के परिवर्तन का ज्ञान प्राप्त होता है। और बाल्यावस्था से आज पर्यन्त मैं जिस विद्या की खोज में लगा हूं। जिस शास्त्र के अनेक ग्रन्थ स्वयं पढ़े और पढ़ाये भी हैं पञ्चाङ्ग की गणना ग्रहणगणना ग्रहस्पष्टगणना इत्यादि जिस गणित विद्या में रातदिन लगा रहता हूं। जिस विद्या को अपनी पुश्तैनी (जायदाद) रियासत मानता हूं। आज उसी विद्या की सत्यता के विषय की और उसी शास्त्र के तत्त्व की उसी के मण्डन विषय का पुस्तक लिखने को बैठा हूं। आज का दिन धन्य है परमात्मा इस कार्य को निर्विघ्नता से पूर्ण करै ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पाठकगण ! ज्योतिषशास्त्र की उत्पत्ति के विषय में पश्चिमीय विद्वान् भी यही मानते हैं कि, यज्ञादि के कालज्ञान की आवश्यकता के निमित्त इस शास्त्र की रचना हुई। जैसे कि यूरोप के डाक्टर टीवो का कथन है कि वैदिक यज्ञों के समय का ज्ञान निश्चय करने के लिये तारामण्डल के ज्ञान की आवश्यकता हुई। इस से ज्योतिषशास्त्र की उत्पत्ति हुई इत्यादि। और हमारे शास्त्रों में लिखा है कि, भगवान् प्रजापति ने वेद वेदाङ्गों को रचा। शु०यजुर्वेद के १७ वें अध्याय की २ कण्डिका में अग्नि चयन यज्ञ में विनियुक्त मन्त्रों द्वारा सिंहावलोकित न्याय से कुछ २ अंकशास्त्र का वर्णन है।

यथा–"एका च दश च दश च शतं च शतं च सहस्रं च सहस्रं चायुतं चायुतं च नियुतं च नियुतं च प्रयुतं चार्बुदं च न्यर्बुदं च। इत्यादि"

प्रश्न, यह तो केवल गणित सिद्ध हुआ फलित की इस में कुछ भी चर्चा नहीं,

उत्तर, आप के मत से तो गणित तथा फलित दोनों ही सिद्ध न हो वेंगे क्योंकि भूगोलादि का ज्ञान, ग्रहण आदि का गणित इस से कुछ नहीं होता और फलादेश भी इस ऋचा से नहीं जाना जाता, स्मरण रक्खो कि हमारे मत से दोनों ही विषय फलित व गणित इसी से सिद्ध होते हैं। कारण कि मूलसंहिता में वेद की सूक्ष्म मूल बातें होती हैं। विस्तार पूर्वक वही विषय वेदाङ्गादि अन्य शास्त्रों में वर्णित होता है। इसी प्रकार इस शास्त्र का मूल अंकों में है। सो अंकों का वर्णन यजुर्वेद में आगया और भूगोल खगोल तथा ग्रहगणित वेदाङ्ग शिरोमणि ज्योतिष में मिलेगा और इसीप्रकार फलादेश भी उसी शास्त्र में होगा, सो ठीक है सिद्धान्त ग्रन्थों में गणित ग्रहस्पष्टादि संहिता तथा जातक ग्रन्थों में फलित स्पष्ट है, इस में जो शंका करे वह अल्पज्ञ है। ग्रहों की पूजा शान्ति आदि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भी अथर्व वेद के १८ वें काण्ड में लिखी है वह आगे लिखी जायगी ॥

प्रश्न–वेद में जन्मपत्रादि बनाने की विधि तथा शुभाशुभ मुहूर्त्तादि क्यों नहीं लिखे ? और सिद्धान्तग्रन्थों में प्रश्नादि शकुन और २ फलित की बातें क्यों नहीं लिखी गईं ? ॥

उत्तर–बहुत अच्छा, आप सूर्यसिद्धान्तादि का गणित ग्रहण निकालना इत्यादि विषय क्या वेद में दिखा सक्ते हैं ? आप वेद की ऋचाओं से ग्रहण गिनिये हम भी आप को तब जन्मपत्रादिकों के योग वेद में साफ २ दिखा देंगे। जब आप अपने माने हुए गणित के अनुसार सूर्य चन्द्रका ग्रहण वेद से नहीं दिखा सक्ते हो तो फिर फलित के विषय में हम से प्रश्न क्यों करते हो ?। रहा फलित का विषय मुहूर्त करना प्रश्न विद्या आदि सूर्य सिद्धान्तादिकों में क्यों नहीं लिखे गये। इसका उत्तर हम देते हैं कि ताजिरात हिन्द में हिन्दुस्तान का इतिहास क्यों नहीं लिखा गया और इन्डियन की हिष्ट्री में कानून की बातें क्यों नहीं लिखी गईं ?। तथा ग्राइमर (व्याकरण) में इतिहास या डाक्टरी विद्या क्यों नहीं लिखी ? तो आप क्या उत्तर देंगे। कोई कहे कि हलवाई की दुकान में जूते क्यों नहीं बिकते, या बजाज की दुकान में आटा दाल तर्कारी क्यों नहीं मिलती?। सो उसी प्रकार की बेसमझी का सवाल यह भी है। सभी विषय एक पुस्तक या एक शास्त्र में नहीं होते। रामायण में महाभारत की कथा न मिलेगी। इसी प्रकार ज्योतिष के सब विषय एक सिद्धान्त ग्रन्थ में नहीं मिल सक्ते। महर्षियों ने पृथक २ ग्रन्थ बना दिये हैं। सूर्य सिद्धान्तादिकों में गणित का विषय जिस प्रकार लिखा है उसी प्रकार फलित का विषय जैमिनिसूत्र, गर्गसंहिता, वसिष्ठसंहिता, पराशर संहिता, आदि आर्ष ग्रन्थों में विस्तार पूर्वक लिखा है। कोई भी बुद्धिमान् इस बात में

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शंका नहीं कर सक्ता। "मूर्खस्य नास्त्यौषधम्" मूर्ख की कोई औषध नहीं है गुसांई जी ने सत्य कहा है॥

मूरख हृदय न चेत जो गुरु मिलहिं विरंचि सम

पाठक महाशय अब यहां से पं० जनार्दन ज्योतिषी बी० ए० डिपटी कलक्टर महाशय अलमोड़ा (सेलाखोला) निवासी जी की बुद्धि का चमत्कार दिखाते हैं। और आपकी बनाई हुई पुस्तक ज्योतिष चमत्कार की आलोचना का चमत्कार आरम्भ होता है॥

देखिये पहिले भूमिका से प्रारम्भ करते हैं॥

॥ यतोधर्मस्ततो जयः॥

ज्योतिष चमत्कार की—

—०भूमिका०—

अहा हा! ज्योतिष कैसी अद्भुत विद्या है कि जिस के प्रभाव से ऋषि मुनि लोग तीनों काल की बातों को जानते थे। और उनसे संसार की कोई भी बात छिपी नहीं रहती थी, महात्मा बाल्मीकि जी ने श्री रामचन्द्र जी के जन्म से भी पहिले रामायण लिख डाला था। महात्मा गर्गऋषि ने भगवान् श्रीकृष्ण जी के जन्म लेते ही बतला दिया था, कि ये साक्षात् भगवान् हैं और कंस को मारेंगे। कौन ऐसा नास्तिक होगा कि जो हिन्दू होकर उन ऋषि मुनियोंके इस ज्योतिष को झूंठा कहै॥

(समीक्षा) सत्यमेव जयते नानृतम्—

सत्य की जय है सदा, झूठे की है सर्वत्र हार।

वाहवाह, धन्य है, जोशी जी खण्डन करने को तो बैठे थे पर सत्य बात का खण्डन कौन कर सकता है, अपनी ही कलम से ज्योतिष की प्रशंसा करने लगे "प्रथमग्रासे मक्षिका पातः,, सच पूछो तो अपनी सारी पुस्तक का खण्डन जोशीजी ने यहीं कर डाला, जोशी जी से हम पूछते हैं कि वे ज्योतिष

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के कौन ग्रन्थ थे जिन के द्वारा ऋषि मुनि तीनोंकाल की बातें जानते थे। महर्षि वाल्मीकि जी ने रामचन्द्र के जन्म से पूर्व किस ज्योतिष ग्रन्थ से जानकर रामायण बना दिया था। और गर्ग मुनि ने भगवान् श्यामसुन्दर के जन्म के समय कंस को मारेंगे इत्यादि किस विद्या के बल से बता दिया था ?। आप लिख चुके हैं ज्योतिष के प्रभाव से ॥

प्रश्न—गणित से या फलित से, फलित का नाम आपने यवन ज्योतिष रक्खा है। यदि कहो कि सूर्यसिद्धान्तादि गणित के ग्रन्थों से सो कोई भी इस बात को नहीं मानेगा, [यदि कहोगे योगबल से तो योगशास्त्र का ज्योतिष से कोई सम्बन्ध नहीं] कारण कि सूर्यसिद्धान्तादि ग्रन्थों में केवल ग्रहस्पष्ट तथा ग्रहणपातादि का गणित भूगोल का वर्णन है। इस से अतिरिक्त भत भविष्यत् वर्त्तमान कुछ भी उन ग्रन्थों से नहीं जाना जाता। रहा फलित, सोवास्तव में जिस फलित से ऋषि मुनियों ने ऊपर की बातें जानी थीं उस फलित को आप यवन ज्योतिष कहकर खण्डन ही करने लगे, जोशीजी ! अपनी पुस्तक में ऋषियों का ज्योतिष कई जगह आपने लिखा पर ग्रन्थों के नाम कहीं न लिखे। लिखते कैसे उन ग्रन्थों का तो खण्डन ही आप करने बैठे थे। जोशी साहब को उचित है कि उन ग्रन्थों के नाम लिखें जिन ज्योतिष के ग्रन्थों से मुनिगण तीनों काल की बातों को जानते थे। आगे आपने फरमाया है कि कौन ऐसा नास्तिक होगा जो हिन्दू हो कर उन ऋषि मुनियों के ज्योतिष को झूठा कहै, डिप्टीसाहब ! आप स्वयं न्याय (इन्साफ) तथा तहक़ीक़ात कीजिये स्वयं विदित हो जायगा कि ऐसा कौन नास्तिक हिन्दू है जो ज्योतिष का खण्डन करने लगे ॥

ज्योतिष चमत्कार, जोशीजी लिखते हैं कि "मैं कोई समाजी समाजी नहीं हूं सनातन धर्म का माननेवाला हरि भक्त वैष्णव हूं" ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समीक्षा—आपको नमाजी होने का सन्देह क्यों पड़ा ? हम कब कहते हैं कि आप नमाजी या समाजी हैं । हां इतना अवश्य कहेंगे कि समाजियों से कुछ कम ख्यालात आपके नहीं, किन्तु अधिकांश में मिलते जुलते हैं । अपने ज्योतिष शास्त्र के गुरू यवनों को आपही ने बताया । कह देते वेद विद्या भारत में आयरलेण्ड से आई और वेदान्त चीन से फैला तो क्या डर था कोई कलम तो पकड़ता ही नहीं था ॥

और सनातन धर्मी होना भी आपका ज्योतिष चमत्कार की कृपा से प्रगट हो चुका । देखिये ज्यो० च० पृ० ४० पंक्ति ११ वसिष्ठ जी के नाम से जनार्दन ज्योतिर्विद जी लिखते हैं कि लड़की का विवाह रजस्वला होने से तीन वर्ष पीछे होना चाहिये । वसिष्ठ स्मृति में साफ लिखा है कि रजस्वला होने का अवसर आने से पहिले ही ऋतुमती होने के भय से पिता कन्या का दान कर देवे देखिये वसिष्ठ स्मृति अध्याय १७ श्लोक ६२। ६३

प्रयच्छेन्नाग्निकांकन्यामृतुकालभयात्पिता ।
ऋतुमत्यांहितिष्ठन्त्यां दोषःपितरमृच्छति ॥६२॥

अन्यच्च

यावच्चकन्यामृतवःस्पृशन्ति तुल्यैःसकामा-
मभियाच्यमानाम् । भ्रूणानि तावन्तिहतानि
ताभ्यां मातापितृभ्यामितिधर्मवादः ॥ ६३ ॥

अर्थात् कामना रखती हुई कन्या को चाहने वाले वरों के विद्यमान होते हुए न देने से जितने मास तक कन्या रजस्वला होती रहै उतनी ही गर्भ हत्याओं का दोष कन्या के माता पिताओं को लगता है । यह धर्मशास्त्रकारों का कथन है यही सनातन धर्म का अटल सिद्धान्त है । धन्य है ! जोशीजी रजस्वला होने से तीन वर्ष बाद विवाह करने की तरकीब

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आपने खूब निकाली । वाह वाह, मेरे विचार से तो आपने सत्यार्थप्रकाश के आधार पर यह बात लिखी है क्योंकि उस के पृष्ठ ९३ में लिखा है ३६ वार रजस्वला होने के पश्चात् विवाह करना योग्य है, बस यहीं से जोशी जी ने भी लिया होगा सत्यार्थप्रकाश दयानन्दियों का धर्मग्रन्थ है ॥

क्या कोई सनातनधर्मी पण्डित कोई महामण्डल का महोपदेशक कोई सनातनधर्म सभा का लीडर इसप्रकार की विवाह की रीति चलाने वाले को सनातनधर्मी मान सकता है ? नहीं नहीं ! कोई नहीं !! कदापि नहीं !!! तो फिर उन को सनातनधर्मी मानें या आप को ? ॥

पाठकगण ! आप किसप्रकार के सनातनधर्मी हैं यह बात तो आप महाशय जान ही चुके हैं, और अधिक हाल आगे खुलेगा अभी तो भूमिका है वैष्णव धर्म हरिभक्ति का भी रहस्य आगे प्रकट हो जायगा ॥

'जोशीजी, ज्योतिष के आचार्य भृगु, पराशर, गर्ग आदि, ऋषीश्वरों के चरणों की धूलिका एक कण भी मेरे शिर में लग जाता तो मेरे जन्म जन्मान्तर का उद्धार हो जाता ॥

(समीक्षा) मुनियों के चरण की धूलि कहां से मिलेगी उन के ग्रन्थों को यवनों के बनाये बतलाते हो और सनातनधर्म के विरुद्ध पुस्तक छपाते हो, पश्चात् कन्या के विवाह का ओडर लगातेहो, मित्रवर ! ये सभी बातें ऋषि मुनियों के विरुद्ध हैं तो उद्धार किस प्रकार होगा ॥

(जोशी जी) यह काम किसी लोभ या बड़ाई की इच्छा से नहीं किया ॥

(समीक्षा) सत्य है आप को लोभ किस बात का होना था, यदि लोभ की इच्छा से भी यह काम किया जाता तो इस क्षुद्र तुच्छ पुस्तक की रचना से लाभ ही आप को क्या हो सकता था, यदि साइन्स आदि की कोई उत्तम पुस्तक आप

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लिखते तो लाभ और नाम भी आप का अवश्य होता, लोग कहते किसी ग्रेजुएट की बनाई उत्तम पुस्तक है, परन्तु अपना व्यर्थ समय आपने नष्ट किया ॥

(जोशीजी,) उसी हरि की इच्छा हुई इस हिन्दुस्तान में भूत भविष्य के जानने वाले ऋषीश्वर जन्म लवें, और विद्या फैलावें, उसी की इच्छा से सब विद्याओं का लोप हो गया और अन्धकार छा गया ॥

(समीक्षा) यह बात आप की सोलह आना सत्य है " हरेरिच्छाबलीयसी " जिस कूर्मांचल के जोशी वा ज्योतिषी पण्डितों ने इस विद्या में पूरी २ उन्नति प्राप्त की ग्वालियर पटियाला आदि रियासतों में आज तक हमारे जोशी भाई जागीर पा चुके, पीढ़ियों से ज्योतिष का काम करते हैं। जिस देश (कुमांऊ) के पञ्चाङ्गों के गणित की प्रशंसा सारा भारतवर्ष करता है । जिस कूर्मांचल के ज्योतिर्विदों ने अनेक करण सारिणी विविध भांति की बनाई, ग्रहलाघव में नवीन संस्कार माला के जोशी पं० देवकीनन्दन जी ने दिया, कोटा के प० प्रेमवल्लभ जी ने " परमसिद्धान्त " कैसा उत्तम गणित का ग्रन्थ बनाया, इसी गर्ग गोत्र में पूज्यवर पं० हरिदत्त जी ज्योतिर्विद् कलौन निवासी कैसे पूर्ण विद्वान् हुए थे ? । "भूलोके अहं हरिदत्तः" आज तक हमारे कुमावनी लोग आप के नाम को नहीं भूले, इसी विद्या (फलित) के बल से आप को कई एक ग्राम जागीर में मिले । पर हाय! आज उसी देश के और उसी गोत्र के एक जोशी सन्तान ने ज्योतिष के खण्डन की एक उल्टी सीधी पुस्तक बना डाली । पाठक ! महमूद गजनवी के मन्दिर तोड़ने में उतनी हानि नहीं, जितनी एक किसी हिन्दू नरेश के मन्दिर या शिवालय तोड़ने में होगी । ऐसा ही ज्योतिषी नाम टाइटिल पेज में लिखकर ज्योतिष का खण्डन करना है। "हरेरिच्छा बलीयसी"॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(जोशी जी लिखते हैं) कि यवनों ने आकर भ्रमजाल फैलाया सोना चांदी आप ले गये यवन ज्योतिष हमें दे गये (समीक्षा) पाठक जोशी जी का भ्रमजाल उड़ा देते हैं, यवनों के यहां ज्योतिष कहां से आवेगा, यह विद्या भारतवर्ष से सर्वत्र फैली है। यूरूप के विद्वान् भी इस बात को मानते हैं कि मुसलमानों ने ज्योतिष विद्या भारत से सीखी उन के यहां अंको का नाम हिन्दसा इसी हेतु से रक्खा गया, वाहवाह ! पण्डित जी कह देते हमारे यहां आयुर्वेद इंगलैण्ड से आया, ॥

(जोशी जी) ऋषि मुनियों के सत्य ज्योतिष के विपरीत तो मैं एक शब्द भी नहीं लिखूंगा, यह नास्तिकता मुझ से न हो सकेगी। हां यवनों ने जो २ बातें ऋषियों के नाम से चलाई हैं आप को दरशा दूंगा ॥

(समीक्षा) यह तो फरमाइये कि वह ऋषि मुनियोंका सत्य ज्योतिष कौन है? वाल्मीकि रामायणादि में श्री रामचन्द्र जी के जन्म की ग्रह कुण्डली आदि का जहां वर्णन है, तथा श्रुति स्मृति आदि में ग्रह शान्ति जो लिखी है, उसे आप ऋषियों का ज्योतिष मानते हैं या नहीं,? यदि नहीं मानते हो तो नास्तिकता है, मानते हो तो झगड़ा किस बात का है, प्रमाण, रामायण तथा वेदादिके आगे लिखे जावेंगे ॥

(जोशी जी,) मेरे ज्योतिष के विचार से आप के बुरे दिन पूरे हो गये, खोटे दिन आप के शत्रुओं के आये, आप को बुरा लगे तो न सही, मेरा ऐसा कहने में क्या बिगड़ता है ॥

(समीक्षा) मुझे तो एक महात्मा का बचन याद आता है, उक्तञ्च

हतश्रीर्गणकान्द्वेष्टि गतायुश्च चिकित्सकान्॥ म०भा०

(जोशीजी,) ज्योतिष दो प्रकार का है,एक सत्य ज्योतिष दूसरा यवन ज्योतिष इस पुस्तक में ज्योतिष की जो २

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सच्ची बातें हैं उनका भी वर्णन होगा, जो यवनों ने मिलाई हैं वे भी दिखाई जावेंगी ॥

(समीक्षा) फिर वही तान? साफ २ ग्रन्थों का नाम क्यों नहीं लिखते। यवन ज्योतिष और सत्य ज्योतिष दो नहीं, किन्तु फलित तथा गणित दो भाग ज्योतिष के अवश्य माने जाते हैं। कदाचित् ताजिक तथा रमल ग्रन्थों से यवन ज्योतिष कह कर आप घबड़ाते हों तो फिर भी आपकी भूल है। क्योंकि ये ग्रन्थ भी किसी समय यवनों ने हमारे यहां से लेकर अपने ढंग में बना लिये हैं, इसका विशेष विचार आगे लिखा जायगा पर जातक मुहूर्तसंहिता ग्रहयाग ग्रह शान्ति न माननेवाला वैदिक धर्मी हिन्दू नहीं माना जाता ॥

(जोशीजी) जो इस पुस्तक को ध्यान देकर पढ़ेगा उसे हजार कन्यादान का फल होगा उसके खोटे दिन दूर होंगे बल वीर्य्य पौरुष बढ़ेगा दुःख दरिद्र नाश होगा इत्यादि ॥

(समीक्षा) यहां तो आपने पुराणों से भी अधिक माहात्म्य लिख डाला, तो अब गंगास्नान गोदान, पुराण पाठ इत्यादि सबसे बढ़ कर आपकी ही पुस्तक का पाठ रहा, वाह वाह! भारतवर्ष दिन २ दरिद्र होता जाता है। प्लेग से दुःखी है, पुस्तक सुना कर उसके दुःख दरिद्र दूर क्यों नहीं करते हो ?। प्रमेहादि रोगियों को अब डाक्टर वैद्यों की आवश्यकता होगी या नहीं, क्योंकि बल वीर्य्य तो आपकी पुस्तक के पाठ से बढ़ा लेंगे। धन्य है! बल और वीर्य्य ब्रह्मचर्य से बढ़ता है आपकी पुस्तक से नहीं, अतएव ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम स्थापित कराइये ॥

पाठक! इसके पश्चात् द्विवेदी जी का गीत गाकर जोशी साहब ने भूमिका समाप्त की है। द्विवेदी जी के विषय का उत्तर आगे लिखा जायगा भूमिका की समीक्षा पूरी हुई। शुभमस्तु

रामदत्तज्योतिर्विद्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीः

॥ ज्योतिष चमत्कारसमीक्षा ॥

यत्रयोगेश्वरःकृष्णा यत्रपार्थोधनुर्द्धरः ।
तत्रश्रीर्विजयोभूतिर्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम ॥

(पहिला अध्याय)

(ज्यो० चमत्कार पृ० ५) मैं ऐसे विषय में कुछ लिखना चाहता हूं, जिस का नाम सुनते ही यूरुप के लोग हंस पड़ें। (समीक्षा)–यूरोप के लोग क्या भारतवासी भी आप के लेख को देख कर हंस पड़े हैं। (प्रश्न) हमारा मतलब आप नहीं समझे अभिप्राय यह था कि ज्योतिष का नाम सुन कर यूरोपियन हंस पड़ेंगे।

" उत्तर,,–तो क्यों घबड़ाते हैं, जिन का हमारा धर्म एक नहीं वे लोग वेद पुराण धर्मशास्त्र सभी को नहीं मानते, हँसते हैं तो अपनी क्या हानि है। पर मित्रवर ! ज्योतिष को तो वे लोग भी मानने लगे हैं, जर्मन में इस का प्रचार होने लगा, और अमेरिका में होने लगा है, जड़किलादि कई प्रसिद्ध ज्योतिषी वहां सुने जाते हैं ॥

चीनी तथा मुसलमान सभी लोग इस शास्त्र को मानते हैं, पर जितना भाग हमारे धर्मशास्त्र से सम्बन्ध रखता है उतना भाग विधर्मी अवैदिक होने से वे लोग नहीं मानते। जोशी जी ! आप ज्योतिषी वंश में जन्म ले कर ज्योतिष से इतना क्यों चिड़पड़े ? ॥

(ज्यो० च० पृ० ५ पं १४–) फलित ज्योतिष को यूरोप से धक्के खा कर हिन्दुस्तान की शरण लेनी पड़ी, जब तक धर्म

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शास्त्र के नाम से माना जायगा तब तक हिन्दुस्तान से हट नहीं सकता इत्यादि—

(समीक्षा) फलित ज्योतिष को धक्के खा कर यूरोप से हिन्दुस्तान की शरण लेनी पड़ी, यह कथन आप का कपोल-कल्पित और मिथ्या है, सत्य है तो प्रमाण (सबूत) दीजिये, कौन किस समय में यूरोप से यहां फलित लाया, फलित यहां यूरोप से जहाज में आया अथवा रेल में। और पहिले आप कह चुके हैं कि यवनों के यहां से आया। और अब यूरोप का (फलित) बताया, कहिये कौन बात आप की सच मानी जाय सच बूझो तो आप की दोनों बातें ठीक नहीं।

जोशी जी ! देखिये यूरोप के प्रसिद्ध ज्योतिषी जिन्हों ने बृहत्संहिता का अंगरेजी अनुवाद किया है प्रोफेसर कार्ण-साहब लिखते हैं कि सन् ईस्वी के कई एक वर्ष पहिले गर्गसंहिता बनी है, उक्त साहब के कथन से भी स्पष्ट प्रकट है कि ज्योतिष विद्या बहुत प्राचीन काल से भारतवर्ष में है। पर जोशी जी को इतना पता कहां से मिलेगा जो जी में आया सो लिख दिया। अब रही धर्मशास्त्र की बात सो जब कि याज्ञवल्क्य स्मृति आदि में ग्रहयाग ग्रहशान्ति ग्रहों की महिमा वर्णित है गृह्यसूत्रादि में अन्य पद्धतियों में भी ये विषय ठसाठस भरे हैं तो आप की वे सबूत बात कौन मानम करता है ? सत्य है आप हजार पुस्तक लिख डालें लाख चेष्टा करें हिन्दुस्तान से ज्योतिष नहीं हट सकता। पाठक ! यहां से पृष्ठ ९ तक साधारण बातें लिखी हैं जिन की आलोचना करने की विशेष आवश्यकता नहीं है। ग्रन्थवृद्धि के भय से वे निरर्थक बातें छोड़ दी गई हैं॥

(ज्यो० च० पृ० ९ पं० १५ देखिये—धनी निर्द्धन की समता किस प्रकार कर सकते थे, उन्ही दिनों यहां यवनज्योतिष चला था। २७ नक्षत्र और १२ राशि हैं, कोई किसी नक्षत्र में जन्मा कोई किसी नक्षत्र में॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(समीक्षा) यवनों के किस ग्रन्थ से ज्योतिष की उत्पत्ति हुई, इञ्जील से या कुरान से किस ने चलाया, कब चलाया समय का ठीक पता चलाने वाले का नाम क्यों नहीं लिखा अभी तो आप कह चुके कि यूरोप से फैला अब फिर यवनों का गीत गाने लगे वाह वा ! ॥

(ज्यो० च० पृ० ९ पं० १७ से–) इस प्रकार मनुष्यसमूहों २७ प्रकार की हुई अथवा १२ प्रकार की हुई, इन २७ समूहों में ज्योतिषियों ने यह लिख दिया कि इस समूह का विवाह इस समूह वाले से न होगा बस यही साम्य है ॥

(समीक्षा) जोशी जी भूल में पड़े हैं, यही नाडीवेध षडाष्टक ही को जो आपने साम्य समझा है । स्मरण रहै कि साम्य में और भी कई एक बातें विचारी जाती हैं । यथा वर्ण वश्य तारा योनि ग्रहमैत्री गण भकूट (नाड़ी) गुण तथा दोनों के कुण्डली के ग्रह इस के अतिरिक्त गृह्यसूत्रादि में और भी कई एक प्रकार का साम्य लिखा है । जिस का कुछ २ वर्णन आगे होगा । जिसे सभी आस्तिक सनातनधर्मी निर्विकल्प मानते हैं ॥

(ज्यो० च० पृ० ९) पर लोग इस विद्या को क्यों मानें इसलिये ज्योतिषियों ने लिख दिया है कि जो इस आज्ञा के विरुद्ध व्याह करेगा वह मर जावेगा वा उस के घर में और कोई मर जाय । मैं हरिवंश अथवा गंगाजल की शपथ खाकर कहता हूं कि यह बात ठीक निकली वे लोग अथवा उन के घर के अवश्य ही मर गये इत्यादि ॥

(समीक्षा) ज्योतिषी पण्डितों ने जो कुछ लिखा सो ऋषि मुनियों के अनुकूल सच्छास्त्रानुसार लिखा है और आप भी गंगाजल हरिवंश का शपथ खा कर सिद्ध कर चुके हैं कि यह बात ठीक निकली । उन की आज्ञा के विरुद्ध जिन लोगों ने व्याह किया वे लोग और उन के घर के अवश्य मृत हुए पाठक ! तो फिर उन ऋषि मुनि और ज्योतिषियों की आज्ञा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्यों न मानी जाय। वाह वा ! सच पूछो तो डिपटीसाहब को खण्डन करना नहीं आता। आये तो खण्डन करने, पर क-सम खा कर बात पक्की कर गये आप का पक्ष निर्मूल हो कर गिर गया ॥

आगे पृ० १० में आप लिखते हैं कि यह कहीं नहीं लिखा गया कि जो नाड़ीवेध षड़ाष्टक में विवाह करै वह इतने समय के भीतर में मर जाय इत्यादि ॥

(समीक्षा) पहिले आप यह लिखिये कि ज्योतिष के कौन २ ग्रन्थ आपने पढ़े हैं किसी अच्छे पण्डित के शिष्य हो कर कुछ काल अध्ययन करने से यह हाल जाना जायगा पाठक महाशय ! यहां से १५ पंक्ति तक इधर उधर की कुछ बातें लिखके राजनैतिक विषय में दौड़ मचाई है। आप लि-खते हैं ८०० सौ वर्ष मुसलमानों का राज्य रहा और हम दबे रहे फिर यही साहस हुआ कि लाईकर्जन के विपरीत अनुमति प्रकाश कियी। (समीक्षा) डिपटी साहब ! राजनैतिक (पो-लीटिकल) आन्दोलन में आप की राय शुभ नहीं ॥

(ज्यो० च० पृ० १२ पं० १०) आप लिखते हैं कि अब बड़ी घोर आपत्ति का समय आ पहुंचा है, बहुतेरे लोगों में तो लड़की का व्याह होना कठिन हो गया है लड़के ही नहीं मिलते साम्य तो किनारे रहा, आप ही ज्योतिष का नाश हुआ। ल-ड़कियों का वलिदान हो रहा है। पर आप उन के आंसू नहीं पोंछ सकते ॥

(समीक्षा)—आप का कथन सत्य है कारण इस का यह है कि प्रथम तो धन नहीं रहा चन्दा मांग मांग कर कई ब्राह्मण कन्याओं का विवाह कर रहे हैं (२) और सहस्रों नव युवक प्रतिसप्ताह प्लेग के शिकार बन रहे हैं। देश में हाहाकार मचा हुआ है। अनाचार इतना फैला है कि भक्ष्याभक्ष्य, मद्य, बिस्कुट अण्डे, मुर्गी, आदि को अच्छे २ कुलीन बुद्धि हीन भ्र-ष्टता से खाने लगे हैं॥ इस कारण सदाचारी लोग उन से खान

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पान सम्बन्ध बन्द करने लगे। बाप बेटे के हाथ से नहीं खाता, भाई भाई के हाथ से परस्पर जिन लोगों में रिश्तेदारी होती थी सो सब बन्द हुईं। और नये २ पन्थ नये २ समाज घर २ में खड़े हुए। हाय! कौन स्वामी शंकराचार्य की भांति भारत में जन्म लेकर आंसू पोंछेगा? ॥

"जोशी जी पृ० १२ पं १६" में लिखते हैं कि समता फैलाने को साम्य चला पर उलटी विषमता फैली। यहां तक कि लड़की के लिये २।३ जन्मपत्रियां भी कठिनता से मिलती हैं, यदि उनसे साम्य न हुआ तो फिर मौत है। इसी विपत्ति को देख कर मैंने इसकी खोज की इत्यादि ॥

(समीक्षा) उत्तम तो यह होता कि यदि आप देश में सदाचार तथा धर्म शिक्षा के प्रचार के निमित्त धर्म सभा स्थापित कराते तथा देश में शिल्प वाणिज्यादि के द्वारा धनवृद्धि द्रव्यरक्षा घृत दुग्ध की वृद्धि के लिये गोरक्षा अन्नरक्षिणी सभा के द्वारा अन्न की रक्षा की चेष्टा कराते देश में घर २ मंगल आनन्द होता तो स्वयं एक २ कन्या के लिये १०० सौ सौ जन्मपत्र मिलने लगती। यथा योग्य साम्य होने से फिर विधवा कोई न होती पाठक! महासभादलादि धर्म सभायें इसी चेष्टा और उद्योग में हैं पर हमारे डिप्टी साहब को उलटी बात सूझी ॥ एक कहावत याद आई है किसी ने अपने भाई से कहा कि "भाई! बूढ़ा बाप बीमार है क्या करें दूसरे भाई ने कहा जहर देदो यह तो नहीं कि कुछ इलाज करो" वही कहावत यहां भी हुई वाह वा! अच्छी खोज की ॥

॥ प्रथम अध्याय समाप्त हुआ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्वितीय अध्याय

"ज्यो० च० पृ० १३" विवाह कैसे होता है लड़के लड़कियों की जन्मपत्री धरी रहती हैं, विवाह के समय ये पत्रियां मिलाई जाती हैं जिनकी पत्री मिलगई उन्हीं का व्याह हो सकता है। व्याह क्या हुआ एक प्रकार की चिट्ठी पुर्जी डाली गई कोई २ कोमलाङ्गी सुरूपा लड़की किसी काले भूत के नाम आगई इत्या० (समीक्षा) जोशी जी आपने इस पुस्तक को द्वेष बुद्धि से लिखा है। जन्मपत्री मिलाने से कोई कालाभूत किसी उत्तम कन्या को नहीं व्याह सकता क्योंकि हमारे यहां लिखा है कि—

शुद्धां गोत्रकुलादिभिर्गुणयुतांकन्यांवरश्चोद्वहेत्,।
वर्णोवश्यभयोनिखेचरगणांकूटंचनाड़ीक्रमादिति

पहिले कन्या का कुल गोत्र रूप गुण इत्यादि इसीप्रकार वर के भी कुलादि रूप गुण निश्चय करके जन्मपत्री से ठीक २ साम्य करके पश्चात् विवाह करना योग्य है। यही परिपाटी वैदिक हिन्दुओं में प्रचलित है। पहिले पुरोहित या नाई आदि को भेजकर लड़के तथा लड़की को भली भांति देखभाल कर वाया, तब ग्रह साम्य करा कर विवाह होता है। कोई काला भूत किसी कोमलाङ्गी सुरूपा को नहीं व्याह सकता, फिर आपको चिन्ता क्यों हुई ?॥

(ज्यो० च० पृ०१३ पं० १०) कोई कुरूपा किसी सुरूपवान् लड़के के नाम आई तो थोड़े ही दिनों में उसके मा बाप चिन्ता से मरगये कि हमारे लाल को क्या होगया ? किसी बात में मन नहीं लगता इस लड़की के ग्रह खोटे होंगे चलो कोई अच्छी लड़की ढूंढ़लें जिससे हमारे लाल जू प्रसन्न रहैं॥

(समीक्षा)—क्या हमारे जोशी जी दिखा सकते हैं कि जिन लोगों में कुण्डली नहीं मिलाई जाती जैसे ईसाई मूसाई इत्यादि में से किसी अच्छे लड़के को कुरूप लड़की नहीं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्याही जाय प्यारे ! यह तो सर्वत्र भाग्यानुसार है कि जो लोग जन्मपत्र नहीं मिलाते उन में भी सैकड़ों लोग इस चिन्ता में पड़े मिलेंगे कि हमारे लड़के को अच्छी बहू न मिली हाय; बेटा नाराज है। तो अपनी प्राचीन रीति में दोष लगाना आप की बेसमझी नहीं तो और क्या है ? ॥

पर पाठक ध्यान रक्खें कि सनातन धर्म की ठीक ठीक रीति से विवाह करने में धोखा नहीं हो सक्ता। यह कुण्डली के ठीक होने पर अच्छा ज्योतिषी सब बातें ठीक २ बिना कन्या के देखे ही बता सकता है। कितनी भाग्यवती होगी और कैसा रूप है कैसा स्वभाव है इत्यादि चिन्ह (कुण्डली) ठीक हो फिर कभी धोखा न होगा इसी कारण हम सनातन धर्मी इस रीति को मानते हैं ॥

(ज्यो० च० पृ० १३ पं० १५) दो लड़कियों में सौतिया डाह हुआ उनमें से एक जादूगर की खोज में गई आज कल बीसवीं सदी में जादू के बाप का क्या चलता है अफीम खाकर सो रही ॥

(समीक्षा) ज्योतिष चमत्कार पृष्ठ १५३ में आपने लिखा है कि एक आदमी को तिजारी ज्वर आता था मैं ने कहा कि मुझे मन्त्र आता है। एक लम्बा जूता लेकर इतवार के दिन तड़के उसे एक घूंट पानी पिलाया और कहा कि तेरा ज्वर गया उसे विश्वास होगया और ज्वर छूट गया। पाठक जादू में ताकत नहीं सुनी जाती पर हमारे डिपटी साहब का जूते का प्रभाव २० वीं सदी में भी अपूर्व देखा। वाह ! वा ! यह तो आपने जादू को मात देदी ॥

(जोशीजी०) एक भले मानस ने अपनी लड़की बड़े प्रेम से पाली उसे अंगरेजी जूते और कपड़े पहनाये और पढ़ाने को पण्डित रक्खे। जब व्याह का समय आया तब प्रथम तो लड़के न मिले मिले भी तो ज्योतिषी जी ने कह दिया कि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विध नहीं मिलती। तबतो उसकी आंखें खुली कि मुझे लड़की के ब्याह का अधिकार नहीं। किसी बुद्धिहीन गधे से भी विधि मिल जाय तो वही करना पड़े। इत्यादि यह कथा नहीं सच्ची बात है कहो तो इस भले मानस का नाम बतादूं॥

(समीक्षा) इस वे सिर पैर की कथा से आप ज्योतिष का खण्डन नहीं कर सकते हैं कथा भी आपने खूब बनाई लड़की को अंगरेजी कपड़े बूंट पहिनाये विना यहांभी काम न चला "सच है" मुंह से निकलेगी, वही बात जो आदत होगी क्या अच्छी २ रेशमी साड़ी व अच्छे आभूषण लड़कियों के लिये नहीं रहगये थे यदि सच्ची कथा है तो नाम उस भले मानस का लिख देते॥ पाठक ? आज तक कोई केवल विधि न मिलने से कुमारी रह गयी यह बात आपने कभी नहीं सुनी विद्वान् के लिये पढ़ी हुई लड़की, किसान के लिये मजदूरिन, होटल में खाने वाले बाबू साहब के लिये बूंट पहिरने वाली लड़की, यथा योग्य अवश्य मिल जाया करती है। जहां इस से विपरीत हो जाय तो अन्य का दोष समझो या भाग्य का, सो विधि न मिलाने वाले अन्य लोगों में भी हो जाया करता है क्या विलायत में किसी निर्बुद्धि से अच्छी रूपवती लड़कियां नहीं व्याही जाती ? वहांविधि मिलाने को कौन जाता है॥

मैंने एक साहब को देखा है जो कि साधारण पढ़े लिखे हैं और रूपवान भी विशेष नहीं मिजाज बड़ा तेज है हालमें अपना विवाह एक अच्छा मेम से कर लाये हैं। मेम साहिब रूप में भी साहब से कई दर्जे उत्तम है विद्या में भी अधिक है। इस पर भी साहब बहादुर रात दिन डंडे और हन्टर से पीटते हैं मेम साहबा रोती हैं। ज्यो० च० पृ १४ पं० २०) बहुतेरे हीन वर्ण के ब्राह्मण बन गये जो कोई बढ़ गया भला मानस कहलाने लगा उसे ज्योतिष मानना पड़ा, जो घटगया नीच जाति में जामिला उसके बाप दादों ने ज्योतिष मान रक्खा था, इस लिये ज्योतिष का प्रभाव अबलों लोगों में कुछ २ कुछ चला आता है॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(समीक्षा) कितने हीन वर्ण (शूद्र) आज तक ब्राह्मण हुए हैं?। साफ २ लिखिये आज तक तो आर्यसमाजियों ने भी किसी जन्म के शूद्र को ब्राह्मण नहीं बनाया, यदि हमारे जोशी जी ने किसी शूद्र को व्यवस्था देकर ब्राह्मण बनाया होय तो वही जानें। इस विना प्रमाण की बात को कोई बुद्धिमान् नहीं मानेगा, ज्योतिष का प्रभाव सब लोगों पर बराबर है जो लोग पीढ़ियों से बढ़े हुये हैं वे सभी मानते हैं॥

(ज्यो० ष० पृ० १५ पं० ६) बस उन्हों ने समझ लिया कि अपने उद्योग से कुछ भी नहीं होता जो करते हैं ग्रह करते हैं। समझलो कि पौरुष हीन होने का बीज बोया गया है। इसी रीति से पुश्तहां पुश्त तक दैव दैव कहते गये, लोगों ने उद्यम को निष्फल हमझा भाग्य और किस्मत को पूजने लगे॥

(समीक्षा) ज्योतिष के किसी ग्रन्थ में पुरुषार्थ को छोड़कर भाग्य के भरोसे बैठना नहीं लिखा है। किन्तु उपाय और उद्योग करने का उपदेश ज्योतिष अवश्य देता है। पाठक गण! ध्यान देवें ज्योतिष का अभिप्राय यह है कि इस जन्म में जो कर्म किये जायंगे उसका फल इस जन्म में अधिक और शेष परजन्म में अवश्य मिलेगा। जैसा कि भगवद्गीता में लिखा है कि "जिन योगियों का योग इस जन्म में सिद्ध न हुआ उन को दूसरे जन्म में स्वयं ज्ञान होकर योग की बातें विदित हो जाती हैं॥ यथा,,

शुचीनांश्रीमतांगेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते ।
अथवायोगिनामेव कुलेभवतिधीमताम् ॥
तत्रतंबुद्धिसंयोगं लभतेपौर्वदेहिकम् ।

ज्योतिष के अनुसार उन के ग्रह ऐसे पड़ते हैं कि जिस से योगी होना सिद्ध हो, इसी प्रकार जिन लोगों ने अन्यजन्म में शुभ वा अशुभ कर्म किये हैं उन का फल इस जन्म में जो कुछ होगा भला या बुरा वह इस ज्योतिष से जाना जायगा॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

"यदुपचितमन्यजन्मनि शुभाशुभं तस्य कर्म्मणः पक्तिं व्यञ्जयति शास्त्रमेतत् तमसि द्रव्याणि दीप इव ॥

इसी प्रकार जो २ पूर्वजन्म कृत पाप कर्मों के अशुभ फल इस जन्म में होवेंगे उन के निवारण का उपाय अनेक प्रकार के यत्न बता करके आने वाले कष्टों से बचाकर ज्योतिष शास्त्र शुभ कर्म तथा पुरुषार्थ करने का उपदेश देता है। जैसे किसी के ग्रह अल्पायु तथा महारोगी होने के पड़े हों तो उस को ज्योतिषी यह उपाय बतावेगा कि योग और ब्रह्मचर्य्य करो इस से तुम्हारी आयु बढ़ेगी, और पाठ पूजा आदि अनुष्ठान नित्य करो इस से अरिष्ट तुम्हारा निवारण होगा। जैसे मार्कण्डेय पुराण में लिखा है–

शान्तिकर्म्मणिसर्वत्र तथादुःस्वप्नदर्शने।
ग्रहपीड़ासुचोग्रासु माहात्म्यंशृणुयान्मम ॥

अर्थात् अशुभ स्वप्नादिकों के दर्शन में तथा सूर्यादि ग्रहों की कठिन पीड़ाओं में मेरे इस माहात्म्य को श्रवण करें।

योगाभ्यास करने से आयु का बढ़ना तथा रोग और जरा का नाश होना वेद और उपनिषदों में भी अनेक जगह लिखा है ॥

"नतस्यरोगोनजरानमृत्युः प्राप्तस्ययोगाग्निमयं शरीरम्,, इत्यादि ॥

(ज्यो० ख० पृ० १५ पं० १७) हिन्दुओं को तो आंख खोलने का भी अवसर नहीं मिलता जो कुछ अपने नाम चिट्ठी पुर्जी में आया उसी में सन्तोष करना पड़ा। पर पुर्जी के भरोसे कौन जाति धनाढ्य हुई ? ॥

(समीक्षा) सत्य है "घर की खांड़ खरहरी चोरी का गुड़ मीठा" जिन हिन्दुशास्त्रों में अशुभ लक्षण वाली तथा रोगिणी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व कुरूपा कन्या के साथ विवाह करने में महादोष लिखा है और जो हिन्दू लोग विना कन्या को देखे भाले जन्मकुण्डली का (चिट्ठ) तक नहीं मांगते और विवाह होने से पूर्व ज्योतिषी पण्डितों से जन्मपत्री दिखा कर गुण भाग्यादि का विचार करा लेते हैं। फिर उन हिन्दुओं को आप कहते हैं कि आंख उठाने का अवसर नहीं मिलता, धन्य है। अब यहां से गृह्य सूत्रों के आधार पर कन्या वर की परीक्षा का कुछ विचार जो कि विवाह के साथ विचारा जाता है लिखते हैं। अपने शास्त्रों से विदित होता है। देखिये आपस्तम्ब गृह्यसूत्र में लिखा है कि पन्द्रह १५ प्रकार की कन्याओं से विवाह न करै॥

(आपस्तं० ३ खण्ड सू० ११) दत्तां गुप्तां द्योतामृषभां शरभां विनतां विकटां मुण्डां-भाण्डूषिकां साकारिकां रातां पालीं मित्रां स्वनुजां वर्षकारीं वर्जयेत् ॥ ११ ॥

अर्थात् अन्यको दान दिई हुयी अन्यके साथ विवाहित, छिपी हुई जिसको पितादि अशुभ लक्षणों के कारण गुप्त रखते हों, द्योतां भेंडी विषमदृष्टि वाली, ऋषभ नाम ऋषभ के स्वभाव वाली, शरभा अतिसुन्दरी (क्यों कि ऐसी स्त्री को जार-लोग विशेष चाहते हैं) अत एव नीति में भी कहा है (भार्या रूपवती शत्रुः) विनतां टेढ़े शरीर वाली, विकटां फैली जाघों वाली मुण्डा केश मुण्डित वाली, भण्डूषिका कठोर अथवा बौनी, साकारिका अन्यकुलमें पैदा और अन्य कुलमें पाली हुई, राता नाम अतिकामिनी (याने बाल्यावस्था में ही चपल स्वभाव वाली) रतिशील, पाली पशु ओं को पालने वाली, मित्रा बहुतों से मित्रता करने वाली, स्वनुजा-जिसकी छोटी बहिन बहुत दर्शनीय हो-वर्षकारी-नियत समय गर्भमें कम रह कर पैदा हुई हो इन पन्द्रह प्रकारकी कन्या ओं से विवाह न करै ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रश्न-क्या इस प्रकार की कन्या उम्र भर कुमारी रहेंगी, (उत्तर) नहीं २ इसी प्रकार के वाँसे इनका ठीक २ साम्य हो जायगा ॥

प्रियपाठकः इस ग्रन्थ को समाजी लोग भी मानते हैं हमारे मित्र जोशी जी तो सनातन धर्मी हरिभक्त हैं। अवश्य ही इसे मानेंगे। और देखिये चिट्ठीपुर्जी भी ॥ (आपस्तं० खं ३ सू० १४ से १८ तक)

शक्तिविषये द्रव्याणि प्रतिच्छन्नान्युपनिधाय ब्रूयादुपस्पृशेति ॥ १५ ॥ नानाबीजानि संसृष्टानि वेद्याः पांसून् क्षेत्राल्लोष्टं शकृच्छ्मशानलोष्टमिति ॥ १६ ॥ पूर्वेषा-मुपस्पर्शने यथा लिङ्गं वृद्धिः ॥ उत्तमं परिचक्षते ॥ १७ ॥ बन्धुशीलक्षणसम्पन्नः श्रुतवानरोग इति वरसम्पत् ॥१८॥

अर्थात् शक्ति नाम घर वा कुटुम्बके लोगों की सम्मति होतो आगे लिखे क्रमसे इस प्रकार का भी साम्य करे। पांच गोला बनावे उन को एक जगह धरके वर कन्या से कहै कि इनमें से एक उठाले ॥ १४ ॥ धान गेहूं जौ आदि मिलेहुये अनेक अन्न, वेदी की धूलि,खेत का ढेला, गोवर और प्रसशान की मट्टी इन पांचों को छिपा के उठवावे ॥ १५ ॥ इनके उठाने में अन्न का ढेला उठावै तो सन्तानों की वृद्धि, वेदी की धूलि उठावै तो यज्ञादि कर्म काण्ड की वृद्धि,खेत के ढेला से धनधान्य की वृद्धि, गोवर से पशुओं की वृद्धि और मरघट की मिट्टी उठाने से मरण की वृद्धि जानै ॥१६॥ उत्तम नाम अन्तके मरघट के ढेला उठाने को आचार्य लोग बुरा कहते हैं उससे वर कन्या दोनों अथवा एक का अवश्य मरण होगा ॥ १७ ॥ भाई आदि अच्छे कुल वाली अच्छे शील स्वभाव वाली और हाथ रेखादि चिह्न जिसके अच्छे हों यह उत्तम हो महर्षि पतञ्जलि के लेखा नुसार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भी (पतिघ्नी पाणिरेखा) आदि न हों तथा क्षयी पैत्तिक मृगी आदि असाध्य रोग वाली नहो ऐसी कन्या से विवाह करे॥१८॥ कुलीन सुशील शुभ लक्षणों वाला वेदशास्त्रों का विद्वान् निरोग ये वर के शुभ लक्षण जानो ॥ १९ ॥

पाठकगण! इस ऊपर के लेख से शकुन प्रश्नादि तथा सामुद्रिक सभी विषय सिद्ध हो चुके हैं। चिट्ठी पुर्जी भी सिद्ध होगई जोशी जी तो आपस्तम्ब को भी किसी यवन या ईसाई का बनाया कह सकते हैं पर हमारे आस्तिक पाठक अवश्य ही इस लेख से प्रसन्न होंगे तथा लाभ उठावेंगे ॥

(ज्यो० च० पृ० १७)–मथुरा के चौबे लोगों ने ज्योतिष को यमुना जी में डुबो दिया, न डुबाते तो वंश का निर्वंश होता, मैथिल लोगों ने भी ज्योतिष को अलग कर दिया ज्योतिष देख कर चलते तो कभी निर्वंश हो जाते॥

(समीक्षा) मथुरा के चौबे मैथिल ब्राह्मण सभी लोग ज्योतिष को मानते हैं अनेक चौबे स्वयं बड़े २ ज्योतिषी हैं। सैकड़ों चौबे मैथिल ब्राह्मणों के जन्मपत्र मैंने स्वयं देखे हैं। पर आप को बेप्रमाण बात लिखना योग्य न था। अब रहा वंश का निर्वंश होना, सो जोशी जी जरा शोलिये घर के बड़े बूढ़े आप के यहां भी अब तक ज्योतिष मानते हैं। पर ज्योतिष मानते २ आज तक वंश बराबर क्यों चला आता है?। हमारे शास्त्र में तो स्वधर्म में अरुचि और अनाचार तथा नास्तिकता करने से वंश का नाश होना लिखा है। ज्योतिष मानने से निर्वंश होते तो जोशी लोग कभी के निर्वंश हो गये होते ॥

(ज्यो० च० पृ० १७)–शरहीन स्त्रियों में मौसेरे भाई बहिनों का विवाह हो जाता है चलो निर्वंश होनेसे यही अच्छा हुवा ??–(समीक्षा)–यदि आपकी बात सत्य है तो शरहीन स्त्री अच्छा काम नहीं करते शिव २ हरे २ भाई बहिन से वंश चलाने की अपेक्षा निर्वंश होना हजार दर्जे अच्छा है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(ज्यो० च० पृ० १८)-ज्योतिष के अनुसार लड़की का व्याह लड़कपन में होना चाहिये ६ पुश्त तक नातेदारी में व्याह नहीं हो सकते। बहुतेरे लोगों में कृतसम्बन्ध इतने कर रहगये हैं कि एक लड़की के लिये ३।४ वर बड़ी कठिनता से मिलते हैं। ज्योतिषी कहदेते हैं इन की विधि नहीं मिलती इत्यादि ॥

(समीक्षा)-सनातन धर्मी हरिभक्त जी ! कन्याका विवाह लड़कपन में करने की आज्ञा केवल ज्योतिष ही नहीं किन्तु धर्मशास्त्र देताहै ? देखिये सम्वर्तस्मृति श्लो० ६८

विवाहोह्यष्टवर्षायाः कन्यायास्तुप्रशस्यते ।
तस्माद्विवाहयेत्कन्यां यावन्नर्त्तुमतीभवेत् ॥६८॥

पाराशरस्मृ०अ०७-प्राप्ते तुद्वादशेवर्षेयःकन्यांनप्रयच्छति
मासिमासिरजस्तस्याः पिबन्तिपितरोऽनिशम्॥७॥
माताचैवपिताचैव ज्येष्ठभ्रातातथैवच
त्रयस्तेनरकंयान्ति दृष्ट्वाकन्यांरजस्वलाम् ॥ ८ ॥

पाठकगण ! इसी धर्मशास्त्र के अनुसार काशीनाथ जी आदि नेभी स्मृतियों के ही आधार पर "अष्टवर्षाभवेद्गौरी,, इत्यादि-लिखा है। अब रही नातेदारी की बात तो क्या आप भी अरहीन क्षत्रियों की भांति मौसेरे भाई बहिनों का व्याह चलाना चाहते हैं ? ॥

क्योंकि आप लिख भी चुके हैं कि निर्वंश होने से तो यही (मौसेरे भाई बहिनों का व्याह) अच्छा राम २ गुसांई जी का वाक्य याद आता है ॥

कलिकाल विहाल किये मनुजा ।
नहिंमानें कोऊ अनुजा तनुजा ॥

जोशी जी को क्या चिन्ता पड़ी वाह ! वाह !! कृत सम्बन्ध क्या पहिले नहीं होते थे आप क्यों घबड़ाते हैं ? एक कन्या के लिये अब भी अनेक वर मिल सकते हैं और बराबर विधि भी मिलता है ॥ सत्य है-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जेहि जब दिगभ्रम होइ खगेशा ।
सो कह पश्चिम उगेउ दिनेशा ॥

(ज्यो० च० पृ० १९ पं १४)–कोई ६० वर्ष का बूढ़ा ज्योतिषी की गरम सूठ करै तो लड़की उसी के गिर मार दिई जाय इत्यादि–(समीक्षा) यह कथन भी आप का निर्मूल है। कोई भी पण्डित रिश्वत लेकर बूढ़ों से विधि नहीं मिलावेगा। केवल ६० वर्ष के बूढ़ों को लड़की ऐसे लोग व्याहते हैं जो लोग रुपये खा कर कन्या को बेचने वाले होते हैं ! हम आशा करते हैं कि हमारे जोशी जी लोगों को बुरा समझते होंगे आप तो सिर्फ ज्योतिषी पण्डितों से चिढ़े। जिन विचारों ने परिश्रम से अनेक ग्रन्थ गणितादि के बनाये। तथा अनेक यंत्र भूगोल खगोल तूरीय इत्यादि रचे। देश देशान्तरों में भारतवर्ष की कीर्त्ति फैलाई। अब भी पञ्चांग गणना इत्यादि परिश्रम केवल लोकोपकार के लिये ही ज्योतिषी लोग करते हैं। ६। ६ महीने बड़ा परिश्रम करके पैसे का भी लाभ नहीं होता। हाय ऐसे निर्दोष विद्वानों को उन्हीं के वंश में जन्म लेकर आपने कलंक लगाया ॥

पाठक महाशय ! फलित और गणित वेद भगवान के दो नेत्र हैं। इस शास्त्र की जो निन्दा करै उसे समझो वेद भगवान के नेत्र फोड़ने का उद्योग करता है। जिस मनुष्य को अजीर्ण हो जाता है उसे अन्न जहर मालूम पड़ता है। इसी प्रकार जिसे वायुकोप (वायु) की बीमारी हो जाती है वह सभी अपने इष्टमित्र कुटुम्ब के लोगों को मारने दौड़ता है। उसे वे शत्रुरूप दीखते हैं इसी प्रकार जिन लोगों को अज्ञानतारूप अजीर्ण " अथवा वायुरोग हो जाता है " उन को ज्योतिष धर्मशास्त्र आदि के सभी विषय विषरूप जान पड़ते हैं। और पण्डित, शास्त्री, ज्योतिषी, ये शत्रु के तुल्य विदित होने लगते हैं। हा ! हा ! ये लोग न होते तो स्वेच्छाचार होता

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पर ये धोती पगड़ी वाले बुरे हैं इत्यादि शोचते हैं ॥ गुसांई तुलसीदास जी ने सत्य कहा है ॥

बातुल भूत विवश मतवारे । ते नहिं बोलहिं बचन संभारे ॥

॥ दूसरा अध्याय समाप्त ॥

॥ तीसरा अध्याय ॥

(ज्यो० च० पृ० २२ पं० १९)-यह ज्योतिष क्या है मैंने किसी अंगरेजी समाचार पत्र में पढ़ा था जो लोग मई के महीने में पैदा होते हैं वे लम्बे और दीर्घायु होते हैं इसी प्रकार सब महीनों का फल लिखा हुवा था इत्यादि ॥

(समीक्षा) जोशी जी ! अंगरेजी समाचार पत्र में ज्योतिष के किसी ग्रन्थ के आधार पर यह स्थूल विचार लिखा होगा यह कोई सूक्ष्म बात नहीं है ज्योतिष क्या है इस का उत्तर आप अपनी भूमिका में पढ़िये । जिस के बल से वाल्मीकि मुनि ने रामचन्द्र के जन्म से पूर्व रामायण बना दी थी जिसे आप स्वयं स्वीकार कर चुके हैं । पाठक महाशय इस अध्याय में लिखने योग्य और कोई विशेष बात नहीं ॥

॥ तीसरा अध्याय समाप्त ॥

चौथा अध्याय

(ज्यो० च० पृ० २४)-चीनवालों ने गणित और फलित विद्याओं को सीखने का बहुत उद्योग किया, चीन में आकाशमण्डल २८ भागों में बांटा है जिसे राशिचक्र कहते हैं । ईसवी से ३३१७ वर्ष पहिले महाराज याओ के समय में सीख लिया था इत्यादि ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(समीक्षा) जोशी जी? गणित फलित क्या सभी विद्या भारतवर्ष से सारे भूमण्डल में फैली हैं। सभ्यता सुशिक्षा भारतवर्ष के ब्राह्मणों ने सर्वत्र फैलाई हैं। देखिये मनुजी ने क्या लिखा है ॥

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्वंस्वंचरित्रंशिक्षेरन् पृथिव्यांसर्वमानवाः ॥

महाराज यात्रो से पहिले के अनेक ग्रन्थ अब भी भारतवर्ष में विद्यमान हैं। आप को तो ईसामसीह के जन्म से ही वर्ष गणना करनी पड़ती है। पर हमारे यहां तो सृष्टि के आरम्भ से वर्षों की गणना होती है। महाराज विक्रम से पहिले युधिष्ठिर महाराज का शक माना जाता था देखिये शककारों का वर्णन त्रिकालदर्शी ज्योतिषियों ने इस प्रकार किया है॥

उक्तञ्च,,युधिष्ठिरोविक्रमशालिवाहनौ, नराधिनाथोविजयाभिनन्दनः । इमेनुनागार्जुनमेदिनीविभुर्वलिःक्रमात्षट्शककारकाः कलौ ॥

युधिष्ठिराद्वेदयुगाम्बराग्नयः ३०४४
कलम्बविश्वे १३५ भूखखाष्टभूमयः १८०००॥
ततोयुतंलक्षचतुष्टयं ४००००० क्रमात् ।(ज्यो०वि०)
धराद्रगष्टा ८२१ विति शाकवत्सराः ॥

युधिष्ठिरोभूद्भुविहस्तिनापुरे,
ततोज्जयिन्यांपुरिविक्रमाह्वयः ॥
शालेयधाराभृतिशालिवाहनः,
सुचित्रकूटेविजयाभिनन्दनः ॥ ॥

(ज्यो० च० पृ० २४ पं० १७)-संस्कृत में गणित का सब से पुराना ग्रन्थ ज्योतिष है जिसे लगंड ने बनाया इस में आकाश भूमण्डलको २७ नक्षत्रों में बांटा है इत्यादि ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(समीक्षा) भारतवर्ष के पण्डित गण ! आपने कभी लगंढ का नाम भी सुना है? ये लगंढ कौन थे? कब हुए? इन की बनाई हुई पुस्तक शायद जोशी जी की लाइब्रेरी में होगी। किसी ऋषि मुनि का नाम न लेकर आप इस लगंढ का नाम कहां से लाये? ज्योतिष के ग्रन्थों का अवलोकन जोशी जी ने किया होता तो ऐसी ऊट पटांग बात न लिखते। इस का प्रमाण जनार्दन जी को लिखना था। ईसामसीह से कितने वर्ष पहिले ये लगंढ महाशय हुए ये और कौन ग्रन्थ इन्हों ने बनाया ॥

पाठक महाशय ! देखिये अति प्राचीन गणित का ग्रन्थ सूर्य्यसिद्धान्त है ॥ उक्तञ्च

शास्त्रमाद्यन्तदेवेदं यत्पूर्वंप्राहभास्करः ॥
युगानांपरिवर्त्तेन कालभेदोऽत्रकेवलम् ॥

अर्थात् पहिले भास्कर (सूर्य्य भगवान्) ने जो कहा है वही आदि शास्त्र है केवल युग बदलने के हेतु से कालभेद हुआ है। इस बात को सनातनधर्मी पण्डित ही नहीं किन्तु आर्यसमाजी भी मान चुके हैं कि सूर्यसिद्धान्त सत्ययुग का बना गणित के ग्रन्थों में सबसे प्राचीन है। जोशी जी ने लगंढ का नाम जो लिखा है वह उनके ज्योतिषचमत्कार का ही चमत्कार है ॥

(ज्यो० च० पृ० २५ पं० १४) चान्द्रमान को सौरमान से मिलाने में घट बढ़ अवश्य ही होगी हिन्दुओं ने अपने आदि ग्रन्थों में चान्द्रमान ही लिया है ॥

(समीक्षा)–जोशी जी आपके लगंढ के बनाये हुये ग्रन्थ में केवल चान्द्रमान लिखा होगा हमारे यहां तो ब्राह्म दैव पित्र्य प्राजापत्य बार्हस्पत्य सौर सावन चान्द्र और नाक्षत्र ये नौ मान माने जाते हैं केवल चान्द्रमान ही नहीं देखिये सूर्य्य सिद्धान्त अ० १४ श्लो० १

ब्राह्मंदिव्यंतथापित्र्यं प्राजापत्यंगुरोस्तथा ।
सौरंचसावनंचान्द्र मार्क्षंमानानिवैनव ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(ज्यो० च० पृ० २५ पं १६)–पुराने ग्रन्थों में कहीं गणित का वर्णन भी नहीं है, हां नक्षत्रों के नाम वेद और ब्राह्मण में हैं राशियों के नाम रामायण और महाभारत में भी हैं। गणित ज्योतिष ही आदि ज्योतिष है, पीछे से इन्हीं २७ नक्षत्रों में से किसी को शुभ और किसी को अशुभ मानने लगे ॥

(समीक्षा)–जोशी जी ! पुराने ग्रन्थों का आप दर्शन करते तो ऐसा कभी न लिखते। सच पूछो तो आपने केवल रामायण महाभारत आदि का नाम ही सुना है। वेद ब्राह्मण तो दूर रहे किन्तु अतिलघु संस्कृत के ग्रन्थों में रघुवंश भी आप का पढ़ा होता तो आप ऐसा न लिखते देखिये रघुवंश के तृतीय सर्ग में जिस समय महाराज रघु का जन्म हुआ उस समय के ग्रहों का वर्णन है ॥

ग्रहैस्ततःपञ्चभिरुच्चसंश्रयै रसूर्य्यगैःसूचितभाग्यसम्पदम् । असूतपुत्रंसमयेशचीसमा त्रिसाधनाशक्तिरिवार्थमक्षयम् ।

और देखिये वाल्मीकिरामायण में भी इसी प्रकार भगवान् रामचन्द्र जी के ग्रहों का वर्णन है ॥

वा० रामायण वा० कां० स० १७ श्लो० ८ । ९ । १०

ततश्चद्वादशेमासे चैत्रे-
नावमिकेतिथौ। नक्षत्रे-
ऽदितिदैवत्ये स्वोच्चसं-
स्थेषुपञ्चसु ॥ ग्रहेषुकर्कटे-
लग्ने वाक्पताविन्दुनास-
ह। कौशल्याऽजनयद्रा-
मंदिव्यलक्षणसंयुतम् ॥

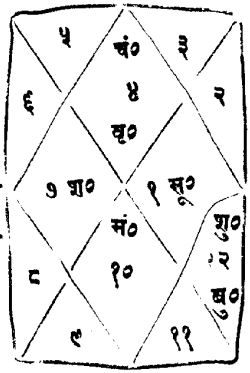

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ—चैत्र शुक्ल नवमी तिथि तथा पुनर्वसु नक्षत्र में भगवान् रामजीका जन्म हुआ पांचग्रह उच्च के विना अस्त पड़े हुए थे। कर्क लग्न था बृहस्पति तथा चन्द्रमा लग्न में पड़े हुए थे। ऐसे समयमें कौशल्या ने रामचन्द्र जी को उत्पन्न किया ॥अन्यच्च,

पुष्येजातस्तुभरतो मीनलग्नेप्रसन्नधीः।
सार्पेजातस्तुसौमित्रिः कुलीरेऽभ्युदितेरवौ॥इत्यादि

जोशी जी ने तो अंगरेजी का कोई तर्जुमा रामायण का पढ़ा होगा। यदि पूरा तर्जुमा भी देखा होता तो रामायण में केवल राशियों का नाम है ऐसा न लिखते। अब वेद और ब्राह्मणग्रन्थों से भी ग्रहशान्ति आदि का वर्णन किया जाता है॥

(अथर्व० कां० १९। ९। ७)–शन्नोमित्रःशं वरुणःशंविवस्वांञ्छमन्तकःउत्पाताःपार्थिवान्तरिक्षाः शन्नोदिविचराग्रहाः॥अथर्व० का०१९। ९।७ नक्षत्रमुल्काभिहतंशमस्तुनः॥ १९॥ ९॥९॥

शन्नोग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्याश्चराहुणा।
शन्नोमृत्युर्धूमकेतुः शंरुद्रास्तिग्मतेजसः॥१९।९।१०

आरेवतीश्चाश्वयुजौभगंमआमेरयिंभरण्य आवहन्तु। १९। ७। ५।

अष्टाविंशानिशिवानि शग्मानिसहयोगंभजन्तु मे। योगंप्रपद्येक्षेमंच क्षेमंप्रपद्येयोगंच। नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु। १९। ८। २

स्वस्तमितंमेसुप्रातः सुसायंसुदिवंसुमृगंसुशकुनं मे अस्तु॥ ३॥ अथर्ववेदे। १९। ६। ७ से १८। ९ तक।

भाषार्थ–मित्र, वरुण, विवस्वान्, अन्तक अर्थात् काल, पृथ्वी, अन्तरिक्ष, के उत्पात और आकाश में फिरने हारे ग्रह

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हमारा कल्याण करें १ नक्षत्र उल्कापात से हम को कल्याण रहे २ ग्रह चन्द्रमा आदित्य राहु मृत्यु (धूमकेतु) (केतु) और रुद्र हमारा कल्याण करें ३ रेवती अश्विनी भरणी आदि हम को ऐश्वर्य और धन देवें ४, अष्टाईस नक्षत्र योग रातदिन हम को सुखकारक हों ५ प्रातः सायंकाल अच्छे शकुन मुझको हों ॥६॥ शं देवीश्शं बृहस्पतिः॥११॥ देवी और बृहस्पति कल्याण करें ॥

देखिये यदि ग्रह दुःख नहीं देते तो उन की शान्ति के अर्थ प्रार्थना करनी क्यों है ? क्या यह अनर्थ प्रलाप है ?। कभी नहीं। वेद में प्रार्थना इसी कारण है कि ग्रहादि शान्त भी हो जाते हैं और जैसे मनुष्य के कर्म होते हैं तदनुसार ही ग्रह होते हैं। ग्रह और कर्म एक से ही होते हैं, ग्रहों से मनुष्यों के कर्म जाने जाते हैं, जिन के ग्रह स्पष्ट हैं शुद्ध हैं उन के कर्म प्रत्यक्ष हो जाते हैं उन की जन्मपत्री की बात कभी झूठी नहीं होती। राशियों में ग्रहों के आने से मनुष्यों के कर्मों से सम्बन्ध होता है। क्योंकि (गृह्यन्ते ते ग्रहाः) ग्रहण करते हैं इसी से उन का नाम ग्रह है। अब यहां से ग्रहशान्ति तथा हवन ब्राह्मण भोजनादि से उपद्रवों का शान्त होना ब्राह्मण श्रुति से भी दर्शाया जाता है ॥

सामवेदीयषड्विंश ब्राह्मणे पञ्चमप्रपाठके नवमः खण्डः ॥

स दिवि मन्वावर्त्ततेऽथ यदास्यतारावर्षाणि चोल्काः पतन्ति धूमायन्ति दिशो दह्यन्ति केतवश्चोत्तिष्ठन्ति गवाꣳ शृङ्गेषु धूमोजायतेगवां स्तनेषु रुधिरꣳ स्रवत्यर्धहिमान्नपततीत्येवमादीनि तान्येतानि सर्वाणि सोमदेवत्यान्यदुभुतानि प्रायश्चित्तानि भवन्ति सोमꣳ राजानं वरुणमिति–

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्थालीपाकꣳ हुत्वा पञ्चभिराज्याहुतिभिरभिजुहोति सोमाय स्वाहा, नक्षत्राधिपतये स्वाहा, शीतपाणये स्वाहा, ईश्वराय स्वाहा, सर्वपाप शमनाय स्वाहेति व्याहृतिभिर्हुत्वा सोम गायेत् ॥

भाषा—जब कभी आकाश से तारागण (सितारे) बहुत पतित हों, (टूटें) वा उल्कापात हो, वा दिशाओं में धूम्र आच्छादित रहै अथवा अग्नि लगी मालूम पड़ै, वा राहु केतु का उदय होवै, वा गऊ के सीगों से धुआं निकलै, वा अग्नि सन्तप्त रहै, वा गऊ के स्तनों से रुधिर निकलै, वा अत्यन्त हिम (पाला) दृष्टिगत हो ये महाउपद्रव के चिह्न हैं उन के शान्त्यर्थ सोम देवता का स्मरण कर हवन करै और [सोमं राजानं वरुणं०] मन्त्र से स्थालीपाक की आहुति देकर सोमदेवता के नामों से घृत की आहुति देवै पुनः व्याहृति होम करके स्वस्तिवाचन करै तो उक्त दोष शान्ति हो ॥

॥ तत्रैव द्वादशःखण्डः ॥

स सर्वान्दिशमन्वावर्त्ततेऽथ यदास्या मानुषाणामतिधृतिमतिदुःखं वा पर्वता स्फुटन्ति निपतन्त्याकाशाद्भूमिः कम्पते महाद्रुमाउन्मीलन्त्याश्यानः प्लवन्ति तटाकानि प्रज्वलन्ति चतुष्पादः पञ्चपादो भवन्तीत्येवमादीनि तान्येतानि सर्वाणि सूर्य्यदेवतान्यद्भुतानि प्रायश्चित्तानि भवन्त्युदित्यंजातवेदसमिति स्थालीपाकꣳहुत्वा पञ्चभिराज्याहुतिभिरभिजुहोति सूर्य्यायस्वाहा, सर्वग्रहाधिपतये स्वाहा, किरणपाणये स्वाहा ,ईश्वराय स्वाहा, सर्वपापशमनाय स्वाहेति व्याहृतिभिर्हुत्वाऽथ साम गायेत् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषार्थ-जो कोई पुरुष बुद्धिमान् होकर अत्यन्त दुःख में रहता हो अर्थात् कभी क्लेश रहित न हो अथवा जिस किसी को आकाश से पर्वत टूट २ गिरते मालूम पड़ते हों अथवा पत्थर पसीजैं वा पत्थर वा पाषाणपात्र टूट जांय अथवा भूकम्प होय, वा स्थूल वृक्ष मूल से उखड़ पड़ें, वा नदी का तट अग्निसम तप्त रहै चौपाये पांच २ पगों वाले हो जांय तो महान् विघ्न के लक्षण जानना। इन के शान्त्यर्थ सूर्यदेवता का पूजन करै और (उदुत्यं जातवेदसं०) मन्त्र से स्थालीपाक की आहुति देवै पुनः सूर्य्य नारायण के पांच नामों से घृत का हवन कर व्याहृति हवन करै तदनन्तर उक्त मन्त्र का अष्टोत्तर शत जप करके स्वस्तिवाचन करै तो उक्त दोष की शान्ति होवै॥

पाठक महाशय! यह दिग्दर्शनमात्र ही दिखलाया गया है। ग्रन्थवृद्धि के भय से अधिक नहीं लिखा। इन प्रमाणों से साफ २ ग्रहों की शान्ति तथा भूकम्प उल्कापात केतुदर्शन आदि की भी शान्ति वाराही संहिता आदि ज्योतिष के ग्रन्थों में जिस प्रकार वर्णित है वह स्पष्ट प्रकट हुई। किसी आस्तिक हिन्दु को इस में कुछ भी शंका न रहेगी। हठीलोग मानें या न मानैं। आयुर्वेद के प्राचीन ग्रन्थ सुश्रुत के अनुसार भी ग्रहों की पीड़ा देना तथा शान्ति का वर्णन करते हैं इस आर्षग्रन्थ को समाजी तक मानते हैं स्वामी द०जी ने भी सत्यार्थ प्रकाश के कई एक स्थलों में इस का नाम लिखा है॥

भूतविद्या नाम देवासुरगन्धर्वयक्षरक्षःपितृपिशाचनागग्रहाद्युपसृष्टचेतसां शान्तिकर्म्म बलिहरणादि ग्रहोपशमनार्थम्॥ सुश्रुतअ०१।१५

भाषा-देवता, असुर, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, पितृ, पिशाच, नाग, और नवग्रह, सूर्यादि (तथाबालग्रह) इन के लगने से पीड़ित चित्त वालों को ग्रह आदि दोष दूर करने के अर्थ शान्ति कर्म तथा बलिदान आदि कर्म भूतविद्या कहलाती है॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्यच्च। नक्षत्रपीड़ाबहुधा यथोकालाद्विपच्यते।
तथैवारिष्टपाकञ्चब्रुवतेबहुधाजनाः॥सु०अ०२८।४।

भाषा—जैसे नक्षत्र पीड़ा (ग्रहपीड़ा) बहुधा काल पाकर पकजाती है। उसी भांति अरिष्ट भी काल पाकर पक जाता है॥

अपिच-संस्थिरत्वान्महत्वाच्च धातूनां क्रमणेनच।
निहन्त्यौषधवीर्याणि मन्त्रान्दुष्टग्रहो
यथा॥ सु० अ० २३। २३॥

भाषा—बढ़ा हुवा व्रण स्थिर होने और बढ़ जाने से तथा धातुओं के आक्रमण से औषधि के गुणों को नष्ट कर देता है जैसे खोटा ग्रह मन्त्र नाम सुविचारों को नष्ट कर देता है॥ और देखिये धर्मशास्त्र के प्रवर्त्तक महर्षि याज्ञवल्क्य जी ग्रहों के आधीन सुख दुःख तथा उनका पूजन शान्ति आदि लिखते हैं॥

यस्यायस्ययदादुष्टः सतंयत्नेनपूजयेत्।
ब्रह्मणैषांवरोदत्तः पूजितापूजयिष्यथ॥८॥
ग्रहाधीनानरेन्द्राणा मुच्छ्रायःपतनानिच,
भावाभावौचजगत-स्तस्मात्पूज्यतमाग्रहाः॥९॥
या० व० स्मृ० शां० अ० ८। ९॥

भाषा—जिस को जो ग्रह प्रतिकूल हो तो वह उस ग्रह की पूजा करै। ब्रह्माजी ने इन्हैं वर दिया है कि जो इन को पूजेगा उन्हैं यह भी तुष्ट करेंगे॥ राजाओं की बढ़ती या घटती ग्रहों के आधीन है और जगत् की उत्पत्ति विनाश भी इन्हीं के आधीन हैं इस लिये इन की पूजा भलीभांति करनीचाहिये॥

श्रीकामःशान्तिकामोवा ग्रहयज्ञंसमाचरेत्।
वृष्ट्यायुःपुष्टिकामोवा तथैवाभिचरन्नपि॥९५॥
सूर्यःसोमोमहीपुत्रः सोमपुत्रोबृहस्पतिः।
शुक्रः शनिश्चरो राहुः केतुश्चेति ग्रहाः स्मृताः
॥९६॥ या० व० शां०॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषा—श्रीकाम, तथा शान्तिकाम, दृष्टि, आयु, अथवा पुष्टिकार्य, के अर्थ और शत्रु के ऊपर अभिचार करने के निमित्त, ग्रहों का यज्ञ (ग्रहयाग) करे । सूर्य सोम भौम बुध गुरु भृगु शनि राहु केतु ये नव ग्रहों के नाम हैं । सूर्य सिद्धान्त के गोलाध्याय में भी स्पष्ट है ॥

सम्पूज्यभास्करं भक्त्या ग्रहान् भान्यथ गुह्यकान्॥

सूर्य तथा अन्यग्रहों की पूजा करे नक्षत्र तथा गुह्यकों की पूजा करे ॥

पाठक महाशय ! जैसे वेद, ब्राह्मण, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, रामायणादि, के उक्त प्रमाणों से फलित की सत्यता और ग्रहों का सुख दुःख देना, उन की शान्ति साफ २ प्रकट हुई। इसी प्रकार महाभारत तथा अन्य पुराणों में ठसाठस यह विषय भरा हुआ है । २ । ४ नहीं किन्तु सैकड़ों प्रमाण हम दे सक्ते हैं, ग्रन्थवृद्धि के भय से अधिक नहीं लिखे । हमारे जोशी जी ने लिखा था कि पुराने ग्रन्थों में कहीं फलित का वर्णन नहीं, सो उस का कथन कपोलकल्पित सिद्ध हुआ । आप ने लिखा था कि पीछे से २७ नक्षत्रों में किसी को शुभ किसी को अशुभ मानने लगे, सो बात भी आप की निर्मूल होकर कट गयी। आप हरिभक्त हैं अवश्य आपने देखा होगा कि श्रीमद्भागवत में भी लिखा है कि जिस समय भगवान श्यामसुन्दर का जन्म हुआ था ग्रह नक्षत्र उस समय शुभ पड़े हुए थे अशुभ नहीं ॥

अथसर्वगुणोपेतः कालःपरमशोभनः ।
यर्ह्येवाजनिजन्मर्क्षं शान्तर्क्षग्रहतारके ॥
भा० स्कं० १० अ० ३ । २

यहां तक तो डिप्टी साहब फलित के ऊपर ही कृपा किये थे। पर यहां से आगे गणित की भी जड़ खोदने बैठे हैं ॥

(ज्यो० च० पृ० २६ पं० ८)—यूनानियों ने गणित ज्योतिष की बड़ी उन्नति किई, सूर्यसिद्धान्त वसिष्ठसिद्धान्त, रोमक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिद्धान्त, पौलस्त्यसिद्धान्त, पैतामहसिद्धान्त इत्यादि पुस्तक इसी समय के बने हुए हैं ॥

(समीक्षा)—आह वा! तो गणित विद्या भी यूनानियोंके समय से ही चली कहिये, द्वापर त्रेता में पञ्चांग गणना अथवा अन्य गणित कैसे होता था? किस ग्रन्थ से, जोशी जी! आपने खूब पता लगाया, धन्य हो! मेरी राय से तो आप एक वेद की उत्पत्ति की भी पुस्तक लिख डालिये, आप के लिये सहज है। क्योंकि लिख दिया कि वेदभी यूनानियों ने बनाये थे ॥

पाठक महाशय! ध्यान देवें कि सूर्य्यसिद्धान्त सत्ययुग में बना है * मय नामा दैत्य उस समय राज्य करता था। यदि हमारे जोशी जी सूर्य्यसिद्धान्त का अवलोकन करते तो यूनानियों के समय का बना कदापि न लिखते केवल नाम मात्र सिद्धान्तों का सुन लिया होगा ॥ देखिये—

अल्पावशिष्टेतु कृते मयो नाम महासुरः ।
रहस्यं परमं पुण्यं जिज्ञासुर्ज्ञानमुत्तमम् ॥२॥
वेदाङ्गमग्र्यमखिलं ज्योतिषां गतिकारणम् ।
आराधयन्विवस्वन्तंतपस्तेपेसुदुश्चरम्३सूर्यसि०अ०१

भाषार्थ—सत्ययुग का कुछेक अंश शेष रहते हुए महा असुर मय ने परम पवित्र रहस्य वेदाङ्गों में श्रेष्ठ समस्त ज्योतिषों के कारण रूप उत्तम ज्ञान को प्राप्त करने के लिये जिज्ञासु होकर सूर्य भगवान की आराधना रूप अति कठोर तप किया, सूर्य भगवान के प्रसन्न होने से यह ज्ञान उसे प्राप्त हुआ, वही संवाद सूर्य्य सिद्धान्त है ॥ और शिरोमणि सिद्धान्त में लिखा है कि ब्रह्मा जी ने शिशुमार चक्र की रचना किई, उसी समय ज्योतिष शास्त्र की रचना हुई, वेद के अङ्ग रचे नहीं

* नोट—अष्टाविंशाद्युगादस्माद्यातमेतत्कृतं युगम् ॥
अर्थात यह २८ वां सत्ययुग व्यतीत हुआ (सू० सि०)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सो भास्कराचार्य जी लिख जाते कि यूनानियों के समय से सिद्धान्त विद्या चली है। देखिये सिद्धान्त शिरोमणि कालमानाध्याय श्लोक ९। १०। १२॥

"वेदास्तावद्यज्ञकर्मप्रवृत्ता यज्ञाःप्रोक्तास्तेतु कालाश्रयेण। शास्त्रादस्मात् कालबोधोयतः स्याद्वेदाङ्गत्वं ज्योतिषस्योक्तमस्मात् ॥ शब्दशास्त्रं मुखं ज्योतिषं चक्षुषी श्रोत्रमुक्तं निरुक्तं च कल्पः करौ या तु शिक्षाऽस्य वेदस्य सा नासिका पादपद्मद्वयं छन्द आद्यैर्बुधैः ॥१०॥ सृष्ट्वाभचक्रं कमलोद्भवेन ग्रहैः सहैतद्गणादिसंस्थैः। इत्यादि ॥

भावार्थ-वेदोक्त यज्ञों के काल निर्णय के निमित्त यह वेदाङ्ग उपोतिष बना। शब्द शास्त्र मुख, ज्योतिष नेत्र, निरुक्त कर्ण तथा कल्प हाथ, शिक्षा नासिका और छन्दःशास्त्र पाद ये सब वेद के अंग ब्रह्मा जी ने कहे हैं।

[राशिनक्षत्र चक्र] शिशुमार की रचना किई। पाठकगण! सिद्धान्तग्रन्थों में कहीं २ फलित का भी वर्णन है॥ पैतामह सिद्धान्त भी पूर्वकाल में ब्रह्मा जी ने बनाया था उस को हम ब्रह्मसिद्धान्त से सिद्ध करते हैं। उक्तञ्च॥

ब्रह्मोक्तंग्रहगणितं महताकालेन यदखिलीभूतम्। अभिधीयतेस्फुटंतत् जिष्णुसुतब्रह्मगुप्तेन ॥

भाषा-ब्रह्मा जी की बनाई हुई उक्त ग्रहगणना प्राचीन होने से निकम्मी हो गई। इस कारण जिष्णु के पुत्र ब्रह्मगुप्त ने स्फुट (चालन) करके ब्रह्मसिद्धान्त प्रथक् बनाया। इसी क्रमसे अन्य वसिष्ठसिद्धान्त पौलस्त्यसिद्धान्त रौमसिद्धान्त सभी प्राचीन काल के ऋषिमुनियों के समय में बने हैं॥

(ज्यो० च० पृ० २७) पीछे से आर्यभट्ट ने आर्यसिद्धान्त वराह ने पञ्चसिद्धान्तिका और ब्रह्मसिद्धान्त रचे। ब्रह्मगुप्त ने

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६२८ सन् में ब्र० सि० लिखा, भास्करने ई० ११५० में शिरोमणि सिद्धान्त रचा, गणेश जी ने ग्रहलाघव बनाया, हमारे गणित की इतिश्री हुई वैसे तो और भी ग्रन्थ हैं पर मुख्य यही हैं ॥

(समीक्षा) हमारे जोशी जी ने गणित के इन ग्रन्थोंका तो अंट संट समय लिखही दिया, पर अपने पृ० २५ पं०१४ में लिखे हुए लगंट के ज्योतिष का कुछ पता न लिखा, जोषी जी याद रखिये! वराहमिहिर जी ने पञ्चसिद्धान्तिका अवश्य बनायी, पर ब्रह्मसिद्धान्त नहीं बनाया और ब्रह्मगुप्त भी ६२८ ई० में नहीं हुए, आप ने उनका समय भी ठीक नहीं लिखा है। ब्रह्मगुप्त का समय कतिपय विद्वानों ने इस प्रकार निश्चय किया है कि ब्रह्मगुप्त के समय चित्रा नक्षत्र १८३ अंश में था वराह के समय से चित्रा नक्षत्र तीन अंश पूर्व में अग्रसर हुआ है। अत एव ब्रह्मगुप्त वराहमिहिर जी से २१५ वर्ष पीछे अर्थात् सन् १५९ ई० में हुए थे और वराहमिहर जी का समय आगे लिखेंगे ॥

आप ने लिखा है कि हमारे गणित की इतिश्री हुई, सो पाठक! हमारे गणित की नहीं किन्तु इन के लगंट की इतिश्री हुई होगी। क्योंकि भास्कराचार्य के बाद भी तत्वविवेक सिद्धान्त तथा परमसिद्धान्तादि ग्रन्थ बने और कई करणग्रन्थ सारणी आदि बनीं और लघु सिद्धान्त इस से पूर्व बना है। और आर्य भट्ट सिद्धान्त भी सन् ईस्वी से कई वर्ष पहिले बन चुकाथा। कोलब्रुक साहब का मत है कि ग्रीमीच बीजगणित के आविष्कारक डिओफान टुस के समय आर्यभट्ट वर्त्तमान थे। डिओफानटुस सन् ३१९ के आगे पीछे किसी समय में हुआ था। बाबू अपूर्व चन्द महोदय ने सिद्ध किया है कि आर्यभट्टमहाराज युधिष्ठिर जी से सोलह शताब्दी के पीछे हुए ॥

(ज्यो० च० पृ० २७ पं० १४) फलित का नाम पहिले पहिल चीन और कलडिया के इतिहास में है फिर मिश्र वालों ने और यूनानियों ने सीखा इत्यादि ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(समीक्षा)–चीन तथा कलङ्किया के इतिहास में नहीं किन्तु फलित का नाम इतिहासपुराण धर्मशास्त्र और हमारे वेद ब्राह्मण उपवेदादि में भरा हुआ है। जिसे हम प्रमाण देकर पुष्ट और सिद्ध कर चुके हैं। आप भी भूमिका के पृ० १ में गर्ग, पराशर, भृगु, आदि मुनियों का नाम लेकर फलित को मान चुके हैं। पर मित्रवर ! आपके लगंढ का नाम कहीं नहीं देखा, ये महात्मा कौन थे आप ही जानते होंगे ॥

(ज्यो० च० पृ० २७ । २८)–वराहमिहिर सन् ५०६ ई० में अवन्तिका देश के कपित्थ ग्राम में उत्पन्न हुए । आदित्यदास ब्राह्मण का लड़का था यूनानियों का यश सुन कर पश्चिम को गया, वराहमिहिर ने काबुल में जाकर फलित सीखा और अवन्तिका में आकर बृहज्जातक लघुजातक रचे ।

(समीक्षा)- महाशय जी ! आपकी पुस्तक के जिस पृष्ठ को देखते हैं उसी पृष्ठ में लिखना लेख तथा वेदप्रमाण बातें देखने में आती हैं । जोशी जी ! वराहमिहिर जी सन् ५०६ ई० में नहीं, किन्तु ईसा से ५६ वर्ष पहिले हो चुके थे। हमारे डिप्टी साहब ने कहीं यह न लिख डाला कि ईसामसीह से इतने वर्ष बाद सृष्टि हुई, तथा इतने वर्ष बाद वेद बने इत्यादि इतनी कृपा की क्योंकि जितनी सारी बातें आपने लिखी हैं सभी में चमत्कार देखा । पाठक महाशयो ! वराहमिहिर जी महाराजा विक्रम के समय हुए थे, कारण कि कालिदास जी अपने ज्योतिर्विदाभरण ग्रन्थ में लिखते हैं कि विक्रम की पण्डित सभा के नौरत्न थे उनमें से वराहमिहिर जी गणक रत्न कहलाते थे॥

उक्तञ्च–धन्वन्तरिक्षपणकाऽमरसिंहशंकु वेतालभट्टघटखर्परकालिदासाः । ख्यातोवराहमिहिरोनृपतेःसभायां रत्नानिवैवररुचिर्नवविक्रमस्य ॥

भाषा–धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वेतालभट्ट, घटखर्पर, कालिदास, वराहमिहिर, वररुचि, ये राजा विक्रम की सभा में नौ रत्न थे॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्यच्च—शंक्वादिपण्डितवराः कवयस्त्वनेके ज्योतिर्विदः समभवंश्चवराहपूर्वाः श्रीविक्रमोऽर्क-नृपसंसदिमान्यबुद्धि-स्तैरप्यहंनृपसखाकिलका-लिदासः ॥ काव्यत्रयं समुदितंसुमतिकृद्रघुवंशपूर्वम् । इत्यादि

भाषा०—शंकु आदि श्रेष्ठ पण्डित अनेक कवि तथा वराहमिहिरादि ज्योतिर्विद विक्रम महाराज की सभा में थे। मैं कालिदास भी उसी सभा में मान्य बुद्धि था। रघुवंश आदि तीन काव्य मैं ने बनाये इत्यादि लिखा है ॥

पाठकगण ? कालिदास जी के कथन से भली भांति विक्रम के समय वराहमिहिर जी का होना सिद्ध हो गया। अब रही काबुल में जाकर फलित सीखने की बात सो वेप्रमाण मिथ्या बात कोई भी नहीं मान सकता। पर शोक है कि जोशी जी ने बेधड़क ऐसी झूठी बात क्यों लिखदी। वृहज्जातक आदि में कहीं भी नहीं लिखा है कि मैंने काबुल में यह विद्या सीखी, यदि आप के पास तार या पत्र वराहमिहिर जी का हाल में आया हो तो आप जानें ॥

देखिये—आदित्यदासतनयस्तदवाप्तबोधः, कापित्थकेसवितृलब्धवरप्रसादः । वृ०ज्जा०अ० २६—आवन्तिकोमुनिमतान्यवलोक्यसम्यक्-होराम्वराहमिहिरोरुचिराञ्चकार ॥ ६ ॥

भाषा—आवन्तिक देश के उज्जयिनीनगर में आदित्यदास के पुत्र वराहमिहिर ने मुनियों का मत अवलोकन कर तथा सूर्य्यनारायण से वर पाकर और अपने पिता से बोध नाम विद्या पढ़ कर यह ग्रन्थ रचा। वराहमिहिर जी साफ लिख चुके हैं कि पिता से पढ़ना मुनियों के ग्रन्थों को देख कर वृहज्जातक रचना। जोशी जी ! आप काबुल इन्हें क्यों ले चले ? ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(ज्यो० च० पृ० २८ पं० ११)—में एक विचित्र बात डिप्टी साहब ने लिखी है कि बृहज्जातक के २८ वें अध्याय के १ वें श्लोक में वराहमिहिर जी लिखते हैं ॥

पृथुविरचितमन्यैः शास्त्रमेतत्समस्तं,
तदनुलघुमयेदंतत्प्रदेशार्थमेव,, इत्यादि

अर्थात् फलित यवनेश्वरों ने विस्तारपूर्वक लिखा उसीको वराहमिहिर जी ने संक्षेप से लिखा है ॥

(समीक्षा)—जोशी जी! बृहज्जातक की पुस्तक यदि आप देख लेते तो धोखा न देते । ध्यान दीजिये तो बृहज्जातक के सब २६ अध्याय हैं २८ वां अध्याय बृहज्जातक का आज तक किसी ने नहीं सुना होगा। ये दो अध्याय डिप्टीसाहब! क्या आपने बनाये या भगवान् जी बना गये ?। सत्य कहिये चौदह १४ वां स्कन्ध भागवत भी और २० वां अध्याय गीता भी कदाचित् आप को याहिद्दाद्ट होगी ?।

पृथुविरचितमन्यैः २६ वें अध्याय के इस श्लोक का अभिप्राय यह है कि यवनादि अन्य आचार्यों ने इस शास्त्र को विस्तारपूर्वक बनाया। इस से पूर्व अपने अनेक आचार्यों के नाम वराह जी लिख चुके हैं। "आगे मुनिमतान्यवलोक्य सम्यक्" लिखते हैं। पाठक गण! आज कल का कोई लेखक योग की कोई पुस्तक लिखे उस में यह भी लिखा हो कि थियासोफी वालों ने योग फिलौसफी की अच्छी पुस्तक लिखी है। अथवा कोई लिख दे कि प्रोफेसर मैक्समूलर ने संस्कृत की कई पुस्तक लिखीं। तब क्या उस का यह अर्थ होगा? कि कर्नल अलकाट वा वीवी वसन्ता ने यह विद्या फैलाई। पहिले कोई ग्रन्थ न था। इसी-प्रकार यवनाचार्य का नाम यहां पर लिखा है। आगे जोशीजी लिखते हैं कि बृहज्जातक से पहिले कोई जातक न था, होता तो वराहमिहिर जी उन आचार्यों का कहीं नाम न लिखते?। वराह जी को फलित का जन्मदाता कहना चाहिये ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(समीक्षा)–आप ने बृहज्जातक नहीं देखा वराह जी ने सिद्धसेन विष्णुगुप्त देवस्वामी मणित्थ शक्ति जीवशर्मा सत्याचार्य इत्यादि अनेक आचार्यों के नाम लिखे हैं। देखिये बृहज्जातक ७ तथा ८ और १०

आयुर्दायंविष्णुगुप्रेतिचैव देवस्वामीसिद्धसेनश्चचक्रं । इति स्वमतेन किलाहजीवशर्म्मा" तथा सत्योक्ते ग्रहमिष्टम् ॥

और " मययवनमणित्थशक्तिपूर्वे „ इत्यादि लिखा है ऋषि मुनियों के बनाये और भी अनेक ग्रन्थ थे। गर्ग, पराशर, नारद, संहिता जैमिनिसूत्र, प्रभृति उन्हीं के आधार पर यह ग्रन्थ बना साफ लिखा है। मुनि मतानि अवलोक्य इसीप्रकार बाराही संहिता में भी पराशर गर्ग देवल आदि ऋषियों के नाम लिखे हैं शुक, मणित्थ, बादरायण, जैमिनि, सभी आचार्य-वराह जी से पहिले हो चुके थे पीछे नहीं ॥

(ज्यो० च० पृ० २८)–नीलकण्ठ जी ने फारसी में ताजक बनाया और षट्पञ्चाशिका, पारसीविलास, यवनजातक, रमलशास्त्र, केरल सारावली, और केशवी फहुली पुस्तक लिखी गयी हैं॥

(समीक्षा)–देखिये इन पुस्तकों का ठीक २ पता हम लिखते हैं षट्पञ्चाशिका वराहमिहिर जी के पुत्र ने बनायी, पारसीविलास कुछ नहीं जातकों के कुछ श्लोक नवाब खानखाना ने फारसी में बनाये, अकबर के समय की बात है कि जैसे आज कल अंगरेजी में कई ज्योतिष की पुस्तकों का अनुवाद छप गया है, उसीप्रकार ये भी हैं ॥

उसीप्रकार यवन जातक हमारे ऋषि मुनि आचार्यों का मत लेकर यवनाचार्य ने बनाया, नीलकण्ठी ताजिक ग्रन्थ है। यह विद्या भी यवनों के राज्य समय में नीलकण्ठ आचार्य ने संस्कृत में बनाकर अपने यहां लौटाई। क्योंकि यवन लोगों ने अपनी भाषा में ये ग्रन्थ बनाये और ताजिक नाम रक्खा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बहुपाल इशराफ इत्यादि नाम रखकर योगों के नाम बदल दिये। कतिपय विद्वानों का मत है कि आदित्यदास जी से पढ़ कर यवनाचार्य ने ताजिक रचे * कहा भी है ॥

उक्तञ्च–ब्रह्मणागदितंभानो र्भानुनायवनायतत्।
यवनेनचयत्प्रोक्तं ताजिकंतत्प्रचक्षते ॥

इस से स्पष्ट है कि यह विद्या हमारे ही यहां से यवनाचार्य को प्राप्त हुई थी। यवन के रचे हुए होने से ताजिक में उक्त फारशीय शब्द आगये हैं। यह बात भी ज्योतिर्विद् पण्डित मानते हैं। इसीप्रकार रमल भी यहां से ले कर यवनों ने विस्तारपूर्वक बना लिया होगा। यदि यवनों की विद्या ही रमल को मान लो तो भी विशेष हानि नहीं। कारण कि हिन्दू ज्योतिष का रमल से कुछ सम्बन्ध नहीं है॥

प्रश्न–ज्योतिष के विद्यार्थी रमल सीखने की क्यों चेष्टा करते हैं? और कई ज्योतिषी रमल से प्रश्न आदि भी क्यों करते हैं?।

उत्तर—इस में हानि ही क्या है? जातिद्वेष फलितशास्त्र में क्या? यह धर्म का विषय तो है ही नहीं, (फले प्राप्ते मूलेन किं प्रयोजनम्) यह न्याय है, आम से काम, या गुठली से, (नीचादप्युत्तमां विद्याम्) यदि कोई आज कल किसी यूरोपियन से साइन्स-आदि पढ़े या साइन्स सीखकर रेल तार चलाने लगे तो उस को बुरा समझोगे या अच्छा? थर्मामेटर से बुखार को

* यवनाचार्य ये यवन नहीं थे? किन्तु ज्योतिष के पूर्णविद्वान् बड़ेदयालु ब्राह्मण थे। इन्हें ज्योतिषविद्या फैलाने का बड़ा शौक था, पात्र कुपात्र का विचार न करके जो पास आया उसे पढ़ाया करते थे। एक समय यवनलोग ज्योतिषविद्या के जिज्ञासु हो कर इन के पास आये, इन्हों ने उन यवनों को पढ़ाया। तभी से यवनाचार्य प्रसिद्ध हुए ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जांच कोई वैद्य भी करले तो इस में क्या हानि है ?। इसीप्रकार रमल से प्रश्न करना भी समझो ॥

केशवी में कुछ २ गणित है एक ब्राह्मण की बनाई है। सारावली वराहमिहिर जी ने रची है भड्डली किसी अनपढ़ ग्रामीण मनुष्य ने बनाई है इस में भाषा के दोहा हैं ॥

(ज्यो० च० पृ०२९)-जोशी जी लिखते हैं कि वाराहीसंहिता मुझे मिली है इस के १०० सौ अध्याय हैं।" गार्गीयं शिखिचारं पराशरमसित देवलकं च,, वराह जी कहतेहैं कि इसने गार्गी शिखिचार पराशर देवल आदि से लिये हैं। इत्यादि-

(समीक्षा)-जोशी जी ! वाराहीसंहिता के भी अ० नहीं, किन्तु १०५ अध्याय हैं। मुनियों के अनुकूल इस पुस्तक को यहां आपने भी मान लिया ? धन्यवाद है ! ॥

(ज्यो० च० पृ० २९) फलित का अनुमान ग्रहण से हुआ। इस पुस्तक में लिखा है कि श्रावण के महीने में ग्रहण हो तो काश्मीर चीन यवन इत्यादि का नाश हो "काश्मीर चीन यवनान्,, तथा "काम्बोजचीनयवनान्,, इत्यादि इस से मेरा अनुमान है कि फलित चीन से चला है ॥

(समीक्षा)-आप का अनुमान ठीक नहीं है क्योंकि एक चीन का नहीं, अनेक देशों के नाम इस ग्रन्थ में लिखे हैं। देखिये-अ० १४ " अथ दक्षिणेनलंकाकालाजिनसौरिकीर्णतालि० कच०,, इत्यादि 'आग्नेयांदिशि कोशलकलिंगवङ्गोपवङ्गजठरांगाः, इत्यादि और पांचवें अध्याय में "पाञ्चालकलिङ्गशूरसेनाः,, यहां से अनेक देशों के फल वैशाख से १२ महीनों के लिखे हैं इस से चीन से फलित का चलना सिद्ध नहीं हो सकता सूर्यसिद्धान्तादि में—

उदक्सिद्धपुरीनाम कुरुवर्षेप्रकीर्तिता । पश्चिमेकेतुमालाख्ये रोमकाख्यःप्रकीर्त्तितः॥ शिरोमणौ-लंकाकुमध्येयमकोटिरस्याः । तथा-भारतवर्षमितोहरिवर्षम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इत्यादि से गणितविद्या यूरोप अमेरिका अथवा लंका से चली मानोगे क्या? नहीं २ केवल नाम उन देशों के इस में आये हैं। किसी पुस्तक में किसी देश का नाममात्र आजाने से उस ही देश से यह विद्या फैली यह कहना बेसमझी नहीं तो और क्या है? ॥

(ज्यो० च० पृ० ३०)–एक और अध्याय में भूकम्प का फल लिखा है, कि भूकम्प से किस का भला बुरा होगा। और इन्द्रधनुष के दीखने से किन २ लोगों को शुभ अशुभ होगा फलितविद्या यही है ॥

(समीक्षा)–जोशी जी ! आप शास्त्रविरुद्ध बात लिख रहे हैं। अभी इस चौथे अध्याय ही में सामवेद के २६ वें ब्राह्मण के प्रमाण से भूकम्प आदि की शान्ति के अर्थ सोमदेवता का हवन हम लिख चुके हैं (तारावर्षाणि चोल्काः पतन्ति धूमायन्ति०) तथा–आकाशाद्भूमिःकम्पते इत्यादि–जब कि वेद आज्ञा देता है कि इस दुष्ट फल की शान्ति करो। फिर आप क्यों वेदोक्त विषय की निन्दा करते हैं? मनु जी ने कहा है "नास्तिकोवेद निन्दकः,, जो वेदोक्त विषय की निन्दा करे वही नास्तिक है॥

पाठक ! अष्टमखण्ड में इन्द्रधनुष की भी शान्ति है ॥

मांणधनुःपश्येच्छशकाग्रामंप्रविशन्ति० इत्यादि

जोशी जी ! देखिये यही फलितविद्या वेद ब्राह्मण सभी के अनुकूल है या नहीं ? ॥

(ज्यो० च० पृ० ३०) फलितपुस्तकों में यवनों का बड़ा आदर किया है, "यवनेन कथितं महात्मना,,–यवनाचार्यैः "तथाह-वृद्धयवनः,, इत्यादि लिखा है ॥

(समीक्षा)–यवनाचार्य कौन थे ? यह हमारे पाठकों को पहिले ही विदित होचुका, यदि यही मान लिया जाय कि यवनाचार्य कोई म्लेच्छ थे, तब भी कोई हानि नहीं है। जोशी जी का यवनों से बड़ा प्रेम है, क्योंकि—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जेहिके जेहि पर सत्य सनेहू–सो तेहि मिलहिं न कछु सन्देहू।

फलित के ग्रन्थों में ऋषि मुनि तथा अन्य आचार्यों के नाम आप की दृष्टि में नहीं पड़ते, इस का क्या कारण है ?।

रैभ्यात्रि हारीत वसिष्ठ पराशरादीः,इत्यादि ज्यो० अ० १।१ विलोक्य, गर्गादिमुनिप्रणीतं, वराहलल्लादि कृतं च शास्त्रम् ॥

हमारे ऋषि महर्षियों को लोढ़ यवन को आप खूब ले आते हैं। पृ० ३१ पं० १२ में आप लिखते हैं कि हिन्दुओं के फलित के गुरु यही यवन अर्थात् यूनानी थे॥

जोशी जी! हिन्दुओं के फलित के गुरु तो १८ ऋषि थे। पितामह व्यास, वसिष्ठ, पराशर, नारद, गर्ग, मरीचि, मनु, अङ्गिरा लोमश, पौलिश, गुरु शौनक इत्यादि ज्योतिषशास्त्र इन महर्षियों के द्वारा प्रवृत्त हुआ, यवन अथवा यूनानी लघंट के गुरु होंगे हिन्दुओं के नहीं ॥

(ज्यो० च० पृ० ३१) अनफा सुनफा इक्कबाल इत्थशाल इस प्रकार यवनों के शब्द फलित में मिलते हैं। संस्कृत के अन्य ग्रन्थों में नहीं ॥

(समीक्षा)–जोशी जी ! ताजिक नीलकण्ठी के अतिरिक्त फलित के किसी ग्रन्थ में इस प्रकार के शब्द नहीं हैं। नील कण्ठी में इस प्रकार के शब्द होने का कारण हम पहिले लिख चुके हैं। संहिता और मुहूर्तग्रन्थ जातक आदि के ग्रन्थों में एक शब्द क्या एक अक्षर भी इस प्रकार का आप नहीं दिखा सकते। षोड़शयोगों के अतिरिक्त नीलकण्ठी में भी ऐसे शब्द कम मिलेंगे। ऐसी दशा में फलित के सभी ग्रन्थों पर टूट पड़ना आपको योग्य नहीं। पाठकगण ! एक अल्लोपनिषद् पुस्तक है जिसमें फारसी अरबी के शब्द भी आते हैं–यथा–

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अस्माल्लां इल्ले मित्रावरुणा दिव्यानि धत्ते। इल्लल्ले वरुणो राजा पुनर्ददुः ॥ हयामित्रो इल्लां इल्लल्ले इल्लां वरुणो मित्रस्तेजस्कामः ॥ इत्यादि

इसे देख क्या कोई यह कहेगा कि वेद उपनिषद् यवनों के बनाये हैं नहीं २ कदापि नहीं तो फिर थोड़शयोगरूपी अल्लोपनिषद् की सुनहरा अनका इक्कबालरूपी श्रवाओं से फलित के ग्रन्थों को यवनों ने बनाया है ऐसा कहना अनुचित है या नहीं ? ॥

इस अध्याय में जोशी जी का सारा जोर था सो इसका पूरा खण्डन हो चुका। अब वेद उपनिषद् गृह्यसूत्र, धर्मशास्त्र रामायण, सुश्रुत, आदि के प्रमाणों से फलित की प्राचीनता भारत से सर्वत्र फैलना दुष्टग्रहों की शान्ति साफ २ प्रगट हुई। और भी ऊटपटांग बातें जो २ जोशी जी ने लिखी थीं सर्वसाधारण को भलीभांति दर्शाकर ठीक २ उनका समाधान लिखदिया। पक्षपात छोड़कर समाजी भाई भी इस अध्याय को देखेंगे तो अपने चौथे नियम के अनुसार इस सत्य विद्या को मानने लगेंगे परन्तु हठ के लिये कोई औषधि नहीं हठी लोग न मानें तो विचारशीलपाठक अवश्य ही विचार सकेंगे कि हमारे जोशी जी का पक्ष कट गया, उन का मत काफूर हुआ, अन्धकार दूर हुआ ॥ चतुर्थ अध्याय समाप्त ॥

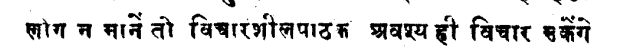

पांचवां अध्याय ॥

(ज्यो० च० पृ० ३३ पं० २०)—आर्यभट्ट भास्कराचार्य बापूदेव शर्मा शास्त्री महामहोपाध्याय सुधाकर द्विवेदी फलित को नहीं मानते हैं। लट्ठमार पण्डितों से किस का वश चलता है। वे यही कहेंगे पृथ्वी स्थिर है, तारे चारों ओर घूमते हैं ॥

(समीक्षा)—वाह वाः! यहां तो आप ने पूर्वाचार्यों को

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भी अपना शिष्य बना डाला, जोशी जी महाराज ! यदि भास्कराचार्य जी अथवा आर्यभट्टादि फलित को न मानते तो कोई पुस्तक फलित के खण्डन की अवश्य बना जाते, क्या वे आप के बराबर योग्यता वा माहात्म्य नहीं रखते थे ?। आर्यभट्ट तथा भास्कराचार्य सभी आचार्य फलित को बराबर मानते चले आये हैं। शिरोमणिसिद्धान्त का भी कहीं नाममात्र आप ने सुन लिया है। पुस्तक के दर्शन नहीं किये, शिरोमणि से भास्कराचार्य जी का फलित को मानना स्पष्ट प्रकट है। यदि आप उक्तसिद्धान्त पढ़े होते तो भास्कराचार्य जी महाराज को क्यों नास्तिकता का कलंक लगाते ?। देखिये सिद्धान्तशिरोमणि—

जानन्जातकसंहिताः सगणितस्कन्धैकदेशाअपि ।ज्यातिःशास्त्रविचारचारचतुरः प्रश्नेच किञ्चित्करः ॥ यःसिद्धान्तमनन्तयुक्तिविततं नो वेत्तिभित्तोयथा । राजाचित्रमयोऽथवासुघटितः काष्ठस्यकण्ठीरवः ॥ ७ ॥ गणिताध्याय० श्लो०७

अर्थात् सिद्धान्तविद्या गणित न जानता हो केवल फलित पढ़ा हो, ऐसा नक्षत्रसूची राजसभा में काष्ठ के सिंह अथवा चित्रवत् शोभा नहीं पाता है। गणित सहित जातकसंहिता शकुन प्रश्नविद्या को जान कर विचारने वाला चतुर ज्योतिषी राजसभा में पूजित होता है ॥

पाठक ! जातकसंहिता प्रश्नविद्या को भास्कराचार्य जी का मानना साफ २ प्रगट हो गया। इसीप्रकार आपूदेव शास्त्री जी भी फलित को मानते थे। यदि न मानते तो खण्डन लिख जाते। और अपने पञ्चांग में संवत्सरादि के फल न लिखते। रहा द्विवेदी जी का किस्सा,सो अनेक जन्मपत्र विधिमिलाने में द्विवेदी जी के साम्य किये हुए हमारे यहां (श्रीपिता जी के

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पास) बराबर आया करते हैं। हाल ही के इसी गत वैशाख में सीतापुर के एक वकीलसाहब * की कन्या और एक वर के साम्य कराने को सीतापुर अवध के प्रसिद्ध वकील बाबू छोटेलाल एम०ए० महाशय का पिता जी की सम्मति लेने के निमित्त आया है। काशी जी के अनेक पण्डितों के, तथा सुधाकर द्विवेदी जी के उन में हस्ताक्षर हैं, यह साम्य यथायोग्य है करके उन्हों ने लिखा है मैं पत्र दिखा सकता हूं। और पञ्चांग में भी द्विवेदी जी फलादेश बराबर लिखते आये हैं। तथा फलित का काम करते हैं। यदि फलित न मानते तो ये सब काम छोड़ कर खण्डन करने लगते। जो पत्र आपने उन का छपाया है उस में अवश्य कुछ माया, तथा (बड़प्पन) रचा, ऐसा अनुमान है ॥

अब पृथ्वी का स्थिर होना भी सिद्ध करते हैं लट्ठमार पण्डित ही नहीं, बड़े २ आचार्य पृथ्वी का स्थिर होना मान गये हैं। गोशी जी ! ध्यान देवें, और सिद्धान्तशिरोमणि गोलाध्याय देखें ॥

मरुच्चलोभूरचलास्वभावतो, यतोविचित्रा.
वतवस्तुशक्तयः ।

अर्थात् स्वभाव ही से पृथ्वी की स्थिरता, वायु, तथा सूर्य का चलना सिद्ध है। सूर्यसिद्धान्त में भी तारों का भ्रमण करना और पृथ्वी का स्थिर होना साफ लिखा है ॥

तन्मध्येभ्रमणंभाना-मधोधःक्रमशस्तथा ।

(भाषा)-ज्योमकक्षा में नक्षत्रों (तारों) का भ्रमण होता है।

मध्येसमन्तादण्डस्य भूगोलोव्योम्नितिष्ठति ।
विभ्राणःपरमांशक्तिं ब्रह्मणोधारणात्मिकाम् ॥

भाषा-ब्रह्मा जी की धारणात्मिका परमशक्ति के बल से

* बाबू आशाराम जी एम० ए०—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ब्रह्माण्ड के मध्यदेश में व्योम के बीच यह भूगोल स्थिरता से स्थित है। पाठकगण ! जोशी जी की सभी बातों का चूर्ण होता जाता है। नास्तिकतारूपी अजीर्ण के रोगियों को यह चूर्ण लाभदायक होगा ॥

(ज्यो० च० पृ० ३४)-जब यूनानी लोग काबुल छोड़कर चले गये तो पारसदेश के लोग इन के चेले हो गये। मेरे पास एक पारसीविलास पुस्तक है। जिस में ऐसे श्लोक-

यदामर्जखानेभवेत् आफतापोजलोलैः
गनीखूश्रहम्जवाचः।मालखानेमुस्तरी इत्यादि-

(समीक्षा)-यूनानी और पारस के लोगों ने नहीं, किन्तु अकबर बादशाह के समय नवाबखानखाना ने जातकों का तर्जुमा करके ये पद्य बनाये हैं। पुस्तक का नाम खेटकौतुक है मुम्बई के वेंकटेश्वर प्रेस में छप भी गयी है।

(ज्यो० च० पृ० ३४ पं० १०)-भड्डली के उत्पन्न होने से उन्नति हुई इन्हों ने शकुनावली लिखी है। शुक्रवार की बादली-रहे शनीचर छाय। कवि कहै सुन भड्डली बिन वर्षे नहिं जाय ॥ इत्यादि-

(समीक्षा)-पाठक गण ! समय की विचित्र गति है। किसी समय में ज्योतिष विज्ञान की इतनी उन्नति थी कि भड्डली जैसे अनपढ़ पुरुष भी भाषा में शकुन की पुस्तक लिख गये हैं। पर आज वह समय आया है कि एक ग्रेजुएट ज्योतिषी जी ने खण्डन की पुस्तक बना डाली ॥

(ज्यो० च० पृ० ३६ पं० ८)-फलित वाले कहते हैं कि मुसलमानों ने सब ग्रन्थ जला डाले यह सब झूठ है। जब कि वेद पुराण और निकम्मी पुस्तकें तक बच गयीं तो फलित को वे क्यों जलाते ? ॥

(समीक्षा)-जोशी जी फलित वाले ही, नहीं किन्तु इतिहास तथा भारतवर्ष के सभी पढ़े लिखे लोग कहते हैं कि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुसलमानों ने हमारी पुस्तकें जलादीं। हम्माम गर्म किये गये। और यहां तो आपने वेद पुराणों को भी निकम्मा लिखदिया। खलित विचारे की आप क्या परवाह करते ? जोशी जी महाराज! वेद की बहुत सी शाखा जलायी गयी हैं, ११३१ शाखाओं का आप नाम बता सकते हैं ? ॥ देखिये–महाभाष्य अ०१ पा०१

चत्वारोवेदाःसाङ्गाःसरहस्या बहुधाभिन्ना एकशतमध्वर्य्युशाखाः सहस्रवर्त्मा सामवेदएकविंशतिधा बाह्वृच्यम्। नवधाऽआथर्वणोवेद,इति-

कहिये ये शाखा कहां गयीं, वास्तव में यवनों के समय में वेद,ब्राह्मण,गृह्य सूत्र, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, ज्योतिषविद्या की सैकड़ों सहस्रों पुस्तकें नदियों में बहायीं गयीं और जलाकर नष्ट करदीं, आज तक इसी कारण अनेक देशहितैषी रोते हैं ॥

(ज्यो०च०पृ०३७)–गर्गजी के नाम से जोशी जी ने यह श्लोक लिखा है ॥

म्लेच्छाहियवनास्तेषु सम्यक्शास्त्रमिदंस्थितम्। ऋषिवत्तेपिपूज्यन्ते किम्पुनर्दैवविद्द्विजाः ॥

समीक्षा–जोशी जी ! यह लोक वाराहीसंहिता (अ०२ श्लो०१५) का है गर्ग जी का नाम आपने मिथ्या लिख कर क्या लाभ उठाया ?॥

(ज्यो०च०पृ०३७पं०९)–हिन्दुधर्म के खण्डन करने को आया। हमने उस को दशवां अवतार मान लिया। यदि महम्मद और ईसा मूर्तिपूजा को खण्डन न करते तो कदाचित् उनकी भी मूर्ति मन्दिरों में धरी मिलतीं ॥

(समीक्षा)–जोशी जी! नमस्कार, बुद्ध को हिन्दु दशम अवतार नहीं किन्तु नवम अवतार मानते हैं। पुराण तो एक तर्फ रहे गीतगोविन्द से भी इतना ज्ञान हो जाता है ॥

यथा-वेदानुद्धरतेजगन्निवहते भूगोलमुद्बिभ्रते,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दैत्यान्दारयतेबलिंछलयते शत्रुक्षयंकुर्वते।
पौलस्त्यंजयतेहलिंकलयते कारुण्यमातन्वते-
म्लेच्छान्मूर्च्छयतेदशाकृतिकृते कृष्णायतुभ्यन्नमः॥

बौद्धभगवान् ने करुणा यानी अहिंसाधर्म फैलाया। रहा ईसामसीह और महम्मद की मन्दिरों में मूर्ति रखना सो पाठक! हमारी सम्मति से तो डिप्टीसाहब एक नया मज़हब चला जाते तो स्वामी दयानन्दजी और केशवसेनचन्द्र से भी आप का नाम कम नहीं होता। केवल ज्योतिष का खण्डन करने से आपकी मुराद पूर्ण न हो सकेगी। महाराजा नल युधिष्ठर शिव दधीचि और बड़े २ मुनियों तक की जब हिन्दूमन्दिरों में मूर्त्ति नहीं होतीं। किन्तु केवल अवतार तथा देवी देवताओं की मूर्तियां पूजी जाती हैं तब महम्मद और ईसा आदि मनुष्यों की मूर्तियां क्यों कर मन्दिरों में धरी मिलतीं?। नाम मात्रका कोई (हरिभक्त) सनातनधर्म का मानने वाला यदि ऐसा काम करे तो हम नहीं कह सक्ते। पर वैदिक हिन्दू नहीं कर सक्ता॥

डिप्टी साहब! आप ने लिखा है कि मैं वैष्णव हूं तो आप बुद्धजी का अवतार फिर क्यों नहीं मानते?। चारो सम्प्रदाय के श्री वैष्णव और स्मार्त्त सभी बौद्धावतार को मानते हैं। नया सम्प्रदाय हरिभक्तों का कोई खड़ा कीजिये। दिल्ली के पांचों सवार पूरे हो जायंगे। श्रीरामानुज श्रीवल्लभाचार्य आदि की भांति वैष्णव लोग पांच आचार्य मानने लगेंगे॥

(ज्यो०च०पृ०३७पं०१७)—इस वक्त तक तो फलित वाले केवल कुण्डली का फल बताते थे। इस से कोई बड़ी हानि न थी। अब तो इन का मन बढ़ गया भला बुरा मुहूर्त्त भी बतलाने लगे इस समय रचे हुए ग्रन्थ मुहूर्त्तचिन्तामणि और काशीनाथ पद्धति हैं बिना ज्योतिषियों के पूछे विवाह भी नहीं हो सकता॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(समीक्षः)—इस समय से नहीं, किन्तु पूर्वकाल से ही मुहूर्त्तादि सभी कार्य्यों में माने जाते हैं। मुहूर्त्तचिन्तामणि और शीघ्रबोध के अतिरिक्त आप ने अन्यग्रन्थों का नाम क्या नहीं सुना? नारद हारीत वसिष्ठ, गर्गादि ऋषि मुनियों के मुहूर्त्त तो दूर रहे किन्तु लल्ल, श्रीपति, कालिदास जी, आदि आचार्यों के (मुहूर्त्त) ग्रन्थों को भी आप देख लेते तो शीघ्रबोध मुहूर्त्तचिन्तामणि आधुनिक ग्रन्थों से मुहूर्त्तों का आरम्भ क्यों लिखते ॥

जोशी जी! तथा पाठकगण! ध्यान देवें कि ज्योतिषशास्त्र ही नहीं किन्तु गृह्यसूत्र तथा आयुर्वेद भी इस बात की साक्षी देते हैं कि शुभाशुभ मुहूर्त सत्ययुग से विचारे जाते हैं। आयुर्वेदाचार्य महर्षि सुश्रुत जी लिखते हैं कि जिस समय वैद्य को बुलाने के निमित्त दूत आवे तो वैद्य को इतनी बातों का विचार करना आवश्यक है ॥

दूतदर्शनसम्भाषा वेषाचेष्टितमेवच ।
ऋक्षंवेलातिथिश्चैव निमित्तंशकुनोऽनिलः॥
सुश्रु० सूत्रस्थान अ० २९॥

भाषा—दूत का रूप, वाणी, भेष, तथा चेष्टा और नक्षत्र तिथि समय लग्न पवन कैसा चलता है। शकुन इत्यादि विचारे ॥

आद्राऽश्लेषामघामूल पूर्वासुभरणीषच।
चतुर्थ्यांवानवम्यांवा षष्ठ्यांसन्धिदिनेषुच ॥
मध्यान्हेचार्द्धरात्रौवा सन्ध्ययोःकृत्तिकासुच ॥
सुश्रु० सूत्रस्थान अ० २९। १६। १७ ॥

उक्त तिथि तथा नक्षत्रादि में वैद्य के पास प्रथम दूत जाय तो अशुभ हो। इससे स्पष्ट है कि भले बुरे मुहूर्त इनके समय में भी बतलाये जाते थे। और विवाह आदि सभी संस्कार मु-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हूर्त देख कर पूर्वकाल में भी होते थे। * यह आपस्तम्ब पारस्करादि गृह्यसूत्रों से भलीभांति सिद्ध होता है। मानवगृह्यसूत्र मनुस्मृति से पहिले का बना हुआ ग्रन्थ है। इसी का आशय लेकर मानवधर्मशास्त्र बना है। यदि अच्छे मुहूर्त में संस्कारादि करने की रीति उस समय न होती तो गृह्यसूत्रकार लिख देते कि जब चाहो तब विवाह आदि करलो। पर उन्हों ने शुभ नक्षत्र तिथि वार शुभमुहूर्त उत्तरायण में शुभकार्य्य करना साफ २ लिखा है॥

रोहिणीमृगशिरःश्रवणश्राविष्ठोत्तराणीत्युपयमे तथोद्वाहे यद्वा पुण्योक्तम्॥मा०गृ०सू०खण्ड-

भाषा-रोहिणी मृगशिरा श्रवण धनिष्ठा तीनों उत्तरा ये वाग्दान अथवा विवाह के लिये अच्छे हैं"यद्वा पुण्योक्तम्„ज्योतिःशास्त्रोक्त शुभ मुहूर्त्त नक्षत्रों में विवाह करे। क्योंकि सभी गृह्यसूत्रों का आशय ले कर मुहूर्तग्रन्थ ज्योतिष के बनाये गये हैं। विस्तारपूर्वक यही विषय उन में लिखा है। और देखिये मानव गृह्यसूत्र॥

तृतीयस्यवर्षस्यभूयिष्ठे गतेचूडाःकारयेत्। उदगयनेज्योत्स्नेपुण्येनक्षत्रेऽन्यत्रनवम्याः॥

खण्ड २१ सू०१

भाषा-तृतीय वर्ष का कुछ अंश शेष रहने पर उत्तरायण शुक्ल पक्ष शुभ नक्षत्रादि में नवमी तिथि को छोड़ कर बालक का चूड़ाकर्म करे, इस से स्पष्ट प्रगट हुआ कि इस के विरुद्ध दक्षिणायन आदि में शुभ कार्य करने का बुरा फल होगा। ग्रन्थ-

* (सू० सि० ११। २२) व्यतीपातत्रयंघोरं गण्डान्तत्रित यन्तथा। एतद्वसन्धित्रितयंसर्वकर्म्मसुवर्जयेत्॥

इत्यादि गणित के ग्रन्थों में भी अनेक प्रमाण हैं जिन से मुहूर्तादि स्पष्ट सिद्ध होते हैं॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वृद्धि के भय से अधिक प्रमाण नहीं लिखते आशा है कि इन प्रमाणों से हमारे ग्रेजुएट ज्योतिर्विद् जी का भ्रम दूर हो जायगा। रामायण तथा अन्य पुराणों में लिखा है कि बराबर पहिले भी मुहूर्त सभी कार्यों में किये जाते थे। रामचन्द्र जी के राज्याभिषेक का मुहूर्त तथा लंकायात्रा का मुहूर्त करना भी लिखा है ॥

अस्मिन्मुहूर्तेसुग्रीव प्रयाणमभिरोचय।
युक्तोमुहूर्त्तोविजयः प्राप्तोमध्यन्दिवाकरः ॥
अस्मिन्मुहूर्तेविजये प्राप्तेमध्यन्दिवाकरे।
सीताहृतातुमेयातु क्वासौयास्यतिवेगतः ॥
उत्तराफल्गुनोह्यद्य–श्वस्तुहस्तेनयोज्यते।
अभिप्रयामसुग्रीव सर्वानीकसमावृताः ॥

अर्थात् हे सुग्रीव! यात्रा करने को आज का मुहूर्त्त उत्तम है। दोपहर के समय विजयमुहूर्त्त पड़ता है शीघ्र ही इस मुहूर्त्त में चलने से हम सीता को प्राप्त करेंगे। उत्तराफल्गुनी छूट कर हस्त नक्षत्र का योग हुआ है। चलो इस शुभ मुहूर्त्त में यात्रा करना उत्तम है ॥

(ज्यो०च०पृ०३८)–पूर्वकाल में विधि नहीं मिलाई जाती थी। स्वयम्बर जैसे रामसीता अर्जुन द्रौपदी शकुन्तला दुष्यन्तादि के हुए। अहा! कैसी उत्तम रीति थी। कुण्डली मिलाकर विवाह करने की रीति उन्हों ने चलाई है। जो पढ़ते २ पागल होगये इत्यादि ॥

(समीक्षा)–जोशी जी! आप भूल पड़े हैं। केवल स्वयम्बर अथवा गान्धर्वविवाह उस समय में भी नहीं होते थे। आठ प्रकार के विवाह धर्मशास्त्र में लिखे हैं ॥ उक्तञ्च–

ब्राह्मादैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः।
गान्धर्वोराक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषा–ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गान्धर्व, राक्षस, पैशाच, ये सब ८ प्रकार के विवाह होते हैं। उन में पैशाच अधम है। ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य इन को मनु जी ने उत्तम कहा है। सो इन्हीं में विधि मिलाने की रीति प्रचलित है। भगवान् रामचन्द्र तथा सीता जी इत्यादियों की भी धनुषभङ्गरूप एक प्रकार की विधि मिलाई गयी थी। इसी कारण और राजा लोग धनुष को न तोड़ सके॥

भूप सहसदश एकहि वारा।
लगे उठावन टरहि न टारा॥

यदि कहो कि ज्योतिष के अनुकूल विधि क्यों नहीं मिलाई गयी? सो ज्योतिष के आचार्य नारद जी आदि ने बचपन ही में जानकी जी की विधि रामचन्द्र जी के साथ मिला करके कह दिया था कि रामचन्द्र जी के साथ सीता जी का विवाह होगा॥ यथा–

नारद वचन सदा शुचि सांचा।
सो वर मिलहि जाहि मन रांचा॥

इस गौरी जी के आशीर्वाद से नारद जी का विधि मिलाना स्पष्ट प्रगट है। पूर्वकाल में ज्योतिषविद्या का इतना प्रचार था कि ऋषि मुनि अनेकप्रकार (हस्तरेखा कुण्डली इत्यादि) से ज्योतिष का ठीक २ विचार कर लेते थे। जैसे नारद जी ने हिमालय के पास जाकर पार्वती जी के विषय में कहा था कि महादेव जी के साथ इसका विवाह होगा॥ यथा–

सर्वलक्षण सम्पन्न कुमारी,
होइहि सन्तत पियहिं पियारी।
सदा अचल इहिकर अहिवाता,
इहिते यश पैहहिं पितुमाता। इत्यादि

दो–योगी जटिल अकामतनु,नग्नअमंगल भेष।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अस स्वामी इहि कहंमिलहि,परीहस्तअसरेख*॥

रा० मा० बा० का०

इसी प्रकार शीलनिधि राजा के यहां लड़की के रेख इत्यादि का विचार करके नारद जी ने कहा था । कि—

जो इहि वरहि अमर सो होई ।
समरभूमि तेहि जीते न कोई ॥

इत्यादि—इस प्रकार के अनेक इतिहास पुराणों में हैं । जिनसे ज्योतिष की प्राचीनता तथा अनेक प्रकार से विधि मिलाने की रीति भलीभांति सिद्ध होती है। इसीलिये ऐसे महान् पुरुषों को एकत्र करने के अर्थ स्वयम्बर कहीं २ करना पड़ता था । वैसे पुरुषों की कुण्डली ढूंढ़ने में अधिक परिश्रम समझ कर स्वयम्बर में सब महानुभावों के एकत्र होजाने से उस कन्या के योग्य वर के साथ ठीक २ साम्य तथा विवाह हो जाताथा । और साधारण लोगों में आजकल की भांति कुण्डली मिलाने की सरलरीति उस समय में भी प्रचलित थी । स्वयम्बर केवल राजा महाराजाओं के यहां कहीं २ किसी खास कारण से होते थे । अन्य लोगों में नहीं, अब रहा शकुन्तला और दुष्यन्त का विवाह, सो इस का नाम गान्धर्वविवाह है । इस में विधि मिलाने की रीति अब भी नहीं है । अप्सरा की पुत्री होने के कारण शकुन्तला को कण्वमुनि ने किसी ब्राह्मण के पुत्र के साथ ठीक २ विधि मिला कर पूर्वोक्त चारप्रकार के विवाहों में कोई भी (कन्यादान) न कर सका । इसी चिन्ता में विवाह का समय निकल गया । इस कारण राजा दुष्यन्त के साथ गान्धर्वविवाह हुआ । गान्धर्वादि विवाह कोई आज कल भी कर लेवे तो उसे विधि मिलाने की कोई आवश्यकता नहीं । सो आप के देश में भी

* हस्त रेख शब्द से सामुद्रिक से नारद का बताना सिद्ध होता है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अधमकक्षा के विवाह (झाटे) प्रचलित ही हैं। जो चाहे सो कर सकता है ? सो आप क्या चाहते हैं ? और कुण्डली मिलाने का विशेष विचार आगे लिखा जायगा ॥

(ज्यो० च० पृ० ३९ पं०९)–ज्योतिषी कर्मरेखा को भी मिटाने के लिये बुलाये जाते हैं। इन्हीं महाराज ने पृथ्वीराज को दो घण्टे तक मुहूर्त्त ढूंढते २ रोकदिया ॥ इत्यादि–

(समीक्षा)–जोशी जी ! डाक्टरसाहब को आप कर्मरेखा मिटाने के लिये बुलाते हैं ? । वा किसी अन्यकार्य के लिये, क्योंकि आप के मत से अटलरेखा टल नहीं सकती । तो कहिये जिस की कर्मरेख में रोगी रहना लिखा है, वा मृत्यु लिखी है, उस को डाक्टर का इलाज क्या कर सकेगा ? । विना कर्मरेखा के रोग हो नहीं सकता । तो कहो उस को उस के इलाज से कुछ लाभ होगा वा हानि ? । बस इसीप्रकार ज्योतिषियों को भी बुलाया जाता है ॥

पाठक महाशय ! यदि किसी डाक्टर वा हकीम के इलाज करने पर भी किसी रोगी को आराम न हो, वा मर जाय तो इस कारण से कोई मनुष्य आयुर्वेद का खण्डन नहीं कर सकता । इसीप्रकार पृथ्वीराज को मुहूर्त्त न मिलने के कारण दो घण्टे रोकने की बात आप की मनघडी भी हो तो इस से ज्योतिष का खण्डन आप नहीं कर सकते । पृथ्वीराज के ऊपर अवश्य कोई खोटा ग्रह आया होगा । एक पृथ्वीराज नहीं, किन्तु सैकड़ों सहस्रों राजा महाराजाओं का मुहूर्त्त करने से अवश्य कल्याण हुआ है ॥

(ज्यो० च० पृ० ४०)–बचपन में विवाह करने की रीति ज्योतिषियों ने चलाई । काशीनाथ महाराज लिख गये हैं कि दशवर्ष तक जो लड़की का ब्याह न करे वह नरक में जाय । ऐसे बच्चों का ब्याह वेद पुराणों में कहीं भी नहीं । वसिष्ठ जी लिखते हैं कि लड़की का ब्याह रजस्वला होने से तीनवर्ष पीछे होना चाहिये । मनु जी का भी यही मत है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(मनीषा)–बचपन में विवाह करने की रीति काशीनाथ ने नहीं चलाई, पूर्वकाल से आर्य लोगों में प्रचलित है। भगवान् रामचन्द्र महाराज का १५ पन्द्रह वर्ष की अवस्था में विवाह हुआ था यह वाल्मीकि रामायण से सिद्ध है देखिये–दशरथ जी विश्वामित्र जी से क्या कहते हैं–

ऊनषोडशवर्षोमे रामोराजीवलोचनः।
नयुद्धयोग्यतामस्य पश्यामिसहराक्षसैः॥ वा०स०२०॥

भाषा–हे विश्वामित्र जी! अभी श्रीरामचन्द्र जी सोलह वर्ष से भी कम हैं यह राक्षसों से युद्ध नहीं कर सकते। इसी समय रामचन्द्र जी उन के संग गये। और यज्ञ की रक्षा कर धनुष् को तोड़ जानकी विवाही। कहिये यह विवाह कैसा हुआ? क्या सीता जी अठारह वर्ष की होंगी? या दश या ग्यारह वर्ष की?। और अभिमन्यु का भी विवाह १४ वर्ष की अवस्था में हुआ था। विवाह से थोड़े ही दिन पीछे भारत के युद्ध में मृतक हुए। उस समय उन की स्त्री उत्तरा गर्भवती थी उस से राजा परीक्षित जी उत्पन्न हुये। तो कहिये जो रजस्वला होने के तीन वर्ष बाद (ज्यो० च० के अनुसार) उत्तरा जी का विवाह करते तो पाण्डवों का वंश समाप्त ही हो चुका था। काशीनाथ इत्यादिकों को कलङ्क लगाते हुए आप को कुछ भी लज्जा न आई!। रजस्वला होने से तीन वर्ष पीछे विवाह करने की आज्ञा वसिष्ठ जी ने नहीं दी, किन्तु सत्यार्थप्रकाश में स्वामी दयानन्द जी ने दियी है। वसिष्ठस्मृति के श्लोक हम पहिले दे चुके हैं यही वेद पुराण के अनुकूल है। मनु जी भी ऐसी ही आज्ञा दे गये हैं।

त्रिंशद्वर्षोद्वहेत्कन्यां हृद्यांद्वादशवार्षिकीम्।
त्र्यष्टवर्षोष्टवर्षांवा धर्मेसीदतिसत्वरः॥

मनु० अ० ९ श्लो० ९४

इसी प्रकार गृह्यसूत्रकार भी लिखते हैं देखिये। मान० गृह्य सू० खं० ७ सू० ८॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बन्धुमतीं कन्यामस्पृष्टमैथुनामुपयच्छेत् ।
समानवर्णां समानप्रवरां यवीयसीं नग्निनां श्रेष्ठाम् ॥

भाषा—बन्धुमती हो किसी पुरुष का संयोग न हुआ हो अपने वर्ण की हो वर से छोटी हो जिस के स्तन न उगे हों और ऋतुमती न हुई हो रूपवती हो ऐसी कन्या के साथ विवाह करना श्रेष्ठ है ॥

प्रश्न—स्वामी दयानन्द जी ने "त्रीणि वर्षाण्युदीक्षेत" छत्तीस वार रजस्वला हुए उपरान्त विवाह करना क्यों लिखा?।

उत्तर—स्वामी जी ने सभी शास्त्रों के विरुद्ध लिखा, खूब इस श्लोक का अर्थ बिगाड़ा है यह साक्षात् स्त्री के व्यभिचारिणी बनाने की विधि महात्मा जी ने लिखी है। माता पिता चैन करें कन्या पति खोजती फिरे। इस का अर्थ यह है कि जिस कन्या के पिता माता दि न हों वह ऋतुमती होजाय तब भी तीन वर्ष तक कुटुम्बियों की (उदीक्षेत) प्रतीक्षा करे कि ये विवाह कर दें। यह समय भी बीत जाय तब अपने कुल के सदृश जो वर मिले उसे वर ले यह आपद्धर्म है। यही वसिष्ठ जी ने भी लिखा है ॥

कुमार्यृतुमती त्रीणि वर्षाण्युपासीतोर्ध्वं
त्रिभ्यो वर्षेभ्यः पतिं विन्देत्तुल्यम् ॥

अनुमान होता है कि किसी दयानन्दी से इस सूत्र का अशुद्ध अशुद्ध अर्थ सुनकर जोशी जी वसिष्ठ जी का नाम लिख बैठे इस का अर्थ वही है जो पहिले लिख चुके हैं ॥

अभिप्राय यह है कि कन्या स्वयं अपना विवाह कदापि न करे यदि माता पितादि किसी कारण से न कर सकें अथवा पितादि कोई नहो तब भी तीन वर्षतक किसी बान्धवादि की आश देखकर रहै। तदनन्तर लाचारी से (शकुन्तला की भांति) स्वयं विवाह करलेवै। क्यों कि आगे वसिष्ठ जी ६३।६२ वें श्लोक में „यावच्च कन्यामृतवः स्पृशन्ति„ लिखते हैं। यदि ठीक समय पर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कन्या—का विवाह पिता न करै तो जितनी वार रजस्वला हो उतनी गर्भ हत्याओं का पाप कन्या के पिता को होगा। अत-एव ११ वर्ष से पूर्व कन्या का विवाह करदे। पराशर तथा स-म्वर्त्त स्मृति के प्रमाण हम पहिले लिखचुके हैं। सारांश सभी ग्रन्थों का यह है कि ८ वर्ष से १२ वर्ष पर्य्यंत विवाह कर देना चाहिये १० वर्ष पर्य्यन्त उत्तम काल ११। १२ में गौण काल मानागया है। कदाचित् ठीक २ शुद्धि वा मुहूर्त्त न मिलै तो १२ वें वर्ष पूजा दान करके शकुन शान्तिपाठ ब्राह्मणों से करा-कर अवश्य विवाह कर देवै॥

द्वादशैकादशेवर्षे यस्याःशुद्धिर्नजायते।
पूजाभिःशकुनैर्वापि तस्यालग्नंप्रदापयेत्॥ शी०बो०

आठ वर्ष से पूर्व ६। ७ वर्ष की वालिकाओं का जो वि-वाह करते हैं वह अवश्य शास्त्र विरुद्ध कुरीति है। इस कु-रीति को हटाना सभी देश हितैषी विद्वानों को योग्य है। ज्योतिषशास्त्र में लिखा है कि ८ वर्ष से पूर्व विवाह कर देने से कन्या के विधवा होने का फल है। इस प्रकार का वाल-विवाह अवश्य हानि कारक है॥

(ज्यो० च० पृ० ४१ पं० ५)—सन् ११५० ई० तक यवन ज्योतिष की चढ़ती रही, इस बीच में सामुद्रिक प्रश्न योग इ-त्यादि बहुत सी विद्यायें चलीं जिन्हों ने फलित को और भी सहारा दिया॥

(समीक्षा)—आपका लेख वेसबूत महामिथ्या है। सामु-द्रिक की प्राचीनता महाभाष्य के"पतिघ्नीपाणिरेखा,,से सिद्ध हो चुकी है। षट्पंचाशिका भी आपने नहीं देखी जो वराह जी के पुत्र ने प्रश्न की पुस्तक विक्रम के समय बनायी थी। सन् ११५० ई० से प्रश्न विद्या का चलाना जो आपने लिखा है सो आपकी कपोल कल्पना मिथ्या सिद्ध हुई। जोशी जी! वाल्मीकि मुनिने रामायण,भगवान् रामचन्द्र जी के जन्म से पहिले

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्योतिष विद्या से बनाया था इसे तो आप स्वयं मानते हैं। कहिये वह प्रश्न विद्या नहीं तो कौन विद्या थी। इसी प्रकार महाभारत के समय धृतराष्ट्र के पास बैठे २ संजय सारे समाचार कुरुक्षेत्र के जान कर धृतराष्ट्र को सुनाते थे। महाशय जी! यह प्रश्न विद्या थी अथवा टेलिग्राफविद्या?॥ इसी पृष्ठ में आप फरमाते हैं कि जैमिनि महाराज ने एक उलटा ग्रन्थ बनाया धन्य है इस बुद्धि को किसी चारवाक ने कहा है कि—

त्रयोवेदस्यकर्त्तारो भण्डधूर्तनिशाचराः।

"वेद के बनाने वाले भांड धूर्त निशाचर हैं" वही कहावत आपने किई॥

जोशीजी! ऋषि मुनि उलटे ग्रन्थ नहीं बनाते थे। जैमिनिसूत्र उलटा नहीं। किन्तु उलटी पुस्तक आपने जरूर बनायी है जिसमें ज्योतिष की निन्दा बौद्धावतार की निन्दा और रजस्वला होने के तीन वर्ष बाद कन्या का विवाह मौसेरे भाई बहिनों के विवाह का समर्थन इत्यादि सभी शास्त्रविरुद्ध बातें लिखी हैं वेद पुराण निकम्मे कहे हैं वही पुस्तक उलटी है॥

(ज्यो० च० पृ० ४२)—भृगुसंहिता की निन्दा लिखी है। आप फरमाते हैं कि भृगुसंहिता लिखने वाला बड़ा ही धूर्त होगा॥ इत्यादि—

(समीक्षा)—ज्योतिष को दयानन्द सरस्वती जी नहीं मानते थे। पर भृगुसंहिता उन्हों ने भी मानी है सन् १८७७ई० में संस्कृत का एक विज्ञापन अमुकर पुस्तकें मान्य, अमुकर मुझे अमान्य हैं। इस विषय में स्वामी दयानन्द ने छपाया था। उस में भृगुसंहिता मान्य पुस्तकों में लिखी थी। और यह भी लिखा था कि ज्योतिष के ग्रन्थों में भृगुसंहिता सच्ची है, इस से तीन जन्म का हाल जाना जाता है। पर हमारे सनातनधर्मी जोशी जी तो स्वामी जी को भी मात दे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गये। क्यों नहीं, आप भी तो इंगलिश विद्या के विद्वान् हैं संस्कृत में स्वामी जी से कुछ न्यून हुए तो क्या हानि है ॥

(पञ्चम अध्याय समाप्त)

छठा अध्याय ॥

(ज्यो० च० पृ० ४३)-सन् ११५० और १८६० तक ज्योतिष की बड़ी चढ़ती रही बड़े२ गांव ज्योतिषियों को मिल गये ॥ इत्यादि–

(समीक्षा)—आप का तकमीना ठीक नहीं, सृष्टि के आरम्भ से आज तक बराबर ज्योतिषियों की बढ़ती है। बड़े २ राजा महाराजा अब भी ज्योतिषियों को गुरु मानते हैं। और आगे भी बराबर बढ़ती रहेगी चाहे आप लाख चेष्टा करें। पर ज्योतिषविद्या की कुछ हानि नहीं हो सकती। अब तो यूरोप के विद्वान् भी इस का आदर करने लगे हैं। पर शोक है कि भारतवर्ष के कुछ लोग दासवृत्ति में प्राण दे अपनी विद्या बुद्धि डुबा बैठे हैं और पश्चिम के लोग सभी विद्याओं की खोज तथा उन्नति कर रहे हैं ॥

पृ० ४३ पं० ८ से उप्रेतीजी की कथा लिख कर आपने सिद्ध किया है कि फलित का उन दिनों कैसा प्रभाव था। किसी विद्वान् का मिथ्या उपहास करना निरर्थक है, सभ्यता के विरुद्ध है। आगे आप ने लिखा है कि अंगरेजी पढ़ने वालों की संख्या बढ़ने लगी। बंगाल में ब्रह्मसमाज का प्रचार हुआ स्वा० दयानन्द जी ने आर्यसमाज का डंका बजाया। तब तो फलित से मन हटने लगा एक फलित से ही नहीं, सभी हिन्दुस्थानी वस्तुओं से उन की रुचि हटी। और एक प्रकार के नास्तिक हो गये। ये बातें आप की बहुत ठीक हैं नास्तिकों के फलित न मानने से कोई हानि नहीं। पर स्वामी जी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भृगुसंहिता को मानते थे कुछ २ मुहूर्त भी मान गये। (स० प्र० पृ० २८ पं० १६) एकादशी और त्रयोदशी को छोड़के बाकी में गर्भाधान करना। क्यों साहब स्वामी जी का मनुस्मृति से उद्धृत किया यह लेख ज्योतिष से सम्बन्ध रखता है या नहीं ?। ये रात्रि त्याज्य इसी कारण से हैं कि इन में गर्भाधान करने से दुष्ट सन्तान उत्पन्न होती है। तथा युग्मरात्रियों में पुत्र, और अयुग्म में कन्या होना मनुजी ने लिखा है। यह फलित नहीं, तो और क्या है। इसीप्रकार संस्कारविधि के लेखों से भी मुहूर्त आदि मानना सिद्ध होता है। और वर्त्तमान समाजी ज्योतिष की निन्दा भी करते हैं काम पड़ने पर मानते भी हैं। जन्मपत्र बराबर बनाते बनवाते हैं, कष्ट आने पर ग्रहशान्ति पूजा पाठ भी करा लेते हैं। चश्मा हटा कर समाज में ज्योतिष की निन्दा के गीत भी आलापते हैं। इन के पण्डित तथा उपदेशक लोग प्रायः फलित के विरुद्ध लेख लिखने और लेक्चर देने में खूब उछल कूद मचाते हैं। और घर में आ कर इन में अनेक पण्डित फलित के काम से पेट पालते हैं। कहीं सत्यनारायण, कहीं चण्डीपाठ भी पढ़ आते हैं।

एक समाजी पण्डित ने किसी का एक वर्षफल बना रक्खा था। और एक मनुष्य का जन्मपत्र का विचार कर रहे थे। मेरे एक मित्र ने समाजी पण्डित से कहा कि पण्डित जी आप भी ज्योतिष को मानते हैं ? ॥

स० पण्डित—हैं, हैं, स्वामी जी ने तो झूठा कहा है, पर मैं ठीक २ फल इस के देख कर कुछ २ सच्चा मानता हूं।

प्रश्न—स्वामी जी की बात झूठी, या आप की ? ॥

समा० पं०—स्वामी जी भी मनुष्य थे। " सत्य का ग्रहण असत्य का त्याग " हमारा चौथा नियम है कि हम सत्य बात को मानते हैं। स्वामी जी झूठे हों, या सच्चे हों इस से कोई हानि नहीं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रश्नकर्त्ता—गत सप्ताह के आर्यमित्र में कलित की निन्दा का लेख आपने क्यों छपाया था । यदि आप बुरा न मानें तो ब्राह्मणसर्वस्व वा पताका में आप के ज्योतिष मानने का समाचार छपादें ॥

स० पण्डित—नहीं २ कृपा करना, समाज के लोग बुरा मानेंगे । बड़ा फजीता होगा ॥

प्रश्न—तो आप सत्य सनातनधर्म की शरण में क्यों नहीं आ जाते ? देखिये सत्य के ग्रहण करने वाले श्रीमान् विद्वद्वर पं० भीमसेन जी थे । आप लोगों का कोई मत नहीं ॥

स० पं०—" टुंडे हाथ से पसीना पोंछते हुए जन्मपत्र को लपेटते हैं " भाई क्या करें समय ऐसा ही आ गया है ।

" वर्तमानेन कालेन प्रवर्त्तन्ते विचक्षणाः "

पर घरेलू कार्यों में हम सनातनधर्मानुकूल ही रहते हैं लड़के के जनेऊ (यज्ञोपवीत) में संस्कारविधि को ताक में रख अपनी प्राचीन पद्धति से संस्कार कराया था ॥ इति—

हमारे मित्र हंसते हुए चले आये ॥

पाठकगण ! समाजीमत वास्तव में कच्चा है और उच्च श्रेणी के विचारशील समाजी भी मानचुके हैं। सौ दो सौ वर्ष में विराट सनातनधर्म से मिलकर इस नवीन पन्थ का मोक्ष हो जायगा । देशहित के कार्य की उन्नति करने के निमित्त नवीन पन्थ की चाल कुछ लोगों के पसन्द आई । अतएव कुछ ऐसे देशहितैषी लोग भी इस में सामिल हैं । जिन के सम्मिलित होने से समाज जीवित हो रहा है । इस समय अधिक आलोचना इस विषय की नहीं लिखते । पाठक ! फिर (जोशी०) चमत्कार का ध्यान करें ॥

(ज्यो० च० पृ० ४४ पं० ४)—इतने में थियोसोफी के प्रचारक कर्नल अलकाट और मैडम ब्लभट्टकी हिन्दुस्तान में आये एनी बसेन्ट ने बनारस में पाठशाला खोलदी, थीयोसोफी के आने से नास्तिकता चली गयी पर पुराना अन्ध-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कार भी आगया फलित की जड़ हरी होगयी पढ़े लिखे लोग ज्योतिषियों के पास जाने लगे इत्यादि ॥

समीक्षा-जोशी जी ! जब पढे लिखे लोग ज्योतिषियोंके पास जाते हैं और थियोसोफी वाले बड़े २ फिलोसफर भी इसे मानते हैं। तो निरर्थक आप का डाह ज्योतिषियों को कुछ नहीं कर सकता। भारत वर्ष में अधिकांश उच्च श्रेणी के लोग थियोसोफी के पक्ष में होते जाते हैं और वे सभी लोग ज्योतिष विज्ञान के तत्व के मर्म को समझने लगे हैं। इसी प्रकार जर्मनी तथा अमेरिकन यूरूप के अनेक लोग फलित के पण्डित होते ही जाते हैं। ऐसी दशा में आप की चिल्लाहट कौन बुद्धिमान् सुनेगा। आप ने लिखा है कि थियोसोफी आने से पुराना अन्धकार आया और नास्तिकता दूर हुई। वाह वाह नास्तिकता हटाने वालों के साथ क्या कभी अन्धकार आ सकता है ? फलित की जड़ हरी होती देखकर जो आप ने अन्धकार कहा सो आप का अन्धकार थियासोफी की पुस्तक तथा मेकजीन पढ़ने से भी न हटा गुसांई जी ने सत्य कहा है ॥

नयन दोष जाकहं जब होई-पीतवर्ण शशि कहं कह सोई ॥

जोशी जी महाराज! फलित वालों की तो दिन २ प्रतिष्ठा बढ़ती जाती है पर आपने लिखा है कि सन् १८६० ई० तक चढ़ती रही। आप भूल में पड़े हैं, शोचा होगा कि हम अंग्रेजी पढ़े हैं जैसे हम नहीं मानते वैसे ही और बी० ए० ऐम् ए० तथा बड़े २ नौकरी वाले लोग ज्योतिष को नहीं मानते होंगे पर यह बात नहीं है अनेक अंगरेजी पढ़े बी० ए० ऐम् ए वकील बैरिष्टर अनेक पण्डितों से भी अच्छा ज्योतिष स्वयं जानते हैं। ऐसे लोग इस आप की पुस्तक को देखकर हंसते होंगे। अनेक डिपटी कलक्टर तहसीलदार ज्योतिषी पण्डितों को गुरु मानकर चरण छूते हैं। और बड़े २ रईस व राजा महाराजा लोग ज्योतिषियों को घर बैठे अब भी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सालियाना बराबर देते हैं, भेंट (नज़र) हाथ जोड़कर रईस लोग ज्योतिर्विदों को देते हैं। नौकरी इत्यादि पेशों से आज दिन भी गणकवरों की अधिक प्रतिष्ठा (इज्जत) है॥

धर्म सभा और पञ्चांग संशोधिनी सभा महामण्डल तथा परिषद् इत्यादि सभाओं के प्रचार होने से बड़ी २ उपाधि और मेडल (तमगे) हम को मिलने लगे हैं। पहिले ये बातें कहां थीं? प्रेसोंके प्रचार से ग्रन्थ रचना, टीका करना, पंचांग छपाना, इत्यादि द्वारा पहिले से दूना नाम तथा धन घर बैठे पैदा करने लगे हैं। तस्वाद् पत्रों की कृपा से दूर२ नाम फैलने लगा है। सरकार गवर्नमेण्ट भी अच्छे ज्योतिषियों की इज्जत करती है। अनेक पण्डितों को डिप्लोमा दिये हैं। केवल हिन्दूलोग ही ज्योतिष को नहीं मानते किन्तु अन्यधर्मी ईसाई जैनी नमाजी समाजी तक भी मानते हैं। थियोसोफिकल सोसाइटी ने भी आदर किया है और बराबर इस प्रत्यक्ष शास्त्र का आदर बढ़ता रहेगा॥

पाठक! कुछ अदूरदर्शी लोग इस शास्त्र के विरोधी हैं सो ऐसे लोगों की सामान्य कोटि में गणना है। अच्छे कुलीन शिक्षित लोगों में केवल एक हमारे मित्र पं० जनार्दन जोशी जो (ज्योतिष से क्यों चिढ़ पड़े?) डिपटी साहब को छोड़ सभी कुलीन सनातन धर्मी तथा उच्च कक्षा के आर्यसमाजी तक ज्योतिष शास्त्र को मानते हैं। हां शूद्र अन्त्यजादि जो समाजमें सम्मिलित हैं। नाई धोबी तेली चमार काछी पटुआ कोरी कलार तमोली, ऐसे लोगों के मानने वा न मानने से कोई हानि नहीं हो सक्ती। सूर्य मण्डल में धूलि फेंकने से प्रकाश नहीं हट सकता उलटी होकर वही धूलि फेंकने वाले के मस्तक की शोभा घटाती है॥

प्रियवर! आज कल के कतिपय न्यूफैशन के जेन्टलमैन इस अमूल्य शास्त्र रूपी मणि की दुर्दशा करने को कटिबद्ध हैं। पण्डित जी को देखते ही कहने लग जाते हैं कि "पण्डित

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जी हम आप के शास्त्र को नहीं मानते, आप दादे मूर्ख थे तो हम थोड़े मूर्ख हैं जो आप के प्रपञ्च में फंसें?। मैंने सुना है कि जब मेरी अवस्था ५। ६ वर्ष की थी तब हमारे वृद्ध पोप (पिता) जी ने किसी ज्योतिषी को मेरा जन्मपत्र दिखाया था। ज्योतिषी ने कहा तुम्हारे पुत्र के ग्रह ऐसे पड़े हैं कि यह धर्म भ्रष्ट और अनाचारी होगा। पिता की आज्ञा नहीं मानेगा इत्यादि सो हम पूरे रिफार्मर सदाचारी धर्मात्मा हुए हमने ४ कुरानी और बारह किरानियों को पवित्र करके वैदिक धर्म में मिलाया, भोजन भी उन का बनाया हम खालेते हैं। कहो खाने पीने से किस का धर्म जाता है? ये श्लोक पोपजी के बनाये हैं॥

अभक्ष्यरेतोगोमांसं चाण्डालान्नमथापिवा।
यदिभुक्तंतुविप्रेण कृच्छ्रचान्द्रायणंचरेत्॥
एकपङ्क्त्युपविष्टानां विप्राणांसहभोजने।
यद्येकोपित्यजेत्पात्रं शेषमन्नंनभोजयेत्॥
पाराशर स्मृति० अं० ११।

भाषा—अभक्ष लहसुनादि, रेत, शुक्र (वीर्य) गोमांस मिली हुई वस्तु (मिठाई खीलें इत्यादि) चाण्डाल का अन्न कोई ब्राह्मण भूल से खा लेवे तो कृच्छ्र चान्द्रायण व्रत करै एक पंक्ति में भोजन करते समय उन में से यदि एक मनुष्य भी पत्तल त्यागकर उठ जाय तो अन्य लोग उच्छिष्ट समझकर खाना छोड़ देवें॥

असंस्पृश्येनसंस्पृष्टः स्नानंतेनविधीयते।
तस्यचोच्छिष्टमश्नीयात् षण्मासान्कृच्छ्रमाचरेत्॥
अत्रिस्मृ० श्लो ७४॥

भाषा—चाण्डालादि का स्पर्श करने वाला स्नान करने से शुद्ध होता है॥ वाह! वा! पोप जी जब हम स्नान करने पर जाड़े से अकड़ जांय? तो क्या हम धर्म भ्रष्ट हुए?। कहिये आप

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

के ज्योतिष का फल ठीक क्यों नहीं मिला, बस तुम्हारा ज्योतिष झूठा" । इस के पीछे एक दूसरे महाशय आपहुंचे आप फरमाते हैं कि पण्डित जी ! आप के सितारों का हिसाब कयास के खिलाफ है । मुझे भी ऐतकाद गोया बिल्कुल नहीं है, किसी पंडत ने मेरी वाल्दा के जनुम पत्तर में विधवा होना लिखा था, सो सत्रहवें वर्ष उस वद्‌दुआ की वजह से उन के खाविंद का इन्तकाल हो गया, बड़ा सदमा उन्हें उठाना पड़ा । बाद नियोग कराने से मेरी पैदाइश हुई चूंकि स्त्री विधवा हरगिज नहीं हो सकती वेद का श्लोक है "पतिमेकादशंकृधि" आप का विचार क्या काम दे सकता है ?। जनुम पत्तर के भरोसे रहते तो हमारा जन्म कैसे होता ?। विरैमल लोगों ने "नान्यस्मिन् विधवा नारी नियोक्तव्याद्विजातिभिः,, और "न द्वितीयश्च साध्वीनां क्वचिद्भर्त्तोपदिश्यते" ये श्लोक मनु में मिला दिये हैं" ॥

पाठक ! इन की बात चीत अभी पूरी नहीं होने पाई थी कि मिष्टर पैरटवल्लभ जी शैरम के ब्राहन को साथ ले ब रुट के अग्निहोत्र से वायु शुद्ध करते हुए आपहुंचे इन को देखते ही हमारे पण्डित जी तो कवित्ता करने लगे ॥

बूटं च कोटं पतलून दिव्यं चुरुटं मुखे चञ्चलमद्वितीयम् । बधगुलामं भुमकर्महानं न्यूफैसनं भ्रष्टपथं कलौ शुभम् ॥

बाबू पैरटव०—यू पण्डित वेडमैन बड़ा झूठा अभी दो साल हुआ टुम कहा था टुम्हारा ग्रह वहोत अच्छा टुम खुश रहेगा फिर क्यों सिफिलिस का बेमारी हमारा अच्छा नहीं होता टुम झूठा माइफैमली को हिष्टिरीया मार्च से बहोत ज्यादा है । यू वेडमैन टुम्हारा विचार ग़लत पेस्कारी का मीमिनेसन हमारा जनवरी से हो गया तो क्या टुम सच्चा हो सकटा है । सिफिलिस से हम को बड़ा टकलीफ है हालत

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खरा व हो गया, बस इस विषय को अधिक बढ़ाने की इच्छा नहीं है इस की आलोचना अधिक नहीं करते आगे अपने निर्दिष्ट की ओर चलते हैं ॥

(ज्यो० च० पृ० ४५। ४६) में विचार करने योग्य विषय नहीं एक कल्पित कथा लिखी है । पृ० ४७ । ४८ में लिखा है कि मैंने एक हजार तक जन्मपत्र देखे विधवा स्त्री तथा संन्यासियों के जन्म पत्र तक इकट्ठे किये । मैंने जो फल कहे कईबार ऐसे ठीक लगे कि एक दिन मेरी कचहरी में ६ मुकद्दमों में राजीनामा हो गया । जब हजार कुण्डली देखी तो सच्चा भेद समझ गया ॥

पाठक ! हम नहीं कह सक्ते कि ऊपर की बात कहां तक सच्ची है । यदि आप का कथन सत्य हो तो जरा शोचिये तो विना गुरु लदय के छोटी २ पुस्तकों की देख भाल करने मात्रसे जब आप अच्छा फलादेश कहने लग गये थे और ६ मुकद्दमों में राजी नामे करा दिये थे तो ये सब बातें ज्योतिषी वंश के प्रताप से हुई होंगी ॥

यदि आप किसी विद्वान् से कुछ काल अध्ययन कर लेते सिद्धान्त ग्रन्थ पढकर ग्रह गणित तथा पञ्चांग बनाना सीख फलित के बड़े बड़े ग्रन्थों का तत्त्व समझ कर फलादेश कहते तो बड़े २ लाभ विदित हो जाते बड़ा पुण्यफल मिलता ॥ यथा

दशदिनकृतपापंहन्तिसिद्धान्तवेत्ता
त्रिदिनजनितदोषंतत्रविज्ञःसएव ।
करणभगणवेत्ताहन्त्यहोरात्रदोषं
जनयतिबहुदोषंतत्रनक्षत्रसूची ॥

हक को आप के कहे फलादेश ठीक मिलने में सन्देह जान पड़ता है । ग्रहगणित के दशभेद और बड़े २ ग्रन्थों का मर्म जाने विना सत्य फल ठीक २ नहीं कहा जाता ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उक्तञ्च–दशाभेदंग्रहगणितंजातकमविलोक्य निरोक्ष्यशेषमपि। यःकथयतिशुभमशुभंतस्यनमिथ्याभवेद्वाणी ॥

जो ज्योतिष के आन्तरिक शत्रु हों, एक भी ग्रन्थ किसी विद्वान् से न पढ़ैं फलादेश की रेल दौड़ाने लगैं तो उन की वाणी कभी सत्य होसक्ती है? नहीं२ कदापि नहीं॥ ज्योतिष चमत्कार का प्रथम भाग समाप्त हुआ॥ इस भाग में जोशीजी का विशेष जोर था इस का खण्डन दृढता से हो चुका सभी विषय वेद ब्राह्मण गृह्यसूत्र स्मृति इतिहास ज्योतिष के सिद्धान्त ग्रन्थों से सिद्ध कर दिये हैं। मैंने जो कुछ लिखा है वह सनातन धर्म तथा हिन्दु शास्त्रों के अनु कूल लिखा है। निष्पक्ष विद्वान् महाशय ज्योतिष चमत्कार की पुस्तक से इसे मिलाकर सत्यासत्य का निर्णय करैं "ज्योतिष चमत्कार समीक्षा" यह पुस्तक सनातन धर्म का प्रकाश फैलाने के हेतु लिखी गयी है। मैं आशा करता हूं कि विचारशील विद्वान् इस के पाठ से सन्तुष्ट होंगे। जोशी जी के कुतर्कों के कारण जिन लोगों को हिन्दू ज्योतिष में शंका उत्पन्न हुई होंगी और रजस्वला होने के तीनवर्ष उपरान्त कन्या का विवाह तथा मौसेरे भाई बहिनों के विवाह का समर्थन इत्यादि धर्म को डुबाने वाली बातैं लिखकर जोशी जी ने जो अन्धकार फैलाना चाहाथा सो नष्ट हुआ। कुतर्कों का खण्डन और दृढ समाधान हो जाने से धर्म की वृद्धि होगी॥

लवनिमेष परिमाण युग वर्ष कल्पशरचण्ड।
भजसि न मन तेहि राम कहं काल जासुको दण्ड॥

——— (*) ओं शान्तिः ३ (*) ———

कूर्म्माचल देशान्तर्गत षष्टिखात निवासी पं० हरिदत्त गणकात्मज रामदत्त ज्योतिर्वित्कृतं

ज्योतिषचमत्कार समीक्षायाः पूर्वार्द्धं समाप्तम्॥

॥ शुभम्भवतु॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उत्तरार्द्धभूमिका ॥

पाठकगण ! ज्यो० च० के द्वितीय भाग में पृ० ५९ से ७५ तक राशि नक्षत्रादि का कुछ २ वर्णन तथा फलित की मोटी २ बातें लिखी हैं। और हेडिंग लिखा है " जो फलित को पढ़ना चाहें सो इस भाग को पढ़ें, अन्य छोड़दें „—अस्तु इस भाग की आलोचना नहीं लिखी, जहां कहीं खण्डन करने योग्य इस में स्थल होगा उस का खण्डन भी इस पुस्तक में अन्यत्र हो जायगा ॥

तीसरे भाग में पृ० ७६ से १०८ पर्यंत नरपशु और बन्देदीन, रामानन्द इत्यादि नाम देकर निरर्थक गड़बड़ा न्यास लिखा है। क्योंकि न तो नाटक के तर्ज में है और न उपन्यास के तर्ज चाल रस कुछ ठीक न होने के कारण गड़बड़ा न्यास नाम इस ऊटपटांग लेख का ठीक है ॥

पाठक ! इस उपन्यास वा गड़बड़ा न्यास के उत्तर में उपन्यास वा कोई शुद्ध लेख लिखना सभ्यता के विरुद्ध है इन निरर्थक बातों को लिख कर अपने पाठकों का समय नष्ट नहीं करते। पृ० १०९ से आलोचना आरम्भ की जाती है बड़े २ ग्रन्थों के पुष्ट प्रमाण लिख कर सामुद्रिक इत्यादि की प्राचीनता सिद्ध करते हैं ॥

ह०—रामदत्त ज्योतिर्विद् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्योतिषचमत्कारसमीक्षायाः

उत्तरार्द्धप्रारम्भः ॥

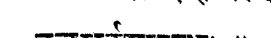

वसुदेवसुतंदेवं कंसचाणूरमर्दनम् ।
देवकीपरमानन्दं कृष्णंवन्देजगद्गुरुम् ॥

पाठक महाशय ! ज्योतिषचमत्कार में पृष्ठ १०९ से ११२ पर्यन्त शकुन स्वप्न छत्रादि के फल तथा सामुद्रिक की कुछ स्थूल बातें (मूर्ख कहावतें) हेडिंग दे कर हंसी की तरह पर लिखी हुई हैं । अब हम यह दिखाना चाहते हैं कि इस पुस्तक के लेखक महाशय ने वैदिक आर्ष ग्रन्थों का कहां तक तात्पर्य जाना है । वास्तव में गृह्यसूत्रादि ग्रन्थों का नाम इन को विदित होता तो गृह्यसूत्र तथा वेद का कुछ अंश भी, यूनानी वा यवनों का बनाया हुआ है, कहने में त्रुटि करते ॥

देखिये पाठक ! मानवगृह्यसूत्र पुरुष २ के पञ्चदश खण्ड में जोशी साहब के कहावतों की कैसी शान्ति लिखी हुई है ॥

यदि दुःस्वप्नं पश्येद्व्याहृतिभिस्तिलान् हुत्वा दिश उपतिष्ठेत् । ओं बोधश्च मा प्रतिबोधश्च पुरस्ताद्गोपायताम्, गोपायमानञ्च मा रक्ष माणञ्च पश्चाद्गोपायताम्, विष्णुश्च मा पृथिवी च नागाश्चाऽधस्ताद्गोपायताम् । बृहस्पतिश्च मा विश्वे च मे देवा द्यौश्चोपरिष्टाद्गोपायताम् ॥

अर्थात् अनिष्ट सूचक ऊंट गधादि पर चढ़ना आदि दुःस्वप्न देखे तो (बोधश्चमा०) मन्त्र पढ़ कर चार व्याहृतियों से घृत मिला कर तिलों का हवन करे । हम अपने पाठकों से प्रार्थना करते हैं कि " दुःस्वप्नञ्च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते " के अनुसार दुर्गापाठादि के साथ २ इस प्रकार की वैदिक शान्ति भी आप लोग अवश्य किया करें ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सामवेद के २६ वें ब्राह्मण में और मानवगृह्यसूत्र के १५ वें खण्ड तथा आपस्तम्ब के १२ वें खण्ड में विस्तारपूर्वक यह विषय भरा हुआ है । अनेक प्रकार के उत्पात अनिष्ट शकुन दुःस्वप्नादि की शान्ति स्पष्ट रूप से इन ग्रन्थों में ज्योतिष के ग्रंथों की भांति वर्णित है । विस्तार भय से अधिक न लिख कर कुछ अंश यहां उद्धृत किया जाता है ॥ मा०गृ०खं०१५ सू०६

गौर्वा गां धयेत् । स्त्री वा स्त्रियमाहन्यात् कर्त्तसंसर्गे हलसंसर्गे मुसलसंसर्गे मुसलप्रपतने मुसलं वावशीर्येतान्यस्मिंश्चाद्भुत एताभिर्जुहुयात् । स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनःपूषाविश्ववेदाः, इत्यादि ॥

भाषा—गौ का दूध गौ पीवे वा दो स्त्री परस्पर मारपीट अथवा बाहु युद्ध करें । फसल काटते समय दो दराती लड़पड़ें, कई हल परस्पर खेत में चलते हुए अकस्मात् भिड़पड़ें, धान्य कूटते समय दो मुसल भिड़ कर टूट जायं, अथवा दो दांत भिड़ कर अकस्मात् टूट जावें और राहु दर्शन उल्कादर्शनादि आश्चर्यजनक शकुन होयं तो "स्वस्तिन इन्द्रो०" इत्यादि पांच और पांच "त्रातारमिन्द्रं०" इत्यादि इन दश मन्त्रों से घृत की दश प्रधानाहुति करे, और जप होम पूर्ववत् करना चाहिये ॥

सामवेदीय षड्विंश ब्रा० खण्ड ११ में देखिये—

सोऽधस्ताद्दिशमन्वावर्ततेऽथ यदास्य गवां मानुषमहिष्यजाश्वोष्ट्राः प्रसूयन्ते हीनाङ्गान्यतिरिक्तानि विकृतरूपाणि वा जायन्ते । असम्भवानि भवन्त्यचलानि चलन्त्येवमादीनि तान्येतानि सर्वाणि रुद्रदैवत्यान्यद्भुतानि, रुद्राय स्वाहा, पशुपतये स्वाहा, शूलपाणये स्वाहा, ईश्वराय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्वाहा, सर्वपापशमनाय स्वाहेति व्याहृतिभि-र्हुत्वाऽथ साम गायेत् ।

भाषा-जिस के गौ स्त्री भैंस बकरी घोड़ी ऊष्ट्री के हीनाङ्ग वा अधिकाङ्ग विकृत रूप असंभव बच्चा उत्पन्न हो वा अचल पदार्थ चलायमान हो तो महान् उत्पात समझो। तच्छमनार्थ शिव जी के पांच नामों से घृताहुति देवै तो शान्ति हो॥

पाठकगण ! इस प्रकार की अनेक शान्ति वेद ब्राह्मणा-दि में विद्यमान हैं कुछ विचार इस का पूर्वार्द्ध में भी लिख चुके हैं। स्थानाभाव से अधिक नहीं लिखते जो महाशय दे-खना चाहें वह विस्तारपूर्वक सामवेद के षड्विंश ब्राह्मण में खं० ३ से १२ खण्ड तक देख लेवें॥

जिन लोगों ने ब्राह्मण गृह्यसूत्रादि वैदिक ग्रन्थों का कभी नाम भी न सुना होगा दर्शन तो दूर रहा। इस प्रकार के बाबू लोग हिन्दुधर्म की सभी बातों को मूर्ख कहावत, क-हैं तो क्या आश्चर्य है ! क्योंकि तमाम अवस्था उल्लू की गोल गोल आंख होती हैं। कुत्ते की दुम टेढ़ी होती है इत्यादि र-टते २ जो लोग समय बिता चुके हैं। उन की समझ में हिन्दू सनातनधर्म की फिलौसफी कम आती है। हिन्दुधर्म मनुष्य की बुद्धि की कसौटी है। निर्बुद्धि लोगों की उस के द्वारा अच्छी जांच हो जाती है ॥

अब यहां से वाल्मीकीय रामायण के अनुसार शकुनादि के द्वारा शुभाशुभ का ज्ञान होना सिद्ध करते हैं। जिस समय भगवान् रामचन्द्र जी महाराज ने लंका को प्रस्थान किया था। उस समय सुग्रीव से कहा था कि हे सुग्रीव ! मुझे शकुन शुभ जान पड़ते हैं। अवश्य रावण को मार कर जानकी जी को हम लावेंगे॥

निमित्तानिचपश्यामि योनिप्रादुर्भवन्तिवै ।
निहत्यरावणंसंख्ये ह्यानयिष्यामिजानकीम् ॥
वा० रा० यु० का० ४ स० ७ श्लो०॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसीप्रकार महाभारत में युद्ध के समय भगवान् कृष्णचन्द्र जी से अर्जुन ने कहाथा कि हे केशव ! मेरे हाथ से गाण्डीव धनुष गिरा पड़ता है और शकुन भी विपरीत जान पड़ते हैं "निमित्तानिचपश्यामि विपरीतानिकेशव !" और युद्धकाण्ड के २२ वें सर्ग में श्रीरामचन्द्र जी ने लक्ष्मण जी से कहा है कि हे भाई लक्ष्मण जी ! संसार के नाश करने वाले लक्षण दिखाई पड़ते हैं । काक, गृद्ध, शृगाल अशुभ सूचक शब्द करने लगे हैं । भयंकर वायु, उल्कापात, भूमिकम्प, इत्यादि दुःशकुन देखने से ज्ञात होता है कि ऋक्ष वानर तथा राक्षसों का भयंकर युद्ध हो कर अवश्य नाश होगा । ओः ! देखो वृक्ष पर्वत विना वृष्टि तथा वायु के टूट रहे हैं। इत्यादि श्लो० १–से ११ पर्यन्त २२वें सर्ग में देखिये ॥

निमित्तानिनिमित्तज्ञो दृष्ट्वालक्ष्मणपूर्वजः ।
सौमित्रिंसम्परिष्वज्य इदंवचनमब्रवीत् ॥ १ ॥
लोकक्षयकरंभीमं भयम्पश्याम्युपस्थितम् ।
निवर्हणंप्रवीराणा–मृक्षवानररक्षसाम् ॥ ३ ॥
वाताश्चकलुषावान्ति कम्पतेचवसुन्धरा ।
पर्वताग्राणिवेपन्ते पतन्तिचमहीरुहाः ॥ ४ ॥
काकाःश्येनास्तथानीचा–गृध्राःपरिपतन्ति च ।
शिवाश्चाप्यशुभान्नादा–न्वदन्तिसुमहाभयान् ११

जब कि वाल्मीकीय रामायण से आर्षग्रन्थ में मर्य्यादा पुरुषोत्तम भगवान् रामचन्द्र जी का शकुन इत्यादि मानना साफ साफ लिखा है । तब हमारे जोशी जी जैसे, शास्त्रानभिज्ञ लोगों का प्रलाप कौन आस्तिक बुद्धिमान् हिन्दू सुनेगा ?। उपरोक्त प्रमाणों से भलीभांति इस विषय का पुष्ट समाधान हो गया । आशा है कि सभी आर्य सनातनधर्मावलम्बी अपने पूर्वजों की भांति शकुन इत्यादि सभी विषयों में पूरा २ विश्वास रक्खेंगे॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सामुद्रिक विद्या जिस का आज कल बिलकुल लोप हो गया है। केवल दो चार रेखा याद करके दो चक्र पैसे मांग खाने वाले लोगों ने हाथ देखने का चार्ज ले कर इस विद्या का अनादर करा दिया है। पूर्वकाल में इस का कैसा प्रचार था सो वाल्मीकीयरामायण से दिखाते हैं।

जिस समय रावण ने रामचन्द्र जी तथा लक्ष्मण जी को युद्ध में मूर्च्छित कर दिया था, तब सीता जी को पुष्पक विमान में चढ़ा त्रिजटा के साथ रणभूमि में भेजा और यह कहा कि हे सीते! अब तू देख रामचन्द्र जी मारे गये हैं। उस समय श्री महारानी जानकी जी ज्योतिषियों के वाक्य याद करके विलाप करने लगीं कि हाय! मेरा विधवा योग किसी ने आज तक नहीं बत लाया था। केश रोम जंघा दांत के चिन्ह तो मेरे सब उत्तम सौभाग्य बढ़ाने हारे थे॥ उक्तञ्च—

भर्त्तारंनिहतंदृष्ट्वा लक्ष्मणंचमहाबलम्।
विललापभृशंसीता करुणंशोककर्षिता ॥ १ ॥
इमानिखलुपद्मानि पादयोर्वैकुलस्त्रियः।
अधिराज्येभिषिच्यन्ते नरेन्द्रैःपतिभिःसह ॥२॥
वैधव्ययंयान्तियानार्योऽलक्षणैर्भाग्यदुर्लभाः।
नात्मनस्तानिपश्यामि पश्यन्तीहतलक्षणा ॥७॥
सत्यनामानिपद्मानि स्त्रीणामुक्तानिलक्षणे।
तान्यद्यनिहतेरामे वितथानि भवन्ति मे ॥८॥
केशाःसूक्ष्माःसमानीला भ्रुवौचासंहतेमम।
वृत्तेचारोमकेजङ्घे दन्ताश्चविरलामम ॥ ८ ॥

यु० का० स० ४८

पाठक! महारानी जानकी जी के इन वाक्यों से सामुद्रिक इत्यादियों की प्राचीनता कैसी साफ झलकती है! पर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जोशी साहब ने यवनों से इस का रचना बताया है, ठीक है कि इन विचारों को इतिहास पुराण पढ़ने सुनने का अवसर कहां से मिला होगा। यदि रामायण के दर्शन किये होते तो यवनों का नाम क्यों लिखते ?॥

अपने शास्त्रों से परिचय न होने के कारण यही दशा होती है कि वाल्मीकीय रामायण तो दूर रहा तुलसीकृत रामायण भी आप पढ़ लेते तो यवनोंके पास क्यों जाना पड़ता॥ लक्षण तासु विलोकि भुलाने। हृदय हर्ष नहिं प्रगट बखाने॥ जो यहि बरै अमर सो होई। समर भूमि तेहि जीत न कोई॥बा०का०

प्रश्न–जन्मपत्र का बनाना आपने किसी पुराण से सिद्ध नहीं किया। क्योंकि जोशी जी सनातनधर्मी हरिभक्त होने के कारण पुराणों को मानते हैं॥

उत्तर–जोशी जी ने पुराणों का दरोगा बड़े बूढ़ों को बना दिया। यदि सत्यनारायण की कथा सुनने का भी कभी उन्हें अवसर मिलता तो जन्मपत्र की शंका नहीं रहती "लेखयित्वा जन्मपत्रीं नाम्ना चक्रं कलावतीं"। और रामायण के अनुसार रामचन्द्रजी के जन्म समय के ग्रहों का तथा तिथि नक्षत्रादि का वर्णन हम पूर्वार्द्ध में लिख चुके हैं। जन्मपत्र न बनाकर सम्वत् मास तिथि नक्षत्र ग्रह वार इत्यादि का ज्ञान किस प्रकार होगा, जन्म दिवस क्या आप के ज्योतिष चमत्कार से विदित होगा ?। धन्य हो जन्म तिथि भी मेटना चाहते हो ?॥

प्रश्न–नाम कर्म संस्कार में (होडाचक्र) जन्म नक्षत्र के अनुसार नाम रखना यवनों ने चलाया होगा जब पूर्वकाल से प्रचलित है तो किसी प्राचीन आर्ष ग्रन्थ का प्रमाण दो। हम सनातन धर्मी हैं॥

उत्तर–मानवगृह्यसूत्र देखिये, खं० १८ सू० २ "देवताश्रयं नक्षत्राश्रयं देवतायाश्च प्रत्यक्षं प्रतिषिद्धम्"

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भाषा–जिस नक्षत्र में जन्म हो उसके देवता सम्बन्धी तथा नक्षत्र सम्बन्धी नाम रक्खे तथा आपस्तम्ब १४ "नक्षत्र नाम च निर्दशति,,। बालक का नक्षत्र सम्बन्धी नाम धरै। बस कह दीजिये कि ये सभी ग्रन्थ यवनों के बनाये हैं। यवन विचारे चाहे इन रीतियों को आज तक भी नहीं मानते पर "बक-की तीन टांग" वाली हठ आप की पूरी हो जायगी।

प्रश्न–जोशी जी का जोर साम्य पर अधिक है। आपने साम्य का विषय किसी पुराण में नहीं दिखलाया॥

उत्तर–लीजिये जोशी जी! मानैं अथवा न मानैं हम पुराणों में भी दिखलाते हैं अग्नि पुराण के १२१ अध्याय से १३२ तक ज्योतिष का विषय व्यास जीने सूक्ष्म रूप से कहाहै॥

ज्योतिःशास्त्रंप्रवक्ष्यामि शुभाऽशुभविवेकदम्।
पातुर्लक्षस्यसारंयत् तज्ज्ञात्वासर्वविद्भवेत॥
षडष्टकेविवाहोन नचद्विर्द्वादशेस्त्रियाः।
नत्रिकोणे हतप्रीतिः शेषेचसमसप्तके॥
द्विर्द्वादशे त्रिकोणेच मैत्रीक्षत्रिययोर्यदि।
भवेदेकाधिपत्यंच ताराप्रीतिरथापिवा॥
आदिनाडीवरंहन्ति मध्यनाडीचकन्यकाम्।
अन्यनाडीद्वयोमृत्युर्नाडीदोषंविवर्जयेत्॥

पाठक महाशय! वेद ब्राह्मण, गृह्यसूत्र सुश्रुत, रामायण, तथा पुराणादि, के अनेक प्रमाण देकर ज्योतिःशास्त्र (फलित) की प्राचीनता सिद्ध कर दी है। सभी विषयों का पुष्ट समाधान हो गया। जोशी जी ने अपनी पुस्तक में यवनों से ज्योतिष का चलना इत्यादि वेप्रमाण मनमाना लिखा था प्रमाण कुछ भी न दे कहू जो मुंह में आया सो लिख दिया। अब उस पुस्तक का प्रबल खण्डन देख कर वृद्ध गुरुजन-धर्मात्मा सज्जन प्रसन्न होंगे। बोलो सनातनधर्म की जय॥ इति प्रथमोऽध्यायः॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्यो० च० पृ० ११३ से ११५ तक " दो ज्योतिषियों की सच्ची कथा ,, शीर्षक मनगढन्त कथा लिखी है। मेरे विचार से ये कोई पढ़े लिखे साढ़े बाईस नाम मात्र के ज्योतिषी होंगे क्योंकि आपने भी तो पुस्तक के टाइटिल पेज में अपने नाम के साथ ज्योतिषी नाम को दुम लगाई है ॥

पृ० ११६ से ११७ तक साठों के चांवल काढ़ा आदि के साथ साथ कार्त्तवीर्य के स्तोत्र गंगाजल हरिवंश के शपथ खानेवालों की दिल्लगी उड़ाई है। आप फ़रमाते हैं कि अब तो इन गी-दड़ भवकियों में कोई नहीं आता। धन्य हो सनातनधर्म इसी का नाम है कि गंगाजल हरिवंश तक को बरबाद करडाली ॥

पृ० ११८ तथा ११९ में कौड़ी फैंक कर जिस प्रकार पूरी तथा अधूरी कौड़ियों का बोध होता है। उसी प्रकार रमल तथा पंचपक्षी प्रश्न आपने बताई हैं। ठीक है " मति अनुरूप कथा मैं भाषी ,, एक देहाती किसान की कहावत याद आई है कि तार (टेलिग्राफ) को देख कर कोई किसान अपने घर आया, और अपने मित्रों से कहने लगा कि-अरे भय्या ! हम हूं अपने घर तार बनाई ।

कल्लू बोला कि कैसे बनाई ? ॥

हीरा-दुई खम्भा लावो एक पूरब धांइ गाड़ो एक पश्चिम धांइ बामें सूत बांध देउ खरो तार बन जायगो ॥

पाठक ! जिस शक्ति के बल से तार चलता है। साइन्स न जानने के कारण ये लोग उस बात को नहीं जानते थे। इसी प्रकार हमारे जोशी जी भी रमल के पांसे किन २ धातुओं से और किस प्रकार कैसी विधि के साथ और कब बनाये जाते हैं। उस में क्या शक्ति विद्यमान है इस बात को कुछ भी न जानने के कारण किसान की भांति कौड़ी में दौड़े हैं। अनेक रम्माल रमल के द्वारा मूक प्रश्न तथा अनेक गुप्त बातें प्रश्न से बता देते हैं आप कौड़ियों से बतावें ॥

(ज्यो० च० पृ० ११९ पं० १३)-१९ वर्ष में सूर्य और पृथ्वी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की चाल उसी प्रकार फिर से आ पड़ती है १९ वर्ष से ग्रह उसी क्रम से फिर लगते हैं ॥

समीक्षा–ज्योतिषी जी! आप एक ग्रहण निकालने की कोई नई सारणी बना डालिये १९ वर्ष से वही क्रम इस हिसाब से जल्दी सारणी तय्यार हो जायगी खूब सोचा ॥

ज्यो० च० पृ० ११९ से १२५ पर्यन्त जो कुछ खण्डन करने योग्य विषय है उस का खण्डन इस पुस्तक में पूर्व लिख दिया है। अधिक मनमानी निरर्थक बातें इन पृष्ठों में भरी हैं। जैसे "कोई धर्मात्मा सोशियल कान्फरैन्स का सभापति इन का (ज्योतिषियों का) हुक्का पानी बन्द करा देगा, समाचारपत्र में इन का विज्ञापन न छापैं (इत्यादि) इन के खोटे दिन आ गये इत्यादि" लिखा है ॥

समीक्षा–आप के तुल्य उच्च शिक्षा प्राप्त तथा उच्च पद प्राप्त हुए पुरुष को इस प्रकार के शब्द शोभा नहीं देते। रांड स्त्रियों की भांति गाली देने से खण्डन नहीं होता ॥

जोशी जी परिडतों को जातिच्युत करने वाली सभा के सभापति आप बनेंगे या कोई और, मेरी समझ में तो इस प्रधान कर्म के योग्य आप ही हैं। क्योंकि ऐसे सदाचारी धर्मात्मा अन्य लोग कहां, आप की इस कान्फरैन्स का जलसा कबतक हो जायगा। आगे आपने कहा कि इन के खोटे दिन आ गये, पर मुझे पूज्यपाद व्यासदेव का वाक्य याद आता है ॥

हतश्रीर्गणकान्द्वेष्टि गतायुश्चिकित्सकान् ।
गतश्रीश्चगतायुश्च ब्राह्मणान्द्वेष्टिभारत ! ॥

(ज्यो० च० पृ० १२७)–लम्बा मनुष्य बुद्धि हीन होता है यह एक मूर्ख कहावत पुराने समय में कोई लम्बा मनुष्य मूर्ख बुद्धि हीन होगा उसे देख कर यह अनुमान कर लिया, लम्बे मनुष्य मूर्ख होते हैं।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समीक्षा-हमने तो आप की यह मूर्ख कहावत किसी मूर्ख के जवानी कहीं नहीं सुनी। हां आज एक बीए की लिखीहुई पुस्तक में यह विचित्र कहावत लिखी देखी, जोशी जी लघघट की ज्योतिष से तो यह बात आपने नहीं लिखी है क्या ? ॥

पृष्ठ १२८ का खण्डन पूर्व हो चुका है १२९ पृष्ठ में निरर्थक बातें हैं ॥

ज्यो० च० पृ० १३० हिन्दुस्तान में सन् १८९८ में ८ ग्रह एक राशि में इकट्ठे हुए और ज्योतिषियों ने कहा प्रलय होगा॥

समीक्षा-कोई ज्योतिषी इस प्रकार की बेहूदा बात नहीं कहेगा। सृष्टि तथा प्रलय की ठीक २ गणना न्याय व्याकरण से नहीं किन्तु ज्योतिष ही से होती है। तिथिपत्रों के पहिले पृष्ठ में "सृष्टितो गताब्दाः" तथा "शेषाब्दाः" इत्यादि लिखा रहता है। प्रलय कब होगा, इस बात को सूर्यसिद्धान्त का पहिला अध्याय पढ़ने वाले ज्योतिष के विद्यार्थी भी भली भांति जानते हैं ॥

युगानांसप्ततिःसैका मन्वन्तरमिहोच्यते।
कृताब्दसंख्यातस्यान्ते सन्धिःप्रोक्तोजलप्लवः ॥

सू० सि० १। १८

भाषा-इकहत्तर ७१ चतुर्युगी का एक मन्वन्तर होता है उस में कृत युगके प्रमाण १७२८००० सत्रह लाख अट्ठाईसहजार वर्षांतक जलप्लव (छोटा प्रलय होता है) किसी भांग पीने वाले मनुष्य ने ९८ सन् में प्रलय का होना बताया होगा पञ्चांग के पहिले पृष्ठ की भी ख़बर होती तो क्यों ऐसी बात कहता ॥

(ज्यो० च० पृ० १३१)-किसी की कुण्डली लाओ हम यह सिद्ध कर देंगे कि यह धनवान है और यह भी सिद्ध कर देंगे कि महा दरिद्र है वही अल्पायु होगा वही दीर्घायु-

समीक्षा-क्यों नहीं यह आप की बुद्धि का चमत्कार है। महाशय जी "अहेर्लिभिः पञ्चभिरुच्चकैर्ग्रहैर्नरो भवेन्नीचकुल-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्च पार्थिवः,, पांच ग्रह जिस के उच्च के पड़े हों उस को आप दरिद्री सिद्ध कर दीजिये। भगवान् रामचन्द्र जी की इस पुस्तक में कुण्डली लिखी है उस का नैर्य्याश निकाल दीजिये " शनिक्षेत्रे यदा भानुः " के अतिरिक्त और भी कोई श्लोक याद है या नहीं ? ॥

ज्यो० च०पृ० १३३–जिस के १ । ८ । १२ वां लग्न में मंगल हो ऐसी कन्या को मंगली कहते हैं । यह दूसरे विवाह में चढ़ाई जाती है ।

समीक्षा–मंगली कन्या दारह योग वालों को व्याही जाती हैं जो नव युवक हों, दूसरे विवाह में बिना मंगली भी व्याही जाती हैं । क्योंकि यह सब भाग्यानुसार हैं महाराणी सुमित्रा तथा सत्यभामा के क्या ८ वां मंगल ही था क्यों दूसरे विवाह में व्याही गयीं ।

ज्यो० च० पृ० १३५ से १४३ तक असभ्यता सहित निरर्थक बातें भरी हैं । "यथा पृ० १३७ में मेरे जीवन समय में ही ज्योतिष नहीं रहेगा। पृ० १४२ पं० ११ में इतना धन कमाते हैं तो भी इन के सन्तानों को भीख मांगते ही देखा। पृ० १४३ पं० ९ में" मात आठ वर्ष तक संस्कृत पढ़ते हैं फिर मुहूर्त्त चिन्तामणि ग्रहलाघव सारावली इत्यादि रटते २ मर जाते हैं" ॥

समीक्षा–जोशी जी ने अपने जीवन समय में ज्योतिष का लोप होना तो लिखा है परन्तु अपना जीवन समय क्यों नहीं लिखा? किसी से नैर्य्याश गिना लेते । और जो भीख मांगते ही देखा इत्यादि लिखा है सो पाठक ! यही तो जोशी साहब ने निधड़क कलम चलाई है । भला किस ज्योतिषी विद्वान् को तथा उन की सन्तान को आपने नंगे पांव भीख मांगते देखा ?। दूर न जाइये आप के पहाड़ी ज्योतिषी पण्डितों की बात कहता हूं देखिये माला के पं० नीलाम्बर जोशी जी, ग्वालियर के पं० विष्णुदत्त जोशी जी, टिहरी के

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पं० महीधर जी वृत्यादि को आप ने नंगे पैर कहां भीख मांगते देखा?। इसी प्रकार स्वर्गीय पं० यशोधर जी बरेली, तथा पं० गंगाधर जी गढ़वाल इन के सन्तानों को नंगे पैर भीख मांगते कब देखा?। धन्य हो ऐसी बात लिखते समय आप की बुद्धि तथा सभ्यता ज्योतिष चमत्कार के पृष्ठों में कहीं दब तो नहीं गयी थी? हम तो आप को भी ज्योतिर्विदों की सन्तान मानते हैं क्या आप को तो कभी वैसा मौका नहीं पड़ा था? और आगे का वचन भी आप का पूरी २ सभ्यता प्रगट करता है। भारत वर्ष के ज्योतिर्विद् महाशयो! शान्ति धारण करना योग्य है क्योंकि–

यावत्खलः प्रवलयिष्यति दोषजालं तावत्समर्थनविधौ सुजनोऽपि चालम्। नैसर्गिको यदुभयोर्जगतीति रीतिर्नाऽरोहतीति मम चेतसि कापि भीतिरिति ॥

समाप्तोयं द्वितीयोध्यायः ॥

अब यहां से ज्योतिष चमत्कार के उन १२ प्रश्नों का उत्तर दिया जाता है। ज्यो० १४४ पृ० से १४८ पर्य्यन्त लिखे हैं ॥

१–यदि कोई ज्योतिषी जन्मपत्र देखकर यह बतादे कि यह अंगरेज की है यह मुसलमान की वा हिन्दू की? उसे दश हजार रुपये दूंगा।

समीक्षा–आप ने सवाल गनत पूछा है। अंगरेजों का मत १९०७ वर्ष से और १३ सौ वर्ष से मुहम्मदी धर्म्म प्रचलित है। ज्योतिष की उत्पत्ति के समय सनातन वैदिक धर्म था। तो उन का पता उस से कैसे लग सकता है?। अभाव का भाव नहीं होता, यह सवाल आप का वे समझों का है यदि चतुष्पद वा वृक्ष तथा मनुष्य की जन्म पत्री के विषय में ऊपर का प्रश्न आप करते तो ठीक था। लाइये दश हजार की थैली

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मनुष्य तथा पशु पक्षी वृक्ष इन सब के जन्म पत्रों को हम पृथक् २ बतादेंगे। निम्न लिखित ब ातें होनी चाहिये (क) जन्मपत्र पूरा २ पद्धति का हो, सम्पूर्ण चक्र तथा कुण्डली लिखी हों (ख) इष्ट काल ठीक २ सत्य हो, एक पल का भी फर्क नहीं होना चाहिये (ग) और पक्षीय गणित अर्थात् ग्रह स्पष्टादि सूर्य्यसिद्धान्त के अनुसार हों (घ) कोई योग्य पुरुष मध्यस्थ हो जैसे पं० शिवकुमार शास्त्री जी, अथवा महाराज दर्भङ्गाप्रभृति ॥ क्योंकि आप की बातों का प्रमाण नहीं ठीक २ बतादेने पर भी दश हजार क्या एक फूटी कौड़ी भी आप नहीं देंगे ऐसा अनुमान होता है ।

(२)-तीसरे कोठे से भाई बहिनों का ज्ञान होता है पुरुष ग्रह से भाई, स्त्री ग्रह से बहिन इत्यादि (पृ० १४५) शनि की दृष्टि है आप कहेंगे कि भाई बहिन कुछ नहीं ।

समीक्षा-तीसरे कोठे से भाई बहिनों का ही नहीं किन्तु कई बातों का विचार होता है " सहोदराणामथकिंकराणां पराक्रमाणामुपजीविनांच" इत्यादि बिना गुरु के और बातें समझ में न आसकीं तभी तो आप भ्रमजाल में पड़े, शुभ ग्रह की दृष्टि अथवा युक्त होने से शनिवाला योग भी आप का कट जायगा ॥

(३)-पृ० १४५-शनिक्षेत्रे यदा भानुर्भानुक्षेत्रे यदा शनिः । सद्य एव भवेन्मृत्युः शंकरो यदि रक्षति ॥ और (पं० ८) तीस वर्ष में दो वर्ष ऐसे होने चाहिये कि जिन में माघ फाल्गुन के जन्मे हुए सारे पृथ्वी के बालक होते ही मर जांय । कहो तो ऐसे बालकों की जन्म पत्रियां दिखा दूं । ज्योतिषी कहेगा किसी ग्रह की दृष्टि से ये बालक बच गये क्या ग्रह की दृष्टि ईश्वर की कृपा से बलवान् है ॥

समीक्षा-आप के लेख परस्पर विरुद्ध क्यों होते हैं? शुभ ग्रह की दृष्टि से इस योग का कट जाना आप स्वयं लिख चुके

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हैं। तीस वर्ष में ऐसे दो वर्ष कदापि नहीं पड़ सकते जिन में शुभग्रह की दृष्टि इत्यादि न हो। फिर दुनियां भर के बालकों को मरने की फिकिर आप को क्यों पड़ी,? विना दीर्घायु योग पड़े केवल इन योग के पड़ने से अवश्य मृत्यु होगी। जन्म पत्र इन बालकों के दिखादूं यह बात आपने विचित्र कही जीवित बालकों के बिना दीर्घायु योग अथवा विना शुभयोग के ऐसे जन्मपत्र आप दूसरे जन्म में भी नहीं दिखा सकेंगे। हां मरे हुये बालकों के जन्मपत्र किसी पण्डित को धोखा देने के लिये आप ने रख छोड़े हों तो ठीक है आप दिखा देंगे ॥

जोशी जी ! ईश्वर जिसकी रक्षा करता है उसी के ऊपर ग्रह की शुभदृष्टि भी होती है। ऐसी मोटी २ बातें भी आप नहीं समझते कहां तक बुद्धि की तारीफ करें शरीर से भी स्थूल जान पड़ती है ॥

४–धनी लोगों के जन्मपत्र में यह भी लिखा देखा कि शनि उच्च का है धनी होगा पर ढाई वर्ष तक उच्च का होता है उन में बहुतेरे घोर दरिद्री हैं ॥

समीक्षा–कोई प्रमाण तो दिया होता जोशी जी! केवल उच्च का शनि हो जाने मात्र से ही धनवान होना कहीं नहीं लिखा है। इस प्रकार के अनेक योग होने से एक राजयोग पूरा होता है। फिर आप व्यर्थ आक्षेप क्यों करते हैं? (पञ्चादिभिरन्यवंशजाता) के अनुसार पांच ग्रह जिस के उच्च के पड़े हों ऐसे पुरुष को आप दरिद्री दिखा दें। हम दश हजार की डींग तो नहीं हांकते पर जो कुछ होगा पत्र पुष्प आप की नजर करके अपनी हार मान लेंगे ॥

५–पहिले कोठे से बालक का रंग बतलाते हैं गोरा है या काला? क्या रूस और यूरोप में सब के ग्रहों का एक ही फल होता है। जो सब गोरे ही होते हैं। हबस देश में सब काले क्यों होते हैं? क्या सब ही के केतु होता है ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समीक्षा—आप तो अंक शास्त्र के शत्रु हैं भला आप इन बातों को क्या समझते । पहिले कोठे से रंग नहीं किन्तु कद बतलाया जाता है । रंग तो चन्द्रमा के नवांशेश के अनुसार " चन्द्रसमेतनवांशपवर्णाः " बतलाते हैं रहा रूप और यूरोप का फल सो पाठक महाशय ! इस श्लोक का अभिप्राय कुरूप है या रूपवान् इस बात को निश्चय करने का है । क्या विलायत में कोई कुरूप नहीं होते । साहब लोग अच्छी खूबसूरत मेमों को विवाह करने के लिये क्यों ढूंढते हैं । एक का हाथ पकड़ लेते क्योंकि वहां तो सभी गोरी होने से रूपवती होनी चाहिये थीं सो बात नहीं है । ज्योतिष शास्त्र का विचार देश काल के अनुसार करना कहा है ।

"लोकाचारंतावदादौ विचिन्त्य, देशे देशे या स्थितिः सैव कार्य्या । लोकेऽपीष्टं पण्डिता वर्ज्जयन्ति,दैवज्ञोऽतोलोकमार्गेणयायात्" (राजमार्त०)

इस के अनुसार रूस जर्म्मन अमेरिका आदि के किसी मनुष्य का जन्मपत्र लाइये हम बतादेंगे कि इस का रूप अच्छा है अथवा बुरा गौरारंग प्रधान होने पर भी यह अधिक गोरा है यह पीतवर्ण अथवा रक्तवर्ण लेकर गोरा है अथवा दूर्वा श्याम वर्ण लेकर है इत्यादि यही उत्तर हबसियों का भी समझो उस देशके अनुसार उनका भी ठीक २ ज्ञान हो सक्ता है ॥

६-रांड़ स्त्रियों के विषय का उत्तर पूर्व दे दिया है । जो आपने लिखा है कि वैधव्य योग वाली सुहागिन और सुहाग के योग वाली विधवा हैं सो ठीक नहीं, उन स्त्रियों के इष्ट काल अवश्य ग़लत होंगे जिन के ऐसे उलटे योग आपने देखे होंगे अथवा यह बात आप की बनावटी गलत है ॥ जोशीजी ! यह तो कहिये कि जो कुण्डलियां आपने बटोर रक्खी हैं उन के योग किसी पण्डित ने विचारे या आप ही ने अपनी बुद्धि के घोड़े दौड़ाये हैं ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

७–प्रायः ज्योतिषी तेजी मंदी की पुस्तकैं छापते हैं। यदि ये लोग तेजी मंदी को जानते तो लखपति हो जाते ॥

समीक्षा–"कृषिगोरक्षवाणिज्यं वैश्यकर्म्मस्वभावजम्" इस भगवद्वाक्य के अनुसार यह वृत्ति वैश्यों की होने के कारण स्वयं वाणिज्य नहीं करते। बम्बई प्रान्त के ज्योतिषी प्रायः तेजी मन्दी का हाल वहां के वैश्यों को बतलाते हैं सो वहां के मारवाड़ी इत्यादि लखपति क्या किरोड़पति हैं ॥

८–"पृष्ठे चन्द्रे भवेन्मृत्युः" इस यात्रा विषय के प्रश्नों का उत्तर दे दिया है ॥

९–नाड़ीवेध-का उत्तर साम्यके अन्तर्गत प्रश्नोत्तर में आगया,

१०–यदि ज्योतिषी शुभ मुहूर्त्त और भाग्य को जानता तो इस का लाभ आप स्वयं उठाता सब भाग्यशालिनी कन्याओं को अपने घर ले आता शुभ मुहूर्त्त को देख कर कितने ही ज्योतिषी लखपति हो गये होते ॥

समीक्षा–धन्य हो जोशी जी ? एक मूर्ख कहता था कि "डाक्टर वैद्यों को लोग क्यों बुलाते इत्यादि। डाक्टर साहब डाक्टर थे तो अपने बाप को क्यों मरने दिया ? वैद्य जी स्वयं क्यों कर मरते ?"। वही कहावत आपने किई। ज्योतिषी लोग ग्रहों के अनुसार जैसी कन्या मिलने का योग होता है इस बात को जानते हैं। भाग्यशालिनी कन्या किसी राजा के घर जन्मे तो उस के अच्छे ग्रह देखकर जबर्दस्ती अपने घर उठा लावें ? वाह वा ! डिपटी साहब अच्छा सवाल किया। और लखपति हो जाने वाला मुहूर्त्त आप ने किस ग्रन्थ में देखा था, श्लोक तो लिखते ॥

११–पृ० १४७। १४८ क्या हिन्दुओं के यहां रांड रंडुवे कम हैं ? ज्योतिष से हमें क्या लाभ हुआ ? मुसलमानों को विना ज्योतिष विवाह करने में क्या हानि हुई ? ॥

समीक्षा–तो अब आप की राय से मुसलमान हो जाना

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चाहिये ?। खूब यवन २ रटते हुए दुनियां भर को यवन ही करना निश्चय किया होगा! वेद में "शतं जीमेव शरदः शतᳬशृ-णुयाम शरदः„ इत्यादि अर्थात् हम सौ वर्ष तक जीवैं सौ वर्ष तक सुनैं इस प्रकार के अनेक मन्त्र हैं। वस कह दो इस वेद से हमें क्या लाभ हुआ ?। सन्ध्या में नित्य इस मन्त्र का पाठ करते २ सैकड़ों हिन्दू दयानन्दी १०० वर्ष से पहिले मर गये अन्धे और वधिर भी हो गये। केवल ज्योतिष के निषेध से प्रयोजन सिद्ध नहीं होगा।

जोशी जी? ज्योतिष शास्त्र से बड़े २ लाभ हुये इसी शास्त्र से इस देश की उन्नति हुई जब से इस का लोप होने लगा। तब से देश की दुर्दशा आरम्भ हुई। और नास्तिकता फैलने लगी विधवा अधिक होने लगीं। नाम मात्र की जन्म-पत्री आजकल कन्याओं की वनायीं जाती हैं। इष्टकाल ठीक नहीं होता यही रांड रंडुवा अधिक वढ़ने का मूल कारण है।

१२ अंगरेजों ने ज्योतिष की प्रशंसा क्यों न किई। भास्क-राचार्य वापूदेव शास्त्री पं० सुधाकर द्विवेदी जी ने झूंठा कहा।

समीक्षा–जोशी जी! यह पुस्तक आपने होली के दिनों में तो नहीं लिखी? क्योंकि भांग पीने का सन्देह होता है। पहिले आप स्वयं लिखचुके हैं कि २।१ विलायत के अंगरेज भी ज्योतिषी हैं और पृ० ४४ में कर्नल अलकाट और ऐंनीवैसेन्ट के कारण फलित की जड़ हरी हुई। आप लिख ही चुके हैं फिर अंगरे-जों ने प्रशंसा न किई यह लेख यहां पर फिर क्यों लिखा ?। इसीप्रकार पूज्यपाद भास्कराचार्य जी तथा वापूदेव जी का नाम आप वार २ क्यों लिखते हैं ?॥

शिर अरु शैल कथा चित रहई। तातैं वार वीस तैं कहई॥

पूर्वार्द्ध में द्विवेदी जी का फलित मानना हम सिद्ध कर चुके हैं जिन को कुछ भी सन्देह होवे उन का पञ्चाङ्ग वे महा-शय मंगा देखैं। राजा मन्त्री संवत्सर के फल आय व्यय चक्र

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

और विवाहादि मुहूर्त्त लिखे रहते हैं । जोशी जी महाराज यह फलित नहीं तो और क्या है ? फलित किस पहाड़ का नाम है ? ॥

आप बुद्धिमानों का फलित मानना लिखते ढूंढ़ते हैं। देखिये महाभाष्यकार जैसे ऋषि मुनि फलित को मानते थे क्या वे बुद्धिमान् कुछ आप से कम थे ? ॥

" उत्पातेन ज्ञाप्यमाने "

वातायकपिलाविद्यु-दातपायातिलोहिनी ।
कृष्णासर्वविनाशाय दुर्भिक्षायसिताभवेत् ॥
(महाभाष्य)

भाषा—जो पीली बिजुली चमकै तो अधिक हवा चलै लोहित वर्ण की चमकै तो गरमी अधिक हो, काली चमकै तो नाश हो श्वेत चमकै तो दुर्भिक्ष हो ॥

सुश्रुत अ० ३२ । १५—यस्य वक्रानुवक्रगा ग्रहा गर्हितस्थानगताः पीडयन्ति । जन्मर्क्षं वा यस्योल्काशनिभ्यामभिहन्यते, होरा वा,,

भाषा—निन्दित स्थान में हो कर वक्रानुवक्र ग्रह जिस के जन्म नक्षत्र अथवा जन्म लग्न को पीड़ित करैं । क्रूर दृष्टि से देखैं अथवा जिस की होरा को उल्का (पुच्छल तारा) शनिश्चर क्रूर दृष्टि से देखे वा घात करै उसे अरिष्ट जानना ॥

पाठक ! बड़े २ ऋषि मुनि वैज्ञानिक विद्वान् सत्ययुग से ज्योतिषशास्त्र को बराबर मानते चले आये हैं। पर जोशी जी महाराज जैसे लोग अपनी हठ (मम मुखे जिह्वा नास्ति) कहां छोड़ते हैं ? उन को शास्त्रों के वाक्यों की क्या परवाह है? जो मुंह में आया वह लिख दिया ॥ ॥ इति तृतीयोऽध्यायः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्यो० च० पृ० १५१ से नैर्य्याण की समालोचना किई गई है, देखिये किस प्रकार पूर्वापर विरोध इस लेख में भरा है ॥

पं० १ ज्योतिषी लोग मृत्यु का विचार अच्छा करते हैं। और इसी से ज्योतिष का विचार अधिक तर पुष्ट हुआ है। मृत्यु का वर्ष ही नहीं किन्तु महीना और दिन भी ठीक बतला देते हैं मुझे निर्य्याण की सचाई का पूरा २ विश्वास है ॥

समीक्षा—यहां आप सच्ची बात किस प्रकार मानने लगे धन्यवाद है, जब मृत्यु का विचार अच्छा बतलाते हैं और आपको पूरा विश्वास भी है फिर आप उस विद्या का खण्डन करने को कैसे उद्यत हो गये ?। आगे आपने लिखा है कि "निर्य्याण की सचाई मानसिक विद्या से सम्बन्ध रखती है" आप इसी भ्रमजाल में पड़कर इस चमत्कार को नहीं लिख बैठे? मानसिक विद्या से नहीं, किन्तु निर्य्याण की सचाई गणित विद्या से सम्बन्ध रखती है। निर्याण कोई तन्त्रविद्या नहीं है। किन्तु मृत्युयोग देख कर इस का गणित किया जाता है ॥

(द्वाविंशःकथितस्तुकारणं द्वेष्काणे निर्धनस्य सूरिभिः)

जोशी जी ! कह दीजिये कि ग्रहण भी मानसिक विद्या से सम्बन्ध रखता है। "जिस दिन ज्योतिषी लोग तिथि पत्र में ग्रहण लिखते हैं लोगों को विश्वास हो जाने के कारण उसी दिन ग्रहण दीखने लगता है" क्या हानि।

(पृ० १५२ पं० ८)-ज्योतिषी लोग जवान चंगे लोगों का निर्य्याण नहीं निकालते। बुड्ढे और रोगियों का विचार करते हैं। कच्चे दिल वाले इन्हें सच्चा बना देते हैं। पक्के दिल वाले इन्हें झूठा।

समीक्षा—अनेक जवान चंगे लोगों का निर्य्याण बराबर ज्योतिषी लोग निकालते हैं। फिर झूठ बोलने का ठेका आप ने क्यों लेलिया ? और कच्चे दिल पक्के दिल कैसे ?। जोशी जी !

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आप का कच्चा दिल है या पक्का दिल, क्योंकि खण्डन करने से तो आप ने दिखाया है कि हमारा पक्का दिल है। और अभी पृ० १५२ पं० ५ में "मुझे निर्याण का विश्वास है" आप लिख आये हैं। आपने ज्योतिष के निर्याण में विश्वास किया तो आप कच्चे दिल वाले अपने ही लेख से साबित हुए ॥

पाठक! पूर्वापर विरोध देखा? पहिले पृष्ठ और दूसरे पृष्ठ के लेखों की भी खबर नहीं रही। तब ही तो लोटा चढ़ाने का सन्देह होता है ॥

ज्योतिष अद्भुत विद्या है नैर्याण निकालने वाले अनेक ज्योतिषी विद्वान् अब भी भारतवर्ष में विद्यमान हैं। अभी थोड़े ही वर्ष हुए कि कलकत्ते में एक ज्योतिषी ने एक रोगी का विचार प्रश्न द्वारा जन्मकुण्डली बना कर बताया। सारे कुटुम्ब का हाल कहके चैत्र कृष्ण १० को उस बंगाली बाबू की मृत्यु बता दी थी। ठीक उसी समय ३६ वर्ष की अवस्था में बाबू की मृत्यु हुई। कलकत्ते के विख्यात वैद्य बाबू गंगाप्रसादसेन जी ने उस का इलाज किया था। यह कोई जोशी जी के बन्देदीन अथवा रामानन्द जी की जैसी झूठी कथा नहीं है। कलकत्ते के अनेक प्रसिद्ध लोग तथा हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक पं० दुर्गाप्रसाद मिश्र जी तथा भारतमित्र पत्र के वर्त्तमान सम्पादक बाबू बालमुकुन्द महोदय आदि इस घटना का हाल भलीभांति जानते हैं। मिश्र जी ने भारतधर्म पुस्तक में विस्तार पूर्वक इस का हाल लिखा है ॥

ज्यो० च० पृ० १५२ तथा १५३ एक मनुष्य को तिजारी ज्वर आता था मैंने कहा मन्त्र जानता हूं। एक लम्बा जामा लेकर इतवार के दिन लड़के एक घूंट पानी पिला दिया और कहा कि तेरा ज्वर गया। उसे विश्वास हो गया ज्वर छूट गया ॥

समीक्षा—कहिये भला इस गप्प का क्या ठिकाना, तन्त्र मन्त्र टोने सोने सब मात कर दिये, बीसवीं सदी के एक ग्रेजुएट ने अच्छी तन्त्र विद्या फैलाई। जोशी जी! आप विश्वास दिला कर रोग वालों को क्यों अच्छा नहीं करते।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एक लम्बा जूता और एक लोटा पानी ले कर आप प्लेग के दिनों में दौरा किया करें। देश का बड़ा ही उपकार होगा। और नौकरी से भी अधिक आप को इस डाक्टरी के द्वारा प्राप्ति भी होगी। ज्योतिषचमत्कार की पुस्तक बेचने से उतना फायदा नहीं हो सकता ॥

ज्यो० च० पृ० १५७ पं०-८—सत्य ज्योतिष हेडिंग दे कर लिखा है, हमारे पुराने ऋषि मुनियों ने (सत्यज्योतिष) तपस्या और योग के बल से सीखा था इसी सत्य ज्योतिष के सीखने के लिये मनुष्य गणना अंगरेज लोग करते हैं ॥

समीक्षा-क्या आप का सत्य ज्योतिष यही है? हमने तो यह सोचा था कि कदाचित् गणित विद्या को आप सत्य ज्योतिष मानते होंगे, पर आपने गणित की भी इतिश्री करदी। जोशी जी! (ज्यो० च० पृ० ४१ पं० ४)-में तो "मनु ११५०ई० तक ज्योतिष की चढ़ती रही इस बीच में सामुद्रिक योग प्रश्न इत्यादि बहुत सी विद्यायें चलीं" इत्यादि आप लिख चुके हैं, तो कहिये आप के मत से मनु ११५० के लगभग जब योग विद्या चली तो पूर्वकाल में ऋषि मुनियों को सत्य ज्योतिष सीखने के लिये योगविद्या क्या ज्योतिषचमत्कार से प्राप्त हुई?॥

पाठक महाशय! ध्यान देवें कि योगविद्या और ज्योतिष विद्या पृथक् २ हैं क्योंकि न्याय, वैशेषिक, योग, सांख्य, मीमांसा, वेदान्त ये षट् शास्त्र हैं। और शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष, ये षट् वेदांग हैं। योग और ज्योतिष को एक समझना मूर्खता है। देखिये छान्दोग्य उपनिषद् में इन सब विद्याओं का पृथक् २ वर्णन है और इस आर्ष ग्रन्थ से ज्योतिष की प्राचीनता भी सिद्ध होती है ॥

"सहोवाच ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि यजुर्वेदं सामवेदमाथर्वणं चतुर्थमितिहासपुराणं पञ्चमं वेदानां वेदं पित्र्यं राशिं दैवं निधिं वाको-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वाक्यमेकायनं देवविद्यां ब्रह्मविद्यां भूतविद्यां क्षत्रविद्यां नक्षत्रविद्याꣳसर्पदेवजनविद्यामेतद्भगवोऽध्येमि,, छा० प्र० ७

भाषा०—नारद जी बोले कि ऋग्वेद को स्मरण करता हूं तथा साम, यजु अथर्व, वेद को स्मरण करता हूं (इतिहास पुराणं पञ्चमं वेदानां वेदं) और इतिहास पुराण पांचवां वेद पढ़ा है (पित्र्यं) राशिं दैवं) दैवमुत्पातज्ञानं जिस से देवताओं के किये हुये उत्पात का ज्ञान होता है अर्थात् गणित को (निधिं) महाकालादि निधिशास्त्र को (वाकोवाक्य) तर्कशास्त्र (एकायन) नीतिशास्त्र (देवविद्यां) निरुक्तम् (ब्रह्मविद्याम्) ब्रह्म सम्बन्धी उपनिषद् योग को (भूतविद्यां) भूत तन्त्र को (क्षत्रविद्याम्) धनुर्वेद को (नक्षत्रविद्यां) फलित ज्योतिष को (सर्पदेवजनविद्याम्) सर्पविद्या गारुडि गन्ध युक्त नृत्य गीतादि वाद्य शिल्प ज्ञान को भी मैं स्मरण करता हूं॥

इस छान्दोग्य के वाक्य से कितनी विद्या सिद्ध होगई और यहां भी नक्षत्र राशि चक्र वाले फलित ज्योतिष को (जिस्को जोशी जी महाशय यवनज्योतिष कहते हैं) पृथक् ही ग्रहण किया है।

पृ० १५९-ज्योतिष घोर नास्तिकता का मूल है सर्व शक्तिमान् जगदीश्वर को छोड़ ग्रहों की पूजा करने लगे।

समीक्षा—भला आप पूजा उपासना के तत्त्व को तो समझिये "मत्तः परतरंनान्यत् किंचिदस्ति धनंजय। मयिसर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव,, के अनुसार प्रत्येक पदार्थ में ईश्वर की सत्ता अनुभव करके सूर्यादि ग्रहों के द्वारा भगवान की आराधना हिन्दु लोग करते हैं। नव ग्रह ही नहीं तैंतीस कोटि तथा असंख्य देवताओं की पूजा किई जाती है। इसी भाव को लेकर पर्वत नदी वृक्ष तक की पूजा हम लोग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करते हैं। तब राहु मंगल की पूजा से आप क्यों घबड़ाये क्योंकि ग्रहों को तो भगवान के शरीर भीतर ही माना गया है।

कालात्मा दिनकृन्मनस्तुहिनगुः सत्वं कुज ज्ञोगिरो जीवोज्ञा सुखे सितश्च मदनो०। इत्यादि वृ० जा० ॥

ग्रहों की पूजा साक्षात् जगदीश्वर की पूजा है इसी लिये यज्ञादि में प्रथम ग्रहों की पूजा होती है यज्ञोपवीत में ग्रह-याग पहिले किया जाता है हवन में। भूः स्वाहा इदमग्नये। भुवः स्वाहा इदं वायवे। स्वः स्वाहा इदमूं सूर्य्याय। तीसरी आहुति कालात्मा सूर्य्य भगवान के नाम से ग्रहों को दिई जाती है। जोशी जी! अब आप एक नई पद्धति भी बना डालिये क्योंकि हमारी पद्धति (दशकर्म) तो ग्रह पूजा ग्रहयाग युक्त होने से काम की नहीं रही। और दयानन्दी संस्कार विधि से काम चला लेते तो आप कहते हैं मैं नमाजी समाजी नहीं हूं। तो कहिये आप के जो बाल बच्चे होंगे उन के संस्कार क्या ज्योतिषचमत्कार से होंगे? या कोई नयी पद्धति बनेगी। आप ने लिखा है कि ज्योतिष घोर नास्तिकता का मूल है। इस हिसाब से ज्योतिष के मानने वाले लोग अर्थात् सभी हिन्दुमात्र नास्तिक हो गये, तो आप का नाम होडाचक्र से रक्खा गया यज्ञोपवीत में ग्रहयाग भी कराया होगा आप के पूर्वज तो नास्तिक नहीं है?। कहिये आप का मत क्या है?। धन्य हो दुनियां भर को नास्तिक बना दिया। भगवान् शंकराचार्य्य जी के बाद आस्तिक धर्म फैलाने को जोशी जी का ही जन्म हुआ है ॥

ज्यो० च० पृ० १५९ पं०५-अंगरेज लोग नित्य प्रार्थना करते हैं कि हे ईश्वर आज की रोटी हमें दे उन को रोटी भी मिलती है और मक्खन भी, हिन्दू निर्वाण की इच्छा करते हैं अकाल महामारी से पूरा २ निर्वाण हो रहा है ॥

समीक्षा–लीजिये वेदान्त को भी मरम्मत कर डाली, जिन को मक्खन तथा रोटी का टुकड़ा ही दृष्टि पड़ता है ऐसे लोग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मोक्ष वा निर्वाणपद की निन्दा न करें तो और कौन करेगा? तभी से ईश्वर का कोप होने के कारण अकाल महामारी इत्यादि फैले हैं।

पाठक वृन्द १९०७ मन् में छपी हुई ज्योतिष चमत्कार पुस्तक का खण्डन पूरा हुआ मैंने सुना है कि अंगरेजी में यह पुस्तक कुछ अधिक जोशी जी ने लिख रक्खी है। मैंने अंगरेजी भाषा न जानने के कारण केवल हिन्दी में लिखी हुई पुस्तक का खण्डन किया है। यदि अवसर मिल गया तो इस का अंगरेजी अनुवाद भी कराया जायगा उस में अंगरेजी की पुस्तक का पूरा खण्डन छपैगा ॥

पृष्ठ पंक्ति इस वार के ज्यो० च० पु० से ठीक२ मिलेंगी इस बात का पाठक ध्यान रक्खें ॥

यह ग्रन्थ ईर्षा वा द्रोह से वा किसी का दिल दुखाने के अभिप्राय से नहीं लिखा गया। केवल सनातन वैदिक धर्म-स्थापन, धर्म रक्षा के लिये लिखा गया है। सम्पूर्ण प्रमाण प्राचीन आर्ष ग्रन्थों के इस पुस्तक में दिये गये हैं। मैं आशा करता हूं कि सनातन धर्मी विद्वान् तथा सर्वसाधारण इस पुस्तक को देखकर प्रसन्न होंगे ओं शान्तिः ३

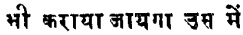

कूर्माचल देशान्तर्गत षष्ठिखात निवासी पण्डित हरिदत्त दैवज्ञात्मज रामदत्त गणक विरचित ज्योतिष चमत्कार समीक्षाया उत्तरार्द्धः समाप्तः ॥

॥ समाप्तोयंग्रन्थः ॥

यत्रयोगेश्वरःकृष्णो यत्रपार्थोधनुर्धरः।
तत्रश्रीर्विजयोभूतिर्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम ॥

पं० रामदत्त ज्योतिर्विद् भीमताल नैनीताल शुभम् भवतु ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रश्नोत्तरी-

प्रश्न—मेरी समझ से तो ज्योतिष झूठा है १। २ बातों को देख कर अनुमान कर लिया गया है कि मनुष्य की आयु विद्या धन इत्यादि गर्भ ही से नियत हो गये हैं। कभी टल नहीं सकते तो ' पृष्ठेचन्द्रभवेन्मृत्युः ,, क्यों कहा है। क्या आयु घट सकती है।

उत्तर—ठीक है हम बूझते हैं कि आप आयु बढ़ाने को वैद्य वा डाक्टर को क्यों बुलाते हैं? अटल आयु टल नहीं सकती तो आप किसी को जहर देदें अथवा स्वयं खा लेवें, क्योंकि आयु तो गर्भ ही से नियत हो चुकी है विष क्या कर सकता है?। कालिज में जा कर लेक्चर दीजिये कि विद्या गर्भ ही से नियत हो गयी है। पढ़ना फिजूल है। और आप नौकरी छोड़ कर बैठ जाइये क्योंकि धन तो गर्भ में ही निश्चय हो चुका है। जो कुछ होगा टल नहीं सकता तो आप नौकरी के द्वारा क्या धन कभी बढ़ा भी सकते हैं?॥

प्रश्नकर्त्ता जी! योग तप अनुष्ठान तथा यत्न इत्यादि करने से आयु भी बढ़ सकती है। अनेक ऋषि मुनियों ने आयु को बढ़ा कर योगाभ्यासादि के द्वारा मृत्यु को जीत लिया "न तस्य रोगो न जरा न मृत्युः प्राप्तस्य योगाग्निमयंशरीरम्" इसी प्रकार अर्थार्थी भगवद्भक्तों को धन राज्य ऐश्वर्यादि ध्रुव तथा सुदामा जी की भांति प्राप्त हो जाता है। विद्या भी इसी प्रकार जिज्ञासु भक्तों को वाल्मीकि जी इत्यादि की तरह आ जाती है। ज्योतिष के द्वारा केवल पूर्वजन्मों के जो अनेक संचित कर्म हैं उन के शुभाऽशुभ फल विदित होते हैं। महर्षि जैमिनि साफ कह गये हैं कि "उपदेशं व्याख्यास्यामः" अर्थात् "उपदिश्यते प्राक्तनशुभाशुभं कर्मानेनेत्युपदेशो जातकशास्त्रविशेषस्तं व्याख्यास्यामइत्यर्थः" जैसे कि किसी मनुष्य ने अपने पूर्व

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जन्म में ४० वर्ष की अवस्था में कोई महा पाप किया होय तो दूसरे जन्म में उसी अवस्था में आने पर दुष्ट ग्रह की दशा आवेगी। उस मनुष्य को महा कष्ट होवे गा। और इस जन्म के जो कर्म हैं उन से इस शास्त्र का उतना सम्बन्ध नहीं है। हां पूर्व जन्म के कर्म और वर्त्तमान जन्म के कर्मों का मेल हो जाने के कारण कुछ २ सम्बन्ध अवश्य हो जाता है। पूर्व जन्म में किसी मनुष्य ने विद्या में पूर्ण उन्नति प्राप्त किई। इस जन्म में उस का पञ्चम बृहस्पति उच्च का पड़ेगा। पूर्वाभ्यास होने के कारण बहुत शीघ्र विद्या इस जन्म में उसे आजाय गी। पढ़ने में अधिक परिश्रम उस बुद्धिमान् को नहीं करने पड़ेगा पूर्वजन्म के मूर्ख का पञ्चम शनि नीच का पड़ेगा। उस व्यक्ति की इस जन्म में महामूढ़ बुद्धि होगी कितना ही पढ़ाया जाय पर कुछ असर नहीं होगा हां उम्र भर पुस्तक रटते २ कुछ २ प्रभाव इस जन्म के कर्म का हो जाने से साक्षर होजायगा यदि पूर्वजन्म का अभ्यास होता तो षट्शास्त्री तक इतना परिश्रम करने से हो जाता ॥

सारांश यह है कि इस जन्म के नवीन कर्म सञ्चय करने के निमित्त हम स्वाधीन हैं। पूर्वसंचित कर्मों के फल प्राप्त करने को परतन्त्र हैं अर्थात् ग्रहों के आधीन हैं। इसी का नाम दैव है बस यही दैवाधीन फल जन्मपत्रादि के द्वारा दैवज्ञ लोग शास्त्र चक्षु से देख कर बतला देते हैं। इस को विद्या अच्छी आवेगी अथवा मूर्ख होगा धनाढ्य वा दरिद्री होगा, शान्त अथवा क्रोधी आरोग्य तथा रोगी होगा इत्यादि सैकड़ों बातें जान लेते हैं उस शास्त्र को झूठा कहना नास्तिक अथवा मूर्ख अनार्य का काम है॥

पृष्ठे चन्द्रे इत्यादि यात्रा विषय का प्रश्न है, दिशाशूल भद्रा योगिनी चन्द्रमा आदि यात्रा सम्बन्धी जो कुछ शुभाशुभ बातें विचारी जाती हैं, उन का अभिप्राय इस प्रकार है कि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जैसे कोई ज्येष्ठ के महीने में शीत देश के रहने वाले मनुष्य से कहे कि उष्णदेश में इस बीच मत जाना मर जाओगे, तो उस का यह आशय नहीं होगा कि उष्ण देश में जाते ही राम नाम सत्य की नौबत हो जायगी, कफन भी साथ ले जाना, अभिप्राय यह हुआ कि गर्मी में सख्त तकलीफ मिलेगी मृत्यु तुल्य कष्ट होगा, स्वास्थ्य बिगड़ जायगा, इस लिये शीतकाल में जाना ॥

इसी प्रकार "पृष्ठेचन्द्रे भवेन्मृत्युः" इत्यादि समझना चाहिये। यदि अरिष्टी ग्रह की दशा उस अवसर पर आई हुई होय तो, निषिद्ध मुहूर्त्त में यात्रा करने से अवश्य मृत्यु भी हो जाय, शुभ दशा में भी दुष्ट मुहूर्त्त में यात्रा करने वाले को दुःख अनेक प्रकार के उस यात्रा में भोगने पड़ेंगे। अत एव शुभ दशा तथा उत्तम मुहूर्त्त में यात्रा करने का शास्त्र में उपदेश है ॥

" वारेशोपचयावहस्य सुदशास्त्विष्टं प्रयाणं जगुः। कर्णान्त्यादितिभद्विकेषु मृगमैत्राऽर्कषु नोजन्मभे,, इति मु० मा० या० प्र० श्लो १ ॥

सभी आस्तिक हिन्दू बराबर इसी कारण पूर्वकाल से मुहूर्त्त, शुभकार्य यात्रा आदि के करते तथा मानते चले आये हैं। भगवान् रामचन्द्र ने लंका यात्रा करते समय सुग्रीव से कहा था कि इस मुहूर्त्त में चलने से विजय होगा वाल्मीकि रामायण में साफ लिखा है „अस्मिन् मुहूर्त्ते सुग्रीव प्रयाण मभिरोचय"। इत्यादि ॥

कोई आवश्यकीय वा पराधीन कार्य अथवा संकट आजाने पर ग्रीष्म काल में भी उष्ण देश में जाना पड़ता है। कभी ऐसा अवसर भी आ पड़ता है कि जहां प्लेग फैला हो, महामारी से जो शहर खाली हो गया है वहां भी किसी कार्य वश जाना पड़ता है। इसी प्रकार आपत्ति काल आ जाने पर "ब्रह्मवाक्यं जनार्दनः" इत्यादि मतानुसार गणेश रूपी परमात्मा का ध्यान वा प्रार्थना करके गुरु तथा ब्राह्मणों की

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आज्ञा लेकर साधारण शिवा (चौघड़िया) मुहूर्त्त करके जाना चाहिये इस को आपद्धर्म्म कहते हैं। कुमुहूर्त्त में यात्रा करने वाले को शुभ दशा होने के कारण केवल क्लेश और दुष्टदशा दुर्मुहूर्त्त होने से मृत्यु हो जाती है ॥

प्रश्न–शनि क्षेत्रे यदाभानुः भानुक्षेत्रेयदाशनिः।
सद्यएवभवेन्मृत्युः शंकरो यदि रक्षति ॥

इस योग में जन्म लेने वाले बालक जन्मते ही मरजाने चाहिये। पर २०। २५ वर्ष के मैंने कितने ही इस योग वाले देखे जो कि आज तक जीते हैं सो क्यों नहीं मर गये ? ॥

उत्तर–त्रिषष्ठैकादशेराहु–स्त्रिषष्ठैकादशे शनिः।
त्रिषष्ठैकादशेभौमः सर्वानिष्टान्निवारयेत् ॥

इस प्रकार के अनेक अरिष्ट भंग करने वाले योग जिन के पड़ने से अरिष्टी योग कट जाते हैं सो शुभ योग कोई पड़जाने के कारण उन की मृत्यु नहीं हुई होगी नहीं तो अवश्य मरजाते ॥

प्रश्न–मूल नक्षत्र में जन्म होने से पिता का नाश होना लिखा है "आद्ये पिता नाशमुपैति मूलपादे„ इत्यादि, अनेक मूल नक्षत्र वालों के पिता माता जीवित देखे हैं मूल नक्षत्र वालों को धनाढ्य भी देखा सो उन को मूल नक्षत्र का फल क्यों नहीं लगा ? ॥

उत्तर–मूल नक्षत्र का फल ठीक २ लगा होगा, क्योंकि "स्वर्गे शुचिः प्रोष्ठपदेषु साधे„ साधे इत्यादि के अनुसार स्वर्ग अथवा पाताल लोक के मूल होंगे और भी मूल के कई विचार हैं वे अच्छे होंगे नहीं तो अवश्य पिता आदि का नाश हो जाता, मूल वृक्ष के विचार से " फले राज्यं शिखावृद्धिः " इत्यादि उत्तम योग पड़ जाने से राजतुल्य अथवा धनाढ्य होना भी सम्भव है ये सूक्ष्म विचार बड़े कठिन हैं। इन विचारों को छापेकी एक भाषा टीका रख लेने वाले लोग नहीं जानते। वे तो यही कहेंगे कि मूल नक्षत्र पड़ा तो पिता का

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नाश हुआ। बड़े २ विद्वानों के समीप विद्या पढ़ने से सूक्ष्म विचार आते हैं ॥

प्रश्न—अथवा अन्य विचार मेरे अनुमान से तो ज्योतिषी लोग अपनी बुद्धि के बल से बताते हैं (१) १६ सोलह वर्ष में विवाह होगा, तीन लड़के होंगे, अमुक वर्ष में भाग्योदय तथा अमुक में कष्ट इत्यादि मिलती जुलती बातें बताते हैं ॥

उत्तर—बुद्धि के बल से तथा शास्त्र के बल से सभी बातें बताई जाती हैं बिना बुद्धि के शास्त्र का विचार नहीं होता। मजिष्ट्रेट कानून के बल से "इन्साफ" न्याय करता है? अथवा बुद्धि के, बिना बुद्धि के तो कानून की धारा अंड बंड होजायगी बिना कानून पढ़ा कोरा बुद्धिमान कुछ भी इन्साफ नहीं कर सकेगा नहीं तो सरकार बिना लौ पास किये बुद्धिमानों को अथवा कानून पढ़ाकर मूर्ख वा निर्बुद्धि लोगों को मजिष्ट्रेट बना देती ॥

इसी प्रकार बुद्धि तथा शास्त्र के बल से सभी बातें बतायी जाती हैं ज्योतिषी पण्डित भी विचार बताते हैं, अमुक वर्ष विवाह अमुक में भाग्योदय अमुक में कष्ट इत्यादि न बतावें तो क्या यह बतावें कि "अमुक वर्ष में यज्ञदत्त के सींग या पूंछ जमेगी, चार पैर अथवा तीन कान हो जायँगे, हाथ से चलने और पैर से खाने लगेगा इत्यादि" धन्य हो महाशय जी! जो संसार से मिलती जुलती बातें हैं वही बतायी जाती हैं, आप क्यों घबड़ाये? ॥

प्रश्न—ज्योतिषी ने कहा चिन्ता हो, ऐसा कौन है जिसे चिन्ता नहीं फिर कहा रोग हो वा कष्ट हो ऐसा कौन है जिसे कष्ट वा रोग न हो, कह दिया लाभ हो लाभ किसे नहीं होता ॥

उत्तर—प्रश्नकर्त्ता जी! अनुमान होता है कि आप को अभी संसार का अनुभव नहीं हुआ ऐसे अनेक लोग हैं जिन्हें स्वप्न में भी चिन्ता नहीं, निर्द्वन्द्व होकर परमात्मा का भजन करते

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हैं, हां पराधीन दासवृत्ति करने वाले लोग फिकिरमन्द अवश्य रहते हैं। अनेक लोग ऐसे नीरोग हैं जिन्हों ने कभी डाक्टर तथा हकीम का दर्शन भी नहीं किया मौटे ताजे रहते हैं। कोई कष्ट वा रोग उम्र भर नहीं हुआ और इसी प्रकार किसी को रात दिन बैंक में लखालख रुपया भरने की फिकिर रहती है और किसी को एक पैसे का भी लाभ नहीं होता। कुत्ते की तरह पराये टुकड़े खाकर पेट पालना पड़ता है। सो ज्योतिषी लोग लाभ वाले को लाभ, कष्ट वाले को कष्ट पूर्व कर्मानुसार शास्त्र के बल से ठीक २ बता देते हैं। दश का लाभ होगा अथवा ५० का सहस्रपति वा लखपति होना। राजयोग चक्रवर्त्ती मांगडलिक क्या होगा सब बातें ज्योतिष बता देता है॥

प्रश्न–मैं ५० कुण्डली मिलाकर रांड और सुहागिन स्त्रियों की आप के सामने रखता हूं आप बता देवेंगे राड़ों की कौन और सुहागिन स्त्रियों की कौन हैं ?॥

उत्तर–हां जिन का पूर्ण वैधव्य योग होगा अवश्य बता देंगे फिर जिन का अर्द्ध वैधव्य योग होगा अथवा साम्य ठीक न होने से वैधव्य होगया हो उन की कुण्डली बताना कठिन है। अगर आप परीक्षा करना चाहें तो चतुष्पद और मनुष्यों का पूरा जन्मपत्र ले आवेंहम पृथक् २ बता देवेंगे। पर जन्म पत्र उन के ठीक २ सच्चे हों एक पल का भी फरक न हो और सिद्धान्तों के अनुसार स्पष्ट तथा पूरा २ गणित होना चाहिये॥

प्रश्न–जिन के सौभाग्य का पूरा योग हो ऐसी कन्याओं के साम्य की क्या जरूरत है ?। क्योंकि विधवा तो हो नहीं सकतीं और जिन का विधवा योग होगा तो वे अवश्य विधवा होंगी साम्य से क्या लाभ हुआ योग सच्चा या साम्य॥

उत्तर–दोनों सच्चे पूर्ण सौभाग्य के ग्रह जिन के होते हैं वे विधवा कदापि नहीं होती हैं। पर साम्य ठीक न करनेसे (दम्पती) दोनों क्लेश में रहते हैं अनैक्यता कलह वियोग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वा रोग उन के पीछे २ बराबर लगा रहता है ठीक २ साम्य हो जाने से प्रीति पूर्वक आनन्द अथवा सुख से उन का जीवन व्यतीत होता है। अतएव साम्य की आवश्यकता उन के लिये भी हुई, और जिन का पूर्ण वैधव्य योग होता है उन के साम्य ही में गड़बड़ पड़ जाती है या तो घर के लोग विवाह रुक जाने के भय से कुण्डली बदल कर अधूरे ग्रह बना देते हैं। अथवा धींगा धींगी करके बिना ठीक २ साम्य किये विवाह करा देते हैं। विवाह होते ही वे कन्या पूर्वकर्मानुसार विधवा हो जाती हैं॥

पति प्रति कूल जन्म जहं जाई।
विधवा होइ पाय तरुणाई॥

ऐसी विधवाओं के ग्यारह बार क्या हजार बार भी विधवा विवाह करोगे तो फिर भी विधवा हो जायगीं और नियोग करने वाले दोस्त भी प्लेग में धड़ाधड़ उड़ते जायंगे। बाबू साहब! शुक्र योग और ठीक साम्य न होने के कारण प्रायः विधवा होती हैं। तीसरे दर्जे के ग्रह जिन के होते हैं अर्थात् सौभाग्य तथा वैधव्य के मिले हुए उनके लिये खासकर साम्य की अधिक आवश्यकता है॥

इति॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समर्पण—

श्रीमान्

ब्राह्मणकुलभूषण, मिथिलाधिपति हिज हाइनेस, औनरेबुल, सर रमेश्वरसिंह जी, महाराज बहादुर के० सी० आई० ई० दरभंगा नरेश समीपेषु ॥

श्रीमान् भारतधर्म महामण्डल के सभापति हैं। मैं महामण्ल का धर्मोपदेशक हूं, सनातन धर्म की रक्षा के निमित्त यह ग्रन्थ निर्म्माण किया है, अतएव श्रीमान् के कर कमल में इसे समर्पित करता हूं। कृपापूर्वक अंगीकार करके मेरा परिश्रम सफल कीजिये ॥

भवदीय

रामदत्त ज्योतिर्विद्

धर्म्मोपदेशक भा० ध० महामण्डल—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only